आधुनिक युग के कवियों में हरिऔध, गुप्त, पंत, माखनलाल, नवीन, भगवतीचरण वर्मा, दिनकर, बच्चन, सुमन आदि के अतिरिक्त राजस्थान के प्रतिनिधि हिन्दी कवि सुधीन्द्र, नंद चतुर्वेदी और कन्हैयालाल सेठिया को भी इस संकलन में स्थान मिला है। वस्तुतः राजस्थान के अनेक प्रतिभा सम्पन्न कृतिकारों की क्षमता को अभी आँका नहीं गया है और जितना महत्त्व हम बाहर की स्थापित एवं स्वीकृत प्रतिभाओं को देते रहे हैं, उतना हमने अपने इर्द-गिर्द रहने वाले इस प्रान्त के वाणी-पुत्रों को नहीं दिया है। कई बार यह सब विवशता के कारण हुआ है और कई बार हमारी उपेक्षा वृत्ति ही इसके लिए जिम्मेदार रही है। राजस्थान में भी सामर्थ्य वाले कवि हैं, लेकिन आपाधापी और खींचतान के वातावरण में उन्हें पीछे ढकेल दिया गया है। इसी दृष्टि ने संपादक को राजस्थान के आधुनिक प्रतिनिधि हिन्दी कवियों को भी काव्य-संकलन में स्थान देने के लिये प्रेरित किया है। राजस्थान के जिन हिन्दी कवियों को इस संकलन में संकलित किया गया है वे हिन्दी जगत के सुविदित कवि हैं और उनका सृजन, संकलित अन्य कवियों की तुलना में किसी भी दृष्टि से उन्नीस नहीं बैठता है। राजस्थान में अध्ययन-रत छात्र-छात्राओं का अपने प्रांत के सृजन-धर्मियों से भी साक्षात्कार हो, यह नितान्त आवश्यक है और इसकी उपादेयता भी असंदिग्ध है।

कविताओं का चयन करते समय, विषय-वस्तु को विशेषतः ध्यान मे रखा गया है। संकलन में उन रचनाओं की बहुलता है जो जीवन को उत्साहित कर, राष्ट्र के प्रति निष्ठा के भाव को जागृत करने के साथ-साथ दृष्टिकोण को उदार बनाने में सहायक हो सकें। राष्टीय तथा भावात्मक एकता को बल देने वाली, राष्ट्र प्रेम जागृत करने वाली, साम्प्रदायिक सौमनस्य स्थापित करने वाली, त्याग एवं बलिदान के लिये प्रेरित करने वाली, स्वतंत्रता की भावना को उत्तेजित करने वाली तथा सामाजिक एव आर्थिक क्षेत्र में समता, ममता और एकता की भावना को प्रश्रय देने वाली रचनाओं को इस पुस्तक में संकलित किया है। निराशा जागृत करने वाली अथवा मात्र भाग्यवादी रचनाएँ इस में सम्मिलित नहीं की गई हैं।

'कर्मवीर', 'भारतमाता', 'सिपाही', 'बलिदान' 'पथिक से', 'एक-नीम', 'विपथगा', 'भैंसागाडी', 'जुगनू' आदि इसी प्रकार की कविताए हैं जिन में आशा, उत्साह, विश्वास और शोषण-रहित समाज रचना का स्वर मुखर हुआ है। दिनकर की 'विपथगा' में क्राँति के आगमन की कहानी है, और 'समर शेष है' में स्वराज्य के स्वप्न को साकार बनाने की कामना है। 'समय की रेत' में सृजनधर्मी, आस्थावान श्रमिक का तथा 'मिट्टी की कहानी' में मृत्तिका के कण-कण की महिमा का यशोगान हुआ है।

हिन्दी कविता की अधुनातन एवं नव्यतम धारा के कवियों को उच्च कक्षा में सम्मिलित करने के लिए छोड़ दिया गया है। जिस आयु के छात्र-छात्राओं के लिये यह संकलन तैयार किया गया है, उन्हें लयात्मक, छंदोबद्ध रचनाएं ही प्रभावित कर सकती हैं, अतः छंदमुक्त मात्र एक-दो कविताएँ ही सम्मिलित की गई हैं। इन कविताओं से शिक्षार्थियों को नये भाव-बोध वाली काव्य-परम्परा का परिचय मिल सकेगा।

प्रत्येक पाठ के प्रारंभ में कवि की जीवनी और कृतियों की विशेषताओ का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। साथ ही सम्बन्धित कविता का परिचय भी दिया गया है। यह सामग्री, विद्यार्थियों को कवि के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं संकलित कविता को भली-भाँति हृदयंगम करा सकने में सहायक सिद्ध होगी। इसी सामग्री को आधार मान कर अध्यापक महानुभाव और अधिक विस्तार से छात्रों को कवि एवं कविता के सम्बन्ध में ज्ञान करा सकें, यही इसकी उपादेयता होगी। अध्यापक बन्धुओं की सुविधा के लिए, प्रारंभ में शिक्षण की दृष्टि से कवियों का क्रम भी प्रस्तावित किया गया है। छात्रों के मानसिक-स्तर को ध्यान में रखते हुए तथा सरल से कठिन की ओर अग्रसर होने के सिद्धांत के अनुरूप ही यह क्रम दिया गया है। शिक्षकगण अपनी सुविधा और छात्रों की मानसिक स्थिति एवं आत्मसात करने की क्षमता के अनुसार इस क्रम में परिवर्तन करने के लिए पूर्ण स्वतन्त्र हैं।

प्रत्येक पाठ के अन्त में अभ्यास के लिए कुछ प्रश्न दिये गये हैं। इन प्रश्नों में वस्तु-निष्ठ, लघुत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नों का चयन किया गया है। अभ्यास के प्रश्नों में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि प्रश्न,

छात्रों की मौलिकता, चिन्तन-क्षमता एवं सृजनात्मक-वृत्ति को उत्तेजित कर विषय को सहज ही ग्राह्य बना सकें। प्रश्नों में रूप सम्बन्धी, अर्थ एवं भाव-सम्बन्धी, विषय-वस्तु सम्बन्धी, रचना सम्बन्धी, एवं अनुभव-विस्तार सम्बन्धी प्रश्न दिये गये हैं। हर दृष्टि से छात्र को विषय का ज्ञान हो सके, यही दृष्टि प्रश्नों की रचना में प्रमुख रही है।

पुस्तक के अन्त में कठिन शब्दों का अर्थ स्पष्ट करते हुए शब्द-कोष दिया गया है। कठिन शब्दों एवं पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट करने वाला यह शब्द-कोष छात्रों के लिये बड़ा उपयोगी रहेगा। इसकी सहायता से वे अपनी भाषा एवं अर्थ सम्बन्धी कठिनाइयों को दूर कर सकेंगे।

छात्रों के प्रारंभिक ज्ञान की दृष्टि से, साहित्य एवं कविता के स्वरूप तथा हिन्दी कविता के विकास का संक्षिप्त परिचय भी पुस्तक में दिया गया है। साहित्य-विषय के प्रारंभिक अध्येताओं के लिए यह सामग्री उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक सिद्ध होगी, ऐसी हमारी मान्यता है। यह काव्य-संकलन यदि अपनी उपादेयता सिद्ध कर सका तो संम्पादक का श्रम सार्थक होगा।

संम्पादक

हिन्दी कविता का विकास

साहित्य क्या है ?

सहित शब्द में यत् प्रत्यय के योग से (सहित+यत्) 'साहित्य' शब्द की रचना हुई है। इसका अर्थ है—शब्द और अर्थ का यथावत् सहभाव अर्थात् साथ होना। इस प्रकार अर्थवान शब्द ही साहित्य है। इस व्यापक परिभाषा के अन्तर्गत मनुष्य द्वारा अर्जित समस्त ज्ञान और भाव समाहित हो जाता है।

भर्तृहरि ने साहित्य, संगीत और कला में साहित्य को काव्य का ही पर्याय माना है। वस्तुतः प्रारम्भ में साहित्य से अभिप्राय मात्र 'शास्त्र' से लिया जाता था। किन्तु कालान्तर में काव्य के निमित्त भी इसका प्रयोग किया जाने लगा। मनुष्य की सामाजिकता ने जहाँ उसे भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रेरित किया वहाँ उसकी सौंदर्य-भावना ने मानसिक तृप्ति के लिए ललितकलाओं को जन्म दिया। यदि ध्यान से देखें तो ज्ञात होगा कि स्वयं को अभिव्यक्त करने की बलवती इच्छा और सौन्दर्य-बोध ने ही मनुष्य को साहित्य-सृजन की प्रेरणा दी है। सभ्य, सुसंस्कृत सामाजिक मानस की आत्म-तृप्ति के लिए साहित्य से अधिक श्रेष्ठ कोई अन्य साधन नहीं है।

साहित्य के रूप को स्पष्ट करने के लिए विद्वानों द्वारा दी गई किसी भी परिभाषा को लें, वस्तुत: उनसे एक ही ध्वनि निकलती है। वह ध्वनि साहित्य और जीवन के घनिष्ठ सम्बन्धों को ही प्रतिध्वनित करती है। चाहे आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के कथनानुसार साहित्य को 'ज्ञानराशि का संचित कोष' माना जाय, चाहे मैथ्यू आर्नेल्ड की परिभाषा—'मानव जीवन की व्याख्या' को स्वीकार किया जाय अथवा हडसन के कथन 'भाषा के माध्यम से जीवन की अभिव्यक्ति' को स्वीकृति दी जाय, सब का अभिप्राय यही है कि साहित्य का जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसीलिए साहित्य को जीवन या समाज का दर्पण भी कहा गया है।

साहित्य का क्षेत्र विस्तृत है। नाटक, उपन्यास, कविता, निबन्ध, समालोचना, यात्रा-विवरण, संस्मरण, रिपोर्ताज आदि साहित्य के अन्तर्गत आते हैं। काव्य, साहित्य का प्राचीनतम रूप है। विश्व की समस्त भाषाओं के साहित्य का प्रारम्भ कविता से ही हुआ है। मानवीय अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का सर्वाधिक शक्तिशाली माध्यम काव्य ही है।

काव्य के भेद

भारतीय काव्य-शास्त्र की परम्परा के अनुसार विद्वानों ने काव्य के दो भेद स्वीकार किए हैं—दृश्य काव्य और श्रव्य-काव्य। जिन काव्यों की रचना मुख्यतः अभिनय की दृष्टि से की जाती है और जिनका रसास्वादन नेत्रों के द्वारा किया जाता है, वे दृश्य काव्य के अन्तर्गत आते हैं। जो काव्य श्रवण द्वारा आनन्द देते हैं, उन्हें श्रव्य-काव्य कहते हैं। दृश्य-काव्य क दो भेद—रूपक, उपरूपक स्वीकार किए गए हैं। इसी प्रकार श्रव्य-काव्य के अन्तर्गत गद्य, पद्य और चम्पू तीन भेद किये जाते हैं। छंद-रहित रचना को गद्य, छन्दोबद्ध रचना को पद्य, गद्य-पद्यमयी मिश्रित रचना को चम्पू कहते हैं।

पद्य-काव्य को दो भेदों में विभाजित किया गया है—प्रबन्ध और मुक्तक। प्रबन्ध के अन्तर्गत काव्य के दो रूप मिलते हैं—महाकाव्य और खंडकाव्य। इसी प्रकार मुक्तक रचनाओं के भी दो रूप मिलते हैं—पाठ्य मुक्तक, गेय मुक्तक। संक्षेप में इनका परिचय इस प्रकार है—

(अ) **महाकाव्य** :—इसमें जीवन का विशद चित्रण होता है। इसकी कथा इतिहास-प्रसिद्ध या पुराण-प्रसिद्ध होती है। इसका नायक सर्वगुण सम्पन्न, महान चारित्रिक विशेषताओं से युक्त कोई महापुरुष होता है। महाकाव्य में कथा-प्रवाह अबाध रूप से गतिशील रहता है। संस्कृत के आचार्यों ने प्रकृति वर्णन, सर्गबद्ध संयोजन, छन्दों की विविधता, शृंगार, वीर और शांत रसों में से किसी एक रस की प्रमुखता आदि को महाकाव्य की विशेषताओं के रूप में स्वीकार किया है। आधुनिक युग में महाकाव्य सम्बन्धी पुरानी धारणाओं में परिवर्तन हुआ है। अब किसी भी साधारण घटना को लेकर, किसी भी सामान्य व्यक्ति को नायक मान कर महाकाव्य की रचना की जा सकती है। 'पद्मावत', 'रामचरितमानस', 'साकेत',

'प्रिय-प्रवास' 'कामायनी' आदि हिन्दी के प्रसिद्ध महाकाव्य हैं।

(ब) **खंडकाव्य :**—इसमें जीवन के एक ही पक्ष का चित्रण होता है। किसी एक प्रमुख घटना के आधार पर जीवन का चित्रण खंडकाव्य में किया जाता है। खंडकाव्य का आकार, महाकाव्य की भाँति विशाल न होकर भी स्वयं में पूर्ण होता है। सामान्यतः महाकाव्य की अन्य सभी विशेषताएँ यत्किंचित रूप में खंडकाव्य में मिल जाती हैं। गद्य के क्षेत्र में जो अन्तर उपन्यास और कहानी में होता है, वही अन्तर महाकाव्य और खंड-काव्य में भी समझा जा सकता है। 'जयद्रथ-वध', 'पंचवटी', 'सुदामा चरित', 'पथिक' आदि हिन्दी के प्रसिद्ध खंडकाव्य है।

(स) **पाठ्य मुक्तक :**—जिन मुक्तक कविताओं को केवल पढ़ा जा सकता है, उन्हें पाठ्य-मुक्तक कहते हैं। इनमें भाव की अपेक्षा विचार, लोक-व्यवहार अथवा नैतिक भावनाओं का प्रतिपादन होता है। बिहारी, देव, मतिराम, रहीम, वृंद आदि की रचनाएँ पाठ्य-मुक्तक के अन्तर्गत आती हैं।

(द) **गेय-मुक्तक :**—गेय मुक्तक को प्रगीत या गीति-काव्य भी कहते हैं। इन मुक्तकों को सरलता से विभिन्न राग-रागनियों में गाया जा सकता है। इनमें भावमयता, तन्मयता और उद्‌गारों की तीव्रता होती है। ये स्वर, लय, ताल में बंधे हुए होते हैं। कबीर, सूर, तुलसी, मीरा, प्रसाद, पंत निराला, महादेवी, बच्चन के गीत इसी श्रेणी के अंतर्गत आते हैं।

हिन्दी भाषा और कविता का विकास

हिन्दी—हिन्दी के लिए हिंदवी, हिंदुई आदि शब्दों का प्रयोग भी कुछ विद्वानों ने किया है। वाच्यार्थ की दृष्टि से इसके अन्तर्गत भारत में बोली जाने वाली आर्य, द्रविड़ तथा अन्य भारतीय कुल की भाषाओं को सम्मिलित किया जा सकता है किन्तु इस प्राचीन व्यापक अर्थ में इस शब्द का प्रयोग अब प्रचलित नहीं है। इस समय हिन्दी का अभिप्राय हमारी राष्ट्रभाषा से है और इसका सीमा-विस्तार उत्तर प्रदेश, बिहार, दिल्ली, राजस्थान, मध्य प्रदेश, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश आदि तक है। संवैधानिक मान्यता प्राप्त होने के कारण भारतीय संघ की राजभाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में समस्त

देश ही हिन्दी का क्षेत्र है। डा० धीरेन्द्र वर्मा ने हिन्दी-भाषा प्रदेश की सीमाओं का निर्धारण इस प्रकार किया है—पश्चिम में पाकिस्तान (सीमा प्रांत, जैसलमेर) उत्तर-पश्चिम में अंबाला, उत्तर में शिमला से लेकर नेपाल के पूर्वी छोर तक के पहाड़ी प्रदेश का दक्षिणी भाग, पश्चिम-पूर्व में भागलपुर, दक्षिण-पूर्व में रायपुर तथा दक्षिण में खण्डवा। भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी ५५ करोड़ जनसमुदाय की भाषा है। जनसंख्या की दृष्टि से समस्त भू-मंडल में अंग्रेजी और चीनी के बाद हिन्दी का तीसरा स्थान है। हिन्दी की लिपि देवनागरी है जो वस्तुतः ब्राह्मी लिपि का विकसित रूप है। बंगला, गुजराती, मराठी आदि उत्तर-भारतीय भाषाओं की भाँति हिन्दी की उत्पत्ति भी अपभ्रंश से हुई है।

हिन्दी-कविता—

हिन्दी कविता के विकास का क्रम लगभग एक हजार वर्ष से चला आ रहा है। प्रारम्भ से लेकर आधुनिक युग तक अनेक प्रकार की विचारधारा भाषा और अभिव्यंजना शैली का इसमें प्रयोग हुआ है। विद्वानों ने मुख्य प्रवृत्तियों के आधार पर हिन्दी कविता के इतिहास का विभाजन इस प्रकार किया है—

(१) आदि काल (२) भक्तिकाल (३) रीति-काल और (४) आधुनिक काल।

आदिकाल—

इस युग के प्रारम्भ और नामकरण के संबंध में विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्वान इसका प्रारम्भ सातवीं शताब्दी के मध्य से और कुछ ग्यारहवीं शताब्दी से मानते हैं। इसी प्रकार इस युग को वीरगाथा काल, चारण-काल सिद्ध-सामंत काल, अपभ्रंश काल आदि नाम भी दिये गये हैं। वस्तुत सर्वाधिक सार्थक एवं उपयुक्त नाम 'आदिकाल' ही है क्योंकि इससे हिन्दी साहित्य के प्रारम्भ की स्थिति का बोध होता है। वस्तुतः यह काल भारतीय चिंतनधारा का मंथन काल था। लगभग सभी देशी भाषाओं के उद्भव विकास एवं प्रगति का श्रेय आदिकाल को ही है। इस युग में एक ओर जहाँ संस्कृत के महान् अलंकारवादी कवि हुए वहाँ अपभ्रंश के जैन, बौद्ध

और सिद्ध कवियों ने भी इसी समय जनभाषा में काव्य-रचना की। धर्म और दर्शन के क्षेत्र में प्रतिभाशाली आचार्यों का उद्गम इसी युग में हुआ जिनकी प्रभाव-परम्परा का विकास भक्ति-युग में हुआ।

अपभ्रंश भाषा के साथ ही जनसाधारण की बोली में भी कविता लिखना प्रारम्भ हो गया था। इस युग में चारणों और भाटों ने अपने आश्रय-दाताओं की प्रशस्ति में वीर-काव्यों की रचना की जिन्हें 'रासो' ग्रन्थ कहा जाता है। इन कवियों ने अपने आश्रयदाताओं के वैभव, यश, प्रेम, युद्ध-कौशल आदि का अतिरंजनापूर्ण वर्णन किया है। चन्दबरदई कृत 'पृथ्वीराज रासो', दलपत विजय कृत 'खुमान सासो', नरपतिनाल्ह कृत 'वीसलदेव रासो', भट्टकेदार कृत 'जयचन्द्र प्रकाश', जगनीक कृत ,परमाल रासो', जयानक कृत 'पृथ्वीराज विजय', नल्लसिंह कृत 'विजयपाल रासो' और सारंगधर कृत 'हम्मीर रासो', इस युग की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं। इन ग्रन्थों में आश्रयदाताओं की शूर-वीरता, ऐश्वर्य, दानवीरता आदि का ओजस्वी भाषा में वर्णन हुआ। इन ग्रन्थों की प्रामाणिकता के संबंध में बड़ा मतभेद है। कई विद्वानों का कहना है कि इनमें अनेक ऐसी धटनाओं का वर्णन है जो इतिहास-सम्मत नहीं है। इन कवियों का मुख्य उद्देश्य अपने चरितनायकों की वीरता, शक्ति आदि का अतिरंजनापूर्ण वर्णन करना था, अतः उनमें ऐतिहासिक सत्य कम और कल्पना अधिक है।

भक्तिकाल - मुसलमानों के राज्य-स्थापन के बाद हिन्दी काव्य के प्रतिपाद्य विषय एवं भावना में परिवर्तन हुआ। दक्षिण भारत में जो भक्ति का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ, उसकी लहर धीरे-धीरे उत्तर भारत तक भी पहुँची और इसका प्रभाव साहित्य पर पड़ा। एक ओर वैष्णवभक्ति का आन्दोलन चल रहा था, वहीं दूसरी ओर मुसलमानों के कट्टर एकेश्वरबाद का प्रभाव भी बढ़ रहा था। इस युग में वीररसात्मक प्रशस्ति-काव्यों की परम्परा का स्थान ईश्वर-भक्ति ने लिया। मुसलमानों के राज्य की राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक स्थिति ने भक्ति काव्य के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार किया। उत्तर भारत में भक्ति आन्दोलन को जनसाधारण में फैलाने का श्रेय स्वामी रामानन्द को दिया जाता है। कबीर ने लिखा भी है 'भक्ति द्राविड़ ऊपजी, लाया रामानंद'।

भक्तिकाल के पूर्व भक्ति केवल श्रद्धा या उपासना मात्र थी। इसमें यज्ञ एवं कर्मकांड की जटिलतायें थीं। उसमें भावना का उन्मेष नहीं था। 'गीता' के माध्यम से सर्वप्रथम कर्म, ज्ञान और भावना का समन्वय हुआ। गीता मे कर्मयोग और ज्ञानयोग की अपेक्षा भक्तियोग की महत्ता घोषित की गई। भाव-पूर्ण उपासना पद्धति का प्रभाव हिन्दी कविता पर पड़ा है इसीलिए हिन्दी का भक्ति काव्य इतना सरस एवं मधुर बन पड़ा है। विद्वानों ने भक्ति काल को हिन्दी साहित्य का स्वर्ण-युग कहा है।

उपासना पद्धति की भिन्नता एवं विविधता के कारण भक्तिकाल की रचनाएँ निर्गुण एवं सगुण भक्ति की विचारधाराओं में विभाजित की गई हैं। निर्गुण भक्ति-धारा के भी दो रूप मिलते हैं ज्ञानाश्रयी शाखा और प्रेम-मार्गीय शाखा। इसी प्रकार सगुण भक्ति भी रामभक्ति एवं कृष्णभक्ति मे विभाजित हुई है। निर्गुण सन्तों ने ईश्वर की महिमा स्वीकारते हुए उसे रूप, गुण, आकृतिहीन माना है और उसके कण-कण व्यापी रूप का यशोगान किया है। ईश्वर की निर्गुण निराकार रूप में भजने वाले सन्तों ने तीर्थयात्रा नमाज, रोजा, मूर्ति-पूजा बाह्य-आडंबर आदि का विरोध किया है। इस प्रकार के कवियों में कबीर का नाम विशेषत: उल्लेखनीय है। इनके अतिरिक्त नानक दादू, मलूकादास, रैदास आदि संत कवियों ने भी ईश्वर के निर्गुण-निराकार रूप पर ही बल दिया है और बाह्याडंबर के स्थान पर मन की शुद्धि और सरलता को ही प्रमुखता दी है। इस वर्ग के कवियों ने जांति-पाँति एवं ऊंच-नीच के भेदों को मिटाने का प्रयत्न किया। इस धारा के अधिकाँश कवि स्वयं निम्न जाति के थे और उन्होंने नाम, शब्द, गुरु-महिमा का बखान करते हुए अवतारवाद, मूर्तिपूजा और कर्मकांड का विरोध किया है। इन निर्गुण सन्तो की काव्यभाषा अनगढ़ एवं अपरिमार्जित है क्योंकि वे सब अनपढ़ थे किन्तु उनके संदेशों में जो महत्ता, उपदेशों में उदारता, उक्तियों में प्रभावोत्पादकता है वह उच्चकोटि की है।

प्रेममार्गी शाखा के कवि प्रेम को ही ईश्वर-प्राप्ति का मूलाधार मानते थे। इन कवियों पर इस्लाम की सूफी-विचारधारा का प्रभाव पड़ा है इस्लाम के प्रभाव के कारण इन्होंने ईश्वर को निर्गुण-निराकार तो स्वीकार

किया है लेकिन जनता में प्रचलित प्रेमगाथाओं के माध्यम से इन्होंने अपने आध्यात्मिक प्रेम को प्रकट किया। प्रेम के स्थूल माध्यम से उन्होंने आध्यात्मिक-प्रेम की चर्चा की है। इन्होंने आत्मा-परमात्मा का सम्बन्ध प्रेमिका-प्रेमी, वधू-वर पत्नी-पति के रूप में वर्णित किया है। आकर्षक रूपकों के माध्यम से इन कवियों ने आध्यात्मिक संकेतों की संयोजना की है। इन्होंने हिन्दुओं की लोक-प्रचलित प्रेम-कथाओं को आधार बनाकर आत्मा-परमात्मा के संबंधों की विवेचना की। इन कवियों ने प्रबन्ध-शैली में काव्य की रचना की है। इनकी काव्य-भाषा अवधी है जो सरल, सरस, और स्वाभाविक है। दोहा और चौपाई इनके प्रिय छंद रहे हैं। मलिक मोहम्मद जायसी कृत 'पदमावत' इस काव्य-परम्परा का श्रेष्ठ काव्य-ग्रंथ है। जायसी के अतिरिक्त मंझन, कुतबन, उसमान आदि भी इस काव्य-परम्परा के चर्चित कवि हैं।

निर्गुण धारा के संत कवियों ने खंडन-मंडन की प्रवृत्ति और वाणी की प्रखरता से बाह्याडंबर तथा धार्मिक ढकोसलों पर प्रहार तो किया लेकिन सामान्य-जन के मन को उससे संतुष्टि न मिल सकी। अपने मन को आश्वस्त करने के लिये उसे एक सुदृढ़ मूर्त आधार की आवश्यकता थी और यह आधार बिना किसी विशिष्ट सत्ता या अवलंब के सगुण रूप को ग्रहण किये बिना मिल नहीं सकता था। अतः भक्त कवियों ने ईश्वर के सगुण-साकार रूप को माध्यम बना कर ईश्वर भक्ति के प्रति लोगों के मन को आकर्षित किया। राम और कृष्ण के सगुण स्वरूप को माध्यम बना कर श्रेष्ठ भक्ति काव्य की रचना हुई।

रामभक्ति शाखा—के कवि राम के रूप में सगुण एवं साकार परमात्मा की उपासना करने वाले रामभक्त थे। तुलसीदास इस शाखा के परम यशस्वी तथा प्रमुख कवि हैं। तुलसी ने राम को ईश्वर का अवतार एवं आराध्य मान कर उनके सगुण रूप का 'रामचरित मानस' में बड़े विस्तार से प्रतिपादन किया। इस ग्रन्थ को अभूतपूर्व लोकप्रियता प्राप्त हुई है। इस ग्रंथ में राम के लोकपावन चरित्र का अत्यन्त प्रभावशाली चित्रण है। जीवन के विविध पक्षों के सुन्दर आदर्श इस महान ग्रंथ में उपस्थित किये गये हैं। तुलसी ने राम के चरित्र में अनंत सौन्दर्य, अनन्त शील और अनन्त

शक्ति का समन्वय किया है। मानस में भारतीय समाज का भव्य चित्र प्रस्तुत किया गया है। यह केवल एक काव्य ही नहीं, धर्मग्रंथ भी है। इस में कवित्व, धर्म और दर्शन का समन्वय हुआ है। तुलसी की भक्ति को सबसे बड़ी विशेषता समन्वय की भावना है। केशवदास की 'रामचंद्रिका' भी राम-भक्ति काव्य परम्परा के अन्तर्गत आती है लेकिन क्लिष्टता के कारण उसका भावपक्ष दब-सा गया है।

कृष्ण-भक्ति—शाखा के कवियों ने कृष्ण के चरित्र और लीलाओं के आधार पर अपनी काव्य रचना की। कृष्ण के रूप-सौन्दर्य और उनकी विविध लीलाओं के भव्य, जीवंत चित्र इन कवियों ने प्रस्तुत किये। वल्लभसम्प्रदाय की मान्यताओं के अनुरूप कृष्ण-भक्त कवियों ने कृष्ण के बाल-रूप का विस्तार से वर्णन किया। सूरदास इस शाखा के प्रधान कवि हैं। सूर ने कृष्ण भक्ति में सख्यभाव और माधुर्यभाव दोनों को स्थान दिया। वात्सल्य और शृंगार के वर्णन में सूर को अद्‌भुत सफलता मिली है। उन्होंने कृष्ण लीला के पद विभिन्न राग-रागनियों में रचे। इस शाखा के अन्य कवि परमानंददास, नंददास, मीरा, रसखान, हितहरिवंश, आदि हैं। कृष्ण भक्ति शाखा की परम्परा सैंकड़ों वर्षों तक चलती रही और रीतिकाल में तो राधाकृष्ण ही शृंगारिक प्रेम के आधार बन गये।

भक्तिकाल की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उस में धार्मिक भावनाओ और कवित्व का अद्‌भुत समन्वय हुआ है। उस में भारतीय धर्म और संस्कृति की पूर्ण रक्षा हुई है। समन्वय की भावना भी हिन्दी भक्ति-काव्य में दृष्टिगत होती है। इस काल में ऐसी धार्मिक भावनाओं की उद्‌भावना हुई जिनका मुस्लिम धर्म से कोई विरोध न था अतः अनेक सहृदय मुसलमान भी इस भक्ति धारा के प्रवाह में वह गये। भक्तिकाल में हिन्दी काव्य, भाव तथा कला दोनों दृष्टियों से अपने परम उत्कर्ष को पहुंचा। भक्ति काव्य हिन्दी की वह अनुपम सम्पति है जिस पर प्रत्येक भारतीय गर्व कर सकता है।

रीतिकाल—रीतिकाल का समय संवत् १७०० से १९०० तक का माना गया है। इस युग के नाम को ले कर विद्वानों में पर्याप्त मतभेद रहा है।

इस युग में रचित रीति-ग्रंथों की बहुलता के कारण ही इसे रीतिकाल कहा गया है। इस के अतिरिक्त इस युग को अलंकार-काल, कला-काल, शृंगार-काल आदि नामों से भी संबोधित किया गया है। वस्तुतः रीतिकाल का मुख्य प्रतिपाद्य विषय शृंगार ही रहा है। सारे रीति-काव्य में शृंगार की व्यापक वृत्ति का ही वर्णन मिलता है। भूषण जैसे वीर-रस के कवि भी इस प्रभाव से मुक्त न रह सके। राम और कृष्ण, जिन के यशोगान में भक्ति-काव्य रचा गया, वे ही महापुरुष रीतियुग के रसिक कलाविदों द्वारा सामान्य नायक नायिका की तरह रस-केलि में डूबे हुए चित्रित—किये गये और उनका लोक मंगलकारी रूप ऐश्वर्य और विलास के देवताओं में बदल दिया गया।

रीतिकालीन काव्य में दो प्रवृत्तियां मुख्यतः देखने को मिलती हैं। पहली—आचायत्त्व—स्थापन की और दूसरी शृंगार वर्णन की। इस युग के कवियों ने संस्कृत के आचार्यों की परंपरा में अपनी गणना करवाने के लक्ष्य को प्रमुखता तो दी किन्तु उनका शास्त्रीय ज्ञान अपरिपक्व था। इन कवियों का मुख्य उद्देश्य आचार्यत्त्व की स्थापना की अपेक्षा उसका प्रदर्शन करना ही अधिक रहा है। शृंगार की वृत्ति तो रीतिकाव्य में प्रवाहित होने वाली रक्तधारा है। इस युग में रचा जाने वाला ८५ प्रतिशत काव्य, शृंगार प्रधान है। इन कवियों ने नारी को विलास का केन्द्र बिंदु मान कर, उस के नख-शिख का वर्णन किया। रीति-युग का शृंगार वर्णन 'भोग प्रधान है और इस में तरलता और छटा अधिक है, आत्मा की पुकार एवं तीव्रता अपेक्षाकृत कम है।'

रीतिकाल के सभी कवि राज्याश्रित थे अतः इन्होंने आश्रयदातों की अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसाएँ की हैं। रीतिकाल में प्रकृति चित्रण भी बड़े विस्तार से किया गया किन्तु प्रकृति की स्वतंत्र चेतन-सत्ता चित्रित करने के बजाय ये कवि प्रकृति को उद्दीपन रूप में ही चित्रित करते रहे। रीति-काव्य में शृंगार के विशद विवेचन के साथ-साथ शक्ति एवं वैराग्य की भावनाएँ भी अभिव्यक्त हुई हैं। भक्ति सम्बन्धी रचनाएँ तो केवल परम्परा का निर्वाह करने के लिये ही प्रस्तुत की गई हैं। सामान्यतः कवियों ने

काव्य-सृजन के निमित्त मुक्तक-शैली का ही आश्रय लिया है। रीतिकाल का अधिकांश काव्य ब्रजभाषा में ही रचा गया है। ब्रजभाषा का परिष्कृत, परिमार्जित एवं प्रौढ़ रूप हमें रीतिकाव्य में देखने को मिलता है। शृंगार-प्रधान काव्य स्वर होते हुए भी इस युग में वीर रसात्मक एवं नीति-प्रधान काव्य की रचना हुई। छंदों में दोहा, कवित्त, सवैया आदि की प्रधानता रही।

इस युग के प्रमुख कवि हैं—देव, मतिराम, बिहारी, भिखारीदास, पद्माकर, घनानंद, ठाकुर आदि। भूषण, सूदन, लाल आदि कवि इस युग में वीर-रस की कविता के लिये प्रसिद्ध हैं।

आधुनिक काल—हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल, अंग्रेजी राज्य की स्थापना तथा पश्चिमी विचारों और ज्ञान-विज्ञान के सपंर्क के साथ प्रारंभ होता है। इस युग में ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली साहित्य की मुख्य भाषा बन गयी। सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में होने वाली उथल-पुथल से साहित्य में भी नई चेतना आई और काव्य की विषय-वस्तु में विविधता एवं व्यापकता का समावेश हुआ। आधुनिक काल का प्रारंभ भारतेन्दु से माना जाता है। भारतेन्दु ने स्वयं खड़ी बोली में काव्य रचना नहीं की है, लेकिन नवीन आन्दोलन के सूत्रधार होने के नाते आधुनिक काल का शुभारंभ भारतेन्दु-युग से ही माना जाता है।

हिन्दी कविता के आधुनिक काल को हम पांच युगों में बाँट सकते हैं—

(१) **भारतेन्दु युग**—कविता की दृष्टि से भारतेन्दु-युग संधिकाल का युग है। इसमें प्राचीन एवं नवीन का समन्वय हुआ है। भारतेन्दु ने रूढ़ि और शृंगारिकता के विषाक्त वातावरण में अन्तिम साँसें लेती हुई कविता को नूतन विचारों से प्रेरित किया। भारतेन्दु ने युगों से विच्छिन्न काव्य और जीवन में पुनः सम्बन्ध स्थापित किया। इस युग में देश-प्रेम, सामाजिक विषमता, आर्थिक शोषण, अतीत-गौरव आदि विषयों पर कविताएँ लिखी गई। वस्तुतः काव्य में राष्ट्रीयता का स्वर पहली बार इसी युग में ध्वनित हुआ। प्रकृति के प्रति भी इस युग में कवियों का दृष्टिकोण बदला। उन्होंने उसे आलंबन रूप में चित्रित करना प्रारंभ कर दिया।

भारतेन्दु युग, सामाजिक जागरण का युग था। भारतेन्दु युग के अधिकांश कवियों ने प्राचीन परम्परा का निर्वाह करते हुए भी नूतनता का स्वागत किया है। भारतेन्दु के अतिरिक्त, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रतापनारायण मिश्र, राधाकृष्ण दास, ठाकुर जगमोहनसिंह, राधाचरण गोस्वामी आदि इस युग के उल्लेखनीय कवि हैं।

(२) द्विवेदी युग—इस युग में वर्णनात्मक तथा उपदेशात्मक कविताओं का प्राधान्य रहा। भारतेन्दु-युग में गद्य की भाषा तो खड़ी बोली हो गई थी किन्तु कविता में ब्रजभाषा का प्रयोग ही चल रहा था। महावीरप्रसाद द्विवेदी ने पद्य की भाषा में एकरूपता स्थापित की। उन्होंने खड़ी बोली का परिमार्जन किया। इस युग में स्वतंत्र प्रकृति-चित्रण सम्बन्धी कविताएँ लिखी गई और आदर्शवाद की प्रधानता रही। अतीत-गौरव, देश-प्रेम, राष्ट्रीयता, समाज-सुधार आदि काव्य के प्रमुख विषय रहे। नीति-परक और आख्यान-मूलक इतिवृत्तात्मक काव्य, इस युग में पर्याप्त संख्या में रचे गये। द्विवेदी युग में काव्य-भाषा का केवल व्याकरण की दृष्टि से ही परिष्कार नहीं हुआ, अपितु उस में काव्योचित सरसता, माधुर्य और प्रौढ़ता लाने के प्रयत्न भी किये गये। इस युग के कवियों ने खड़ी बोली की कर्कशता को दूर कर उसमें सरसता और माधुर्य की सृष्टि करने में सफलता प्राप्त की। द्विवेदी युग में खड़ी बोली को काव्योपयोगी, रमणीय, सरस और मधुर भाषा बनाने का प्रयत्न उत्तरोत्तर बल पकड़ता गया और द्विवेदी युग के अंतिम वर्षों तक वह अपनी प्रारंभिक कर्कशता को छोड़ कर सरस, प्रांजल काव्य-भाषा का रूप धारण करने में समर्थ हुई। अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मैथिलीशरण गुप्त, ठाकुर गोपालशरण सिंह, श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी आदि इस युग के प्रतिनिधि काव्य हस्ताक्षर हैं।

छायावाद युग—द्विवेदीयुगीन नीरस, इतिवृत्तात्मक काव्य की प्रतिक्रिया-स्वरूप छायावाद युग आरंभ हुआ। प्रथम महायुद्ध की विभीषिका ने भौतिक संम्यता की श्रेष्ठता के सामने प्रश्न चिह्न लगा दिये और लोगों का ध्यान आध्यात्मिकता की ओर आकर्षित हुआ। रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद आदि के उपदेशों तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर की गीतांजली ने इस युग

कि कवियों में रहस्य-भावना की प्रवृत्ति को जाग्रत किया। अंग्रेजी, बंगला और संस्कृत काव्यों के अनुशीलन ने भी हिन्द में छायावादी युग की अवतारणा में सहयोग दिया। बाह्यार्थ निरूपक कविताओं के स्थान पर आत्मानुभूति-परक कविताओं का शुभारंभ हुआ। अब कविता का बहिरंग नहीं, अन्तरंग सज्जित किया जाने लगा। भाषा में सरसता और कोमलता कि गुणों का समावेश हुआ। आत्मानुभूति-परक, कल्पना-प्रसूत तथा आकर्षक शैली युक्त कविताएं लिखी जाने लगीं। छायावादी शैली में लाक्षणिकता चित्र मयता तथा व्यंजना की प्रधानता थी। छायावादी कवियों ने प्रकृति के अत्यन्त सजीव एवं स्वाभाविक चित्र अंक्ति किये। इन कवियों ने हिन्दी काव्य को नयी भावनाएं, नई भाषा, नये छंद, और नये अलंकार दिये। छायावाद वस्तुतः काव्य की भाव तथा कला संबंधी पुरानी मान्यताओं के प्रति एक प्रवल विद्रोह था। छायावाद के भावपक्ष में रहस्य भावना की प्रवृत्ति का एक चेतन सत्ता के रूप में तथा मानव की अन्तर्वृत्तियों का सूक्ष्म चित्रण हुआ है। सौन्दर्य, प्रेम और शृंगार के भव्य चित्र इस युग के कवियों ने प्रस्तुत किये। जयशंकर 'प्रसाद', सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा, आदि इस युग के प्रतिनिधि कवि हैं। 'कामायनी' जैसा महाकाव्य इसी युग में रचा गया जो हिन्दी काव्य की श्रेष्ठतम कृति के रूप में जाना जाता है।

प्रगतिवादी युग—इस युग का आविर्भाव छायावादी-युग की प्रतिक्रिया-स्वरूप हुआ। छायावादी कवि वास्तविकता को छोड़ कर अत्यधिक कल्पना एवं भावुकता की दुनिया में बह चले तो प्रगतिवादी कवियों ने जीवन की विषमताओं और समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित किया। साहित्य में किसानों और मजदूरों के उत्पीड़ित जीवन के चित्र अंकित किये जाने लगे। काव्य का स्वर व्यक्तिवादी न रह कर सामाजिक हो गया। इस युग की कविता पर मार्क्सवाद एवं रूसी साहित्य का बहुत प्रभाव पड़ा है। प्रगतिवादी काव्य यथार्थ का समर्थक है। वह कल्पना लोक के वजाय वास्तविक जगत को ही सत्य मानता है। प्रगतिवाद, कला को केवल कला के लिये नहीं अपितु जीवन के लिये मानता है। पूंजीवादी-शोषण का विरोध और वर्गहीन समाज की

स्थापना उसका लक्ष्य है। नरेन्द्र शर्मा, सुमन, अंचल, दिनकर, भगवतीचरण वर्मा, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, रामविलास शर्मा, रांगेय राघव आदि इस धारा के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं।

प्रयोगवादी युग—यह हिन्दी का नवीनतम वाद है। विषय और शैली का वैचित्र्य इसकी विशेषता है। प्रयोग के नाम पर भाव, विचार, प्रतीक और छंद आदि में परिवर्तन करने की प्रवृत्ति पाँचवें दशक में प्रारंभ हुई। इसे नई कविता के नाम से भी जाना जाता है। प्रगतिवादी अभिधामयी प्रेषणीयता के विरोध में नये स्तर पर रागात्मक संबंधों का चित्रण करने की दृष्टि से ही प्रयोगवादी कविता का जन्म हुआ। अब तक काव्य में केवल भावात्मकता का ही बोलबाला रहा, लेकिन नये कवियों ने बौद्धिकता को भी काव्य का अंग बना दिया। प्रयोगवाद में शिल्प को, शिल्पी के व्यक्तित्व के अनिवार्य अंग के रूप में ग्रहण किया जाने लगा और इस प्रकार शिल्प और वस्तु दोनों ही दृष्टियों से आमूल परिवर्तन हुए। अनेक विरोधों के बावजूद प्रयोगवादी कविता ने अपनी मंजिल तय की है और नई कविता इसी का अगला चरण है। इसके आयामों का अब भी विस्तार हो रहा है। शुद्ध-कविता, ठोस कविता, अ-कविता आदि के अनेक आन्दोलन इस समय हिन्दी में चल रहे हैं, जिनके स्थायित्व के सम्बन्ध में भविष्य की प्रतीक्षा करनी होगी। अज्ञेय, धर्मवीर भारती, गजानन माधव 'मुक्तिबोध', सर्वेश्वर दयाल, गिरिजाकुमार, भारतभूषण अग्रवाल, नंद चतुर्वेदी आदि इस धारा के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। प्रस्तुत संकलन में नंद चतुर्वेदी, कन्हैयालाल सेठिया की कवितायें नये भाव-बोध वाली कविता का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

सारतः कहा जा सकता है कि हिन्दी कविता निरंतर गतिशील रही है और समय के संदर्भों से जुड़ कर उसमें सदा नया और श्रेष्ठ रचा गया है। इसकी तुलना उस सरिता से की जा सकती है जो अपने उद्‌गम से निकल कर पहाड़ों, चट्टानों, समतल मैदानों और रेतीले तटों में सिमटती, सिकुड़ती और कभी-कभी अपने आयामों का विस्तार कर निरंतर गतिशील रहती है।

हिन्दी कविता में बहुत कुछ श्रेष्ठ रचा गया है और इसका दूरागत भविष्य और अधिक श्रेष्ठ के प्रति आश्वस्त करता है।

प्रकाश आतुर
संकलनकर्ता एवं संपादक

शिक्षण की दृष्टि से प्रस्तावित क्रम

प्रस्तुत काव्य-संकलन में हिन्दी साहित्य के ऐतिहासिक काल क्रमानुसार कविताएँ संकलित की गई हैं। विद्यार्थियों के ज्ञान-वर्द्धन के निमित्त ही व्यवस्थित काल-क्रम दिया गया है किन्तु अध्यापन के समय क्रमानुसार कवियों को पढ़ाना, शिक्षक के लिये आवश्यक नहीं है। सैकेन्ड्री के छात्र-छात्राओं के मानसिक विकास, विषय-ज्ञान, भाषा-सामर्थ्य आदि को ध्यान में रखते हुए, सरलता की दृष्टि से ही यह क्रम प्रस्तावित किया जा रहा है। सरल से कठिन की ओर अग्रसर होने की दृष्टि इसमें है। वैसे अध्यापक अपनी सुविधा और छात्र समुदाय के मानसिक विकास की स्थिति के अनुरूप इसमें परिवर्तन करने के लिये स्वतंत्र हैं। प्रस्तावित क्रम निम्नांकित है—

कक्षा नवीं

१. शिवमंगलसिंह 'सुमन'
२. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
३. मैथिलीशरण गुप्त
४. हरिवंशराय 'बच्चन'
५. कन्हैयालाल सेठिया
६. नंद चतुर्वेदी
७. मीरा बाई
८. रसखान
९. नरोत्तमदास
१०. रहीम
११. सूरदास

कक्षा दशवीं

१. भगवतीचरण वर्मा
२. सुधीन्द्र
३. रामधारीसिंह 'दिनकर'
४. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
५. माखनलाल चतुर्वेदी
६. सुमित्रानंदन पंत
७. बिहारी
८. तुलसी
९. कबीर
१०. नाथूदान महियारिया

१. कबीर

जन्म : सन् १३९८ ई०
मृत्यु : सन् १५१८ ई०

जीवन परिचय

कबीर भक्तिकाल के प्रमुख कवि हैं। उन्हें हिन्दी-काव्य की निर्गुण धारा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। कबीर के जन्म स्थान के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। कोई उनका जन्म स्थान काशी के समीप और कोई बस्ती जिला के अन्तर्गत मगहर ग्राम बताते हैं। उनके पिता का नाम नीरू तथा माता का नाम नीमा बताया जाता है। इसी प्रकार उनकी पत्नी का नाम लोई और पुत्र का नाम कमाल बताया जाता है। यद्यपि कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे किन्तु उनकी अनपढ़ वाणी का जितना गहरा प्रभाव लोगों के मन पर पड़ा है उतना हिन्दी के किसी अन्य कवि का नहीं। बड़े होने पर वे गुरु रामानन्द के शिष्य बन गये। उनका जीवन साधु-सन्तों के सत्संग में बीतता था। वे हिन्दुओं और मुसलमानों के धर्म रहस्य को समझते थे और दोनों जातियों के बीच भेदभाव मिटाने के लिए बराबर उपदेश देते थे। उनके उपदेशों के आधार पर उनके शिष्यों ने एक मत चला दिया था जिसे कबीर-पंथ कहते हैं।

रचनाएँ—कबीर के नाम से अनेक रचनाएं मिलती हैं पर उनमें से अधिकांश उनकी रचनाएँ नहीं हैं। संतों की रचनाएँ 'बानी' कहलाती हैं। कबीर की 'बानी' के तीन प्रकार हैं—साखी, सबद, रमैनी। कबीर की समस्त रचनाओं का संकलन प्रयाग विश्वविद्यालय से 'कबीर ग्रंथावली' नाम से प्रकाशित किया जा चुका है। इसमें पद, रमैनी, सबद, साखी आदि सभी रचनाएँ सम्मिलित हैं। सिक्खों के 'गुरु-ग्रन्थ' साहब में भी कबीर की कुछ रचनाएँ संकलित हैं।

काव्यगत विशेषताएँ—कबीर ने जीवन की सहजता और सरलता पर

जोर दिया है। उनके काव्य में किसी प्रकार का आडंबर नहीं है। उनकी भाषा को 'सधुक्कड़ी भाषा' कहा जाता है जिसमें अनेक भाषाओं के शब्द मिलते हैं। उन्होंने काव्य के माध्यम से हिन्दुओं और मुसलमानों में प्रचलित अंध-विश्वासों और कुरीतियों पर प्रहार किया है और ऊँच-नीच के भेद-भाव को दूर करने की बात कही है। वे सब धर्मों की समानता के समर्थक थे। उन्होंने राम और रहीम की एकता प्रतिपादित कर हिन्दू-मुसलमानों में ऐक्य स्थापित करने का प्रयत्न किया। उनके काव्य में बाह्याडंबर का विरोध और मन की शुद्धता पर बल दिया गया है। उन्होंने मूर्ति-पूजा का भी खंडन किया है।

कबीर के काव्य में आत्मविश्वास की झलक मिलती है। उनकी कविता में हृदय के सच्चे उद्‌गार मिलते हैं जो मन पर गहरा प्रभाव डालते हैं। जनता के जीवन पर कबीर के काव्य का व्यापक असर पड़ा है। कबीर ने बड़ी निर्भीकता से अपनी बात कही है। वे साधारण जनता के कवि थे। कबीर के काव्य का प्रभाव इतना व्यापक रहा है कि वह देश-काल की सीमाओं को पार करके अनेक भाषाओं में अनुवादित हुआ है। कबीर वास्तव में ऐसे महान् कवि थे जिन्होंने निर्भीकतापूर्वक जीवन-सत्य को उजागर किया। जीवन की स्वाभाविक और सात्विक क्रियाशीलता में ही उनके धर्म की व्यवस्था है, जिसका प्रसार उन्होंने 'सबदों' और 'साखियों' में किया।

साखी—संत सम्प्रदाय का अधिकांश साहित्य 'साखी' में ही लिखा गया है। 'साखी' वस्तुतः दोहा छंद ही है किन्तु प्राचीन छन्द होने के कारण सन्तों ने इसमें मनमाना उलटफेर भी किया है। 'साखी' साक्षी का ही विकृत रूप है। इसका अर्थ होता है 'प्रत्यक्ष ज्ञान'। यह प्रत्यक्ष-ज्ञान गुरु शिष्य को प्रदान करता है। सत्य की साक्षी देता हुआ गुरु जीवन के तत्व-ज्ञान की शिक्षा शिष्य को देता है। गुरु के उपदेशों को ही 'साखी' कहा गया है।

संकलित साखियों में कबीर ने वाणी की परोपकारवृत्ति, मन की निर्मलता आदि के उपदेश दिए हैं। कबीर की साखियों में जीवन को पवित्र, आदर्श-

मय और कपट-रहित बनाने के उपदेश दिए गए हैं। इन साखियों में पाखंड और बाह्याडंबर पर चोट की गई है। इनमें गुरु की महिमा और ईश्वर की सर्व-व्यापकता की चर्चा की गई है। संसार की निःसारता का उल्लेख करते हुए कवि ने जीवन को निष्कपट भाव से जीने का उपदेश दिया है।

उपदेश—

केसन कहा बिगारिया, जो मूडौ सौ बार।
मन को क्यों नहिं मूडियै, जा में बिषै विकार।१।

ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोइ।
औरन कूं सीतल करै, आपै सीतल होइ।२।

बाँबी कूटै बावरा, सरप न मार्‌या जाइ।
मूरख बाँबी ना डसै, सरप सबन को खाइ।३।

बड़ा भया तो क्या भया, जैसे पेड़ खजूर।
पंछी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर।४।

जल में बसै कमोदनी, चंदा बसै अकास।
जो जाही का भावता, सो ताही के पास।५।

हंसा बगुला एक से, मानसरोवर माँहि।
बगा ढंढोरे माछरी, हंसा मोती खांहि।६।

कबिरा संगत साधु की, वेगि करीजै जाइ।
दुरमति दूरि गंवाइसी, देसी सुमति बताइ।७।

सोना सज्जन साधुज्जन, टूटि जुरै सौ बार।
दुर्जन कुंभ कुम्हार के, एकै धका दरार।८।

बोली एक अमोल है, जो कोई बोलै जानि।
हियै तराजू तोल के, तब मुखि बाहरि आनि।९।

निंदक नियरे राखिये, आंगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निरमल करै सुभाय।१०।

गुरू महिमा —

गुरु कुम्हार, सिष कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़ै खोट।
अन्तर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट।११।

गुरु गोविन्द दोऊ खड्या, का के लागूं पाँइ।
बलिहारी गुरु आपणै, गोविन्द दियो दिखाइ।१२।

ईश्वर महिमा—

धरती सब कागद करूँ, लेखनि सब बनराय।
सात समंद की मसि करूँ, हरि गुण लिख्या न जाय।१३।

तेरा सांई तुज्झ में, ज्यों पुहुपन में वास।
कस्तूरी का मिरग ज्यों, फिरि फिरि ढूंढै घास।१४।

संसार की नश्वरता—

नौ द्वारे का पींजरा, तामें पंछी पौन।
रहिबे को है आचरज, गयौ अचम्भा कौन।१५।

माली आवत देख कर, कलियाँ करीं पुकार।
फूले फूले चुन लिए काल्हि हमारी बार।१६।

फिला तवहि न चेतियो, जब ढिग लागी बेरि।
अब कै चेते का भया, कांटनि लीनि घेरि।१७।

कबिरा यह जग कछु नहिं, खिन खारा खिन मीठ।
काल्हि जो बैठा मंडपै, आजु मसाने दीठ।१८।

जो ऊगै सो आँथवै, फूलै सो कुमलाइ।
जो चिणिया सो ढहि पड़ै, जो आया सो जाइ।१९।

पान झड़ंते यूं कह्यौ, सुन तरवर बन राइ।
अब के बिछुड़ ना मिलैं, दूरि पड़ैंगे जाइ।२०।

सबद—'सबद' संस्कृत के 'शब्द' का रूपांतर है। शब्द का अर्थ 'ज्ञान' माना गया है। निर्गुण सन्तों की दृष्टि में गुरु की प्रतिष्ठा ब्रह्म के समान है अतः गुरु की वाणी का नामकरण 'शब्द' या 'सबद' या 'सबदी' किया गया है। उपदेशात्मक और सिद्धान्त स्पष्ट करने वाले गेय पदों को 'सबद' या 'सबदी' कहा गया है।

संकलित 'सबदों' में ईश्वर के घटघट व्यापी रूप और नाम स्मरण की महिमा का वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त सत्संग के महत्व का उल्लेख करते हुए, राम और रहीम के व्यर्थ के झगड़ों को व्यर्थ बताया गया है।

(१)

जल बिन मीन पियासी।
मोहि सुनि सुनि आवत हांसी।
घर में वस्तु धरी नहीं सूझै, बाहर खोजन जासी।
मृग की नाभि माँहि कस्तूरी, बन बन फिरत उदासी।

आतम-ग्यान बिना सब सूना, क्या मथुरा क्या कासी ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सहज मिलै अविनासी ।

(२)

नाम सुमिर पछितायगा ।
पापी जियरा लोभ करत है, आज-काल उठि जायगा ।
लालच लागी, जनम गंवाया, माया भरम भुलायगा ।
धन-जोबन का गरब न कीजै, कागद ज्यों गलि जायगा ।
जब जम आइ, केस गहि पटकै, ता दिन कछु न बसायगा ।
सुमिरन भजन दया नहिं कीन्ही, तो मुख चोटा खायगा ।
धरमराय जब लेखा मांगे, क्या मुख ले के जायगा ।
कहत कबीर, सुनो भाई साधो, साधु-संग तरि जायगा ।

(३)

पंडित वाद वदी सो झूठा ।
राम के कहे जगत गति पावै, खांड कहे मुंह मीठा ।
पावक कहे, पांव जो दाझै, जल कहे तृखा बुझाई ।
भोजन कहे, भूख जो भागै, तो दुनिया तरि जाई ।
नर के संग सुवा हरि बोली, हरि-प्रताप नहिं जानै ।
जा कबहुँ उड़ि जाय जंगल को, तो हरि सुरति न आनै ।
बिनु देखे बिनु अरस परस, बिनु नाम लिए का होई ।
धन के कहे धनिक जो हो तो, निर्धन रहत न कोई ।
सांची प्रीति विषय माया सो, हरि भगतन की हांसी ।
कह कबीर, एक राम भजे बिन, बाधा जमपुर जासी ।

(४)

दुइ जगदीस कहां ते आये, कहु कौन भरमाया।
अल्ला-राम, करीमा-केसव, हजरत नाम धराया।
गहना एक कनक तें गढ़ना, इन मंह भाव न दूजा।
कहन सुनन को दुइ करि राखे, इक नमाज एक पूजा।
वही महादेव, वही मुहम्मद, ब्रह्मा आदम कहिये।
को हिन्दू को तुरक कहावै, एक जमीं पर रहिये।
वेद कुरान किताब पढ़ै, वे मौलाना वे पांडे।
कहत कबीर सुनो भइ साधो, इक माटी के भांडे।

(५)

साधो, सो सतगुरु मोंहि भावै।

सत्त-नाम का भरि भरि पियाला, आप पिवै मोंहि प्यावै।
मेले जाय न महंत कहावै, पूजा भेंट न लावै।
परदा दूर करै आंखिन का, निज दरसन दिखलावै।
जाके दरसन साहब दरसै, अनहद सबद सुनावै।
माया के सुख दुख कर जानै, संग न सुपन चलावै।
निसि दिन संत संगति में राचै, हरि को नाम रटावै।
कह कबीर, ताको भय नाहीं, निरभय पद परसावै।

अभ्यास के प्रश्न

नोट :—नीचे दिये गये प्रश्नों के संभावित उत्तरों में से सर्वाधिक उपयुक्त

उत्तर का क्रमांक दाहिनी ओर दिए कोष्ठक में लिखिए—

प्र० १. कबीर के मत में मीठे वचन क्यों बोलने चाहिए ?

(क) सुनने वाला प्रभावित होता है। (ख) मीठी वाणी से सब प्रसन्न होते हैं। (ग) अहंकार दूर होता है। (घ) स्वयं को व सुनने वाले को सुख मिलता है। (च) परस्पर मित्रता बढ़ती है।

प्र० २. कवि के अनुसार सत्संग का महत्त्व क्यों है ?

(क) हरि कीर्तन सुनने को मिलता है। (ख) दूर-दूर तक भ्रमण करने को मिलता है। (ग) दुर्बुद्धि नष्ट हो कर सुबुद्धि आती है। (घ) समाज में आदर-सत्कार मिलता है। (च) ईश्वर-भक्ति में मन लगता है। (   )

प्र० ३. कबीर ने केशों को न मूंडने का क्यों आग्रह किया है ?

(क) केश सौंदर्य की वृद्धि करते हैं। (ख) केशों का मूंडना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। (ग) केशों को मूंडना अशुभ माना जाता है। (घ) केशों को मूंडना सिर्फ प्रपंच है। (च) केशों से साधुत्व प्रकट होता है।

प्र० ४. 'हियै तराजु तोल के, तब मुख बाहर आनि'।
इस पंक्ति का मुख्य-भाव क्या है ?

(क) भावना पर संयम रखो। (ख) बुरे विचारों को प्रकट न करो। (ग) भली लगने वाली बात ही कहो। (घ) सुविचारित-बात ही मुख से बोलो। (च) नपी-तुली भाषा ही सर्वश्रेष्ठ है। (   )

प्र० ५. 'हरि गुण लिख्यो न जाई'—से क्या तात्पर्य है।

(क) हमारे द्वारा हरि गुण नहीं लिखे जा सकते। (ख) हम में हरि-गुण लिखने की सामर्थ्य नहीं है। (ग) हम हरिगुण लिखने के अधिकारी नहीं हैं। (घ) हमारे लिए हरिगुण अनंत, अगणित है। (च) हमें हरिगुणों का पूर्ण ज्ञान नहीं है। (   )

प्र० ६. नौ-द्वारे के पिंजड़े में कौन-सा पक्षी कबीर बतलाना चाहते हैं ?

(क) मन (ख) आत्मा (ग) प्राण (घ) ज्ञान (च) ध्यान ।

प्र० ७. (क) 'दुई जगदीश कहां ते आये' । इस सबद में कबीर ने अपनी किस विचारधारा का उल्लेख किया है ? उत्तर सीमा ५ शब्द । (ख)'अन-हद-सबद' से कवि का क्या अभिप्राय है । उत्तर सीमा १० शब्द । (ग) कबीर ने संसार की नश्वरता के सम्बन्ध में जो कहा है उसे २५ शब्दों में लिखिये । (घ) हिन्दू-मुस्लिम एकता के सम्बन्ध में कबीर के विचारों को २५ शब्दों में लिखिए । (च) ईश्वर के नाम का सुमिरन करने को क्यों कहा गया है ? उत्तर सीमा २५ शब्द । (छ) 'माली आवत देख कर कलियाँ करी पुकार' । इस अन्योक्ति द्वारा कवि ने किस ओर संकेत किया है ? उत्तर सीमा १० शब्द । (ज)'नौ-द्वारे का पींजरा' से कवि किन नौ-द्वारों की ओर संकेत करता है ? १० शब्दों में बतलाइये ।

प्र० ८. निम्न साखियों का भाव स्पष्ट कीजिए । उत्तर सीमा ४० शब्द ।

(क) किला तबहिं न चेतिया.......... (ख)जो ऊगै सो आंथवै.........
(ग) पान झड़ंतै यूं कह्यौ... ...... (घ)गुरु कुम्हार सिष कुंभ है......
(च) सोना, सज्जन साधु जन.......... ।

प्र० ९. निम्न शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए—

बिषै, सीतल, सरप, दुरमति, सिष, ससंद, पुहुप, मिरग, आचरण, तृषणा, निश्चय ।

प्र० १०. निम्न शब्दों के प्रचलित हिन्दी रूप बताइये—

जामै, काल्हि, ढिग, खिन, दीठ, चिरिया, थोहि, पियासी जासी ।

प्र० ११. कबीर की भाषा के संबंध में प्रस्तुत पाठ से उदाहरण प्रस्तुत करते हुए २०० शब्दों में लेख लिखिए ।

प्र० १२. कबीर की 'साखियों' और 'सबदों' के आधार पर उनकी भक्ति

भावना का परिचय १५० शब्दों में दीजिए।

प्र० १३. एक पृष्ठ में निर्गुण काव्य धारा पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

....

२. सूरदास

जन्म : सन् १४७८ ई०
मृत्यु : सन् १५७३ ई० के लगभग

जीवन परिचय

सूरदास हिन्दी की कृष्णकाव्य-परंपरा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। उनका जन्म-स्थान संभवतः दिल्ली के निकट सीही ग्राम था। कुछ विद्वान् मथुरा और आगरा के बीच स्थित रुनकता नामक ग्राम को सूरदास का जन्म-स्थान मानते हैं। वे जाति के ब्रह्म भट्ट थे। बचपन में ही विरक्त होकर सूरदास मथुरा के पास गऊघाट पर रहने लगे। वहीं महाप्रभु वल्लभाचार्य से उनकी भेंट हुई। महाप्रभु ने सूरदास को वल्लभसंप्रदाय में दीक्षित किया और भगवान के लीला-रहस्य से परिचित कराया। महाप्रभु के देहान्त के उपरान्त उनके पुत्र विठ्ठलनाथ ने 'अष्टछाप' नामक भक्तों की एक मंडली बनाई जिसमें उन्होंने चार महाप्रभु के और चार अपने शिष्यों को सम्मिलित किया। सूरदास को 'अष्टछाप' में प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ।

सूरदास अंधे थे, पर जन्मान्ध थे या बाद में अंधे हुए यह निश्चित नहीं है। प्राकृतिक दृश्यों तथा रंगरूप आदि का जो चित्रण उन्होंने किया है उसे देखकर कुछ विद्वान उन्हें जन्मान्ध नहीं मानते।

रचनाएँ

सूर के नाम से अनेक रचनाएँ मिलती हैं, पर प्रामाणिक रूप से निम्न-लिखित तीन रचनाएँ ही उनकी कही जा सकती हैं—

(१) सूरदास (२) सूर सारावली (३) साहित्य लहरी। सूरसागर पदों में लिखित विशाल काव्य-ग्रन्थ है। इसमें लगभग ५००० पद हैं। उसमें विनय, कृष्ण का बाल रूप, राधा-कृष्ण का प्रेम, गोपियों का विरह आदि का विस्तृत वर्णन किया गया है। साहित्य-लहरी में कूट पदों का संग्रह है। 'सूर-सारावली' में कृष्णलीला का वर्णन करते समय चौपाई छन्द का प्रयोग किया है।

काव्यगत विशेषताएँ

सूरदास के काव्य का प्रमुख विषय वात्सल्य, शृंगार एवं भक्ति है। इन विषयों के वे हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। वात्सल्य का जैसा चित्रण सूरदास ने किया है अन्यत्र दुर्लभ है। अंधे होने पर भी उन्होंने बालकों की चेष्टाओं और क्रीड़ाओं का स्वाभाविक वर्णन किया है। माता के स्नेहपूर्ण हृदय का चित्रण भी बड़ी भावुकता के साथ किया गया है।

सूर ने प्रेम एवं सौंदर्य का भी प्रभावशाली वर्णन किया है। शृंगार के संयोग और वियोग दोनों पक्षों का वर्णन सूर ने विशद रूप से किया है।

भक्त कवियों में सूरदास का बहुत ऊंचा स्थान है। उनके भक्ति और विनय के पद सरस और भावपूर्ण हैं। सूर की भाषा ब्रज भाषा है। वह सरल प्रवाहपूर्ण और भावों के अनुकूल है। सूर ने ब्रजभाषा को सबसे पहले साहित्यिक रूप दिया। उन्होंने गीत-काव्य की रचना की। सूरसागर के पदों में अनेक राग-रागनियों का प्रयोग हुआ है। इसी कारण सूर के पद संगीत-कारों में भी लोकप्रिय हैं।

यद्यपि सूर की अपेक्षा तुलसी का काव्यक्षेत्र अधिक व्यापक है पर वात्सल्य शृंगार और भक्ति की दृष्टि से सूरदास हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। सूर और तुलसी की लोकप्रियता निम्न दोहों से सिद्ध होती है—

१. सूर सूर तुलसी ससी, उडुगन केसवदास।
अब के कवि खद्योत सम, जहं तहं करत प्रकास।

२. तत्व तत्व सूरा कही, तुलसी कही अनूठि।
बची खुची कबिरा कही, और कही सो झूठि।

३. किधौं सूर को सर लग्यौ, किधौं सूर की पीर।
किधौं सूर को पद लग्यौ, तन-मन धुनत सरीर।

पद

(सूर के सभी पद गेय हैं और उन्हें संगीत की विभिन्न राग-रागनियों के आधार पर गाया जा सकता है। संकलित पदों में अंधे महाकवि ने अपने आराध्य के चरणों में प्रार्थना करते हुए स्वयं को शरण में लेने का निवेदन किया है। सांसारिक दुःख और पीड़ा से घबरा कर भक्त-कवि अनेक प्रकार से प्रार्थना करते हुए अपने उद्धार की बात कहता है। वह प्रभु के चरणों की वंदना करता है जिनकी कृपा से असमर्थ भी समर्थ बन जाता है। वह स्वयं को संसार का सबसे बड़ा अधम बताते हुए प्रभु कृपा से प्रार्थना करता है जिससे वह माया-मोह के जंजाल से मुक्त हो जाये।

बाल-लीला वर्णन में सूर ने कृष्ण के बाल-रूप का बड़ा स्वाभाविक एवं सजीव वर्णन किया है। कृष्ण का घुटनों के बल चलना, अपनी परछांई को पकड़ने का प्रयत्न करना, आदि बाल-सुलभ चेष्टाओं का बड़ा स्वाभाविक विवरण इन पदों में समाहित है।

गोचारण के पदों में गाय चराने के लिए कृष्ण का आग्रह, वन में मित्रों के साथ भ्रमण और खेल खेल में झगड़े और मनमुटाव का बड़ा रोचक वर्णन हुआ है। 'मुरली माधुरी' में कृष्ण के मुरली प्रेम के अतिरिक्त ब्रजवासियों की मुरली-स्वर सुनने की लालसा का सजीव वर्णन है। कृष्ण की मुरली-धुन सुनने को केवल ब्रजवासी ही नहीं बल्कि देवता और मुनि भी लालायित रहते हैं। मुरली वादन करते समय कृष्ण की जो रूप-छवि है उसका भी बड़ा मार्मिक वर्णन इन पदों में हुआ है।

गोवर्द्धन धारण, सूरसागर का मार्मिक प्रसंग है। कृष्ण ने ब्रजवासियों की इन्द्र पूजा बन्द कर गोवर्द्धन की पूजा आरम्भ करवायी। इन्द्र ने कुपित होकर घनघोर वर्षा द्वारा ब्रज को डुबो देने का निश्चय किया। कृष्ण ने गोवर्द्धन धारण करके ब्रज की रक्षा की और इन्द्र के प्रयास को विफल बना दिया। इस प्रसंग में वर्षा की भयंकरता और उसके उत्पातों से त्रस्त गोपी-गोप-समुदाय के भावों तथा व्यापार का सजीव और स्वाभाविक वर्णन

किया है। गोप लोगों को कृष्ण की सहायता के लिए लकुटियों की टेक देते देखकर होठों पर मुस्कराहट आ जाती है। विनोद का अवसर पाकर सूर चूकते नहीं।)

विनय

(१)

अब के राखि लेहु गोपाल।
हौं अनाथ बैठ्यौ द्रुम-डरिया, पारधि साधे बान।
ताके डर मैं भाज्यौ चाहत, ऊपर ढुक्यौ सचान।
दुहू भांति दुख भयो आनि यह, कौन उबारै प्रान।
सुमिरत ही अहि डस्यौ पारधि, कर छुट्यौ संधान।
सूरदास सर लग्यौ सचानहिं, जय जय कृपानिधान।

(२)

मो सम कौन कुटिल खल कामी ?
तुम सो कहा छिपौ करुनामय, सब के अंतरजामी।
जो तन दियो ताहि बिसरायौ, ऐसो नमक हरामी।
भरि भरि द्रोह विषै कौ धावत जैसे सूकर ग्रामी।
सुनि सतसंग होत जिय आलस, बिसयनि संग विश्रामी।
श्री हरिचरन छांड़ि विमुखन की, निसदिन करत गुलामी।
पापी, परम अधम, अपराधी, सब पतितन में नामी।
सूरदास प्रभु अधम उधारन, सुनियै श्रीपति स्वामी।

(३)

अब मैं नाच्यौ बहुत गुपाल।
काम क्रोध को पहिरि चोलना, कंठ विषय की माल।

महामोह को नूपुर बाजत, निंदा सबद रसाल।
भरम भरयो मन भयो पखावज, चलत असंगत चाल।
तृष्ना नाद करति घट भीतर नाना विधि दै ताल।
माया को कटि फैंटा बांध्यौ, लोभ तिलक दियौ भाल।
कोटिक कला काछि दिखराई, जल, थल, सुधि नहिं काल।
सूरदास की सबै अविद्या, दूरि करौ नंदलाल।

लीला

(४)

चलत देख जसुमति सुख पावै।
ठुमुक ठुमुक पग धरती रेंगत, जननी देखि दिखावै।
देहरी लौं चलि जात, बहुरि फिरि फिरि इतहीं कों आवै।
गिरि गिरि परत, बनत नहिं लांघत, सुनि-मुनि सोच करावै।
कोटि ब्रह्माण्ड करत छिन भीतर, हरत विलंब न लावै।
ताकों लिये नंद की रानी, नाना खेल खिलावै।
तब जसुमति कर टेकि स्याम को, क्रम क्रम करि उतरावै।
सूरदास प्रभु देखि देखि, सुर-नर-मुनि बुद्धि भुलावै।

(५)

सोभित कर नवनीत लिये।
घुटरुन चलत रेणु तन मंडित, मुख दधिलेप कियें।
चारु कपोल, लोल लोचन, गोरोचन तिलक दियें।
लट लटकनि मनो मत्त मधुपगन, माधुरी मधुर पियें।
कठुला कंठ, वज्र केहरि नख, राजत रुचिर हियें।
धन्य सूर एकौ पल यहि सुख, का सत कल्प जियें।

(६)

हरि अपने आंगन कछु गावत।
तनक तनक चरनन सों नाचत, मन हीं मनहिं रिझावत।
बांह उठाइ काजरी धौरी, गैयन टेरि बुलावत।
कबहुंक बावा नंद पुकारत, कबहुंक घर में आवत।
माखन तनक आपने कर ले तनक बदन में नावत।
कबहुं चितै प्रतिबिंब खंब में, लवनी ताहि खवावत।
दुरि देखति जसुमति यह लीला, हरषि अनंद बढ़ावत।
सूर स्याम के बालचरित नित नित ही देखत भावत।

(७)

गोचारण

गोविंद चलत देखियत नीके।
मध्य गुपाल मंडली राजत, कांधैं धरि लए सींके।
बछरा वृंद घेरि आगैं करि जन जन शृंग बजाए।
जनु बन कमल सरोवर तजि कैं मधुप उनींदे आए।
वृंदावन प्रवेसि अध मारग, बालक जसुमति टेरे।
सूरदास प्रभु सुनत जसोदा चितै बदन प्रभु केरे।

(८)

मैया! हौं गाइ चरावन जैहों।
तू कहि महर नंद बाबा सों, बड़ो भयो, न डरैहों।
रैता, पैता, मना, मनसुखा, हलधर संगहि रैहों।
बंसीवट तर ग्वालन के संग खेलत अति सुख पैहों।

ओदन भोजन दे दधि कांवरि, भूख लगे ते खैहों।
सूरदास है साखि जमुन जल, सौंह देहि, जु नहैं हों।

(९)

करि लौ न्यारी, आपुनी गैयां।
नहिन वसात लाल ! कछु तुम सों, तुम से सबै ग्वाल ठकटैयां।
नांहि अधीन तुम्हारे बबा के, ना तुम हमरे नाथ गुसैंयां।
हम तुम जाति पाँति के एकै, कहा भयौ अधिकी दो गैंयां।
जा दिन ते संचरे गोपन में, ताही दिन ते करत लुंगरैंयां।
मानी हार सूर के प्रभु सों, वहुरि न करिहौ नंद दुहैयां।

(१०)

छवीले मुरली नेकु वजाउ।
वलि वलि जात सखा सब कहि कहि अधर सुधा रस प्याउ।
दुर्लभ जनम, दुर्लभ विन्दरावन, दुरलभ प्रेम तरंग।
ना जानिये बहुरि कब ह्वै हैं, स्याम तिहारो संग।
विनती करहिं सुवल श्रीदासा सुनहु स्याम दे कान।
जा रस को सनकादि सुकादिक करत अमर मुनि ध्यान।
कब पुनि गोप-वेस व्रज धरि हौ, फिरिहौ सुरभिन साथ।
कब तुम छाक छीनि के खैहौं ह्वै गोकुल के नाथ।
सुनि सुनि दीन गिरा मुरलीधर, चितए मुख मुस्काइ।
गुन गंभीर गोपाल मुरलि कर, लीन्हौ तबहिं उठाइ।
धरि कर वेनु अधर मनमोहन, कियौ मधुर ध्वनि गान।
मोहे- सकल जीव जल थल के सुनि वारे तन प्रान।

स्याम कर मुरली अतिहि विराजत ।
परसत अधर सुधारस बरसति, मधुर मधुर स्वर बाजति ।
लटकत मुकुट, भौंह छबि मटकति, नैन सैन अति राजति ।
ग्रीव नवाइ अटकि बंसी पर, कोटि मदन छवि लाजति ।
लोल कपोल झलक कुंडल की, यह उपमा कछु लागत ।
मानहु मकर सुधारस क्रीड़त, आपु आपु अनुरागत ।
वृन्दावन बिहरत नंदनंदन, ग्वाल सखा संग सोहत ।
सूरदास प्रभु की छबि निरखत, सुर-नर-मुनि सब मोहत ।

गोवर्धन-धारण

(१२)

बादर घुमड़ि घुमड़ि आये ब्रज पर,
बरखत कारे-धूमरे घटा अति ही जल ।
चपला अति चमचमात, ब्रजजन सब डरडरात,
टेरत सिसु पिता-मातु, ब्रज गलबल ।
गरजत धुनि प्रलयकाल, गोकुल भयौ अंधकार,
चकित भये ग्वाल-बाल, घहरत नभ करत च
पूजा मेटि गोपाल, इन्द्र करत इहै हाल,
सूर स्याम राखहु अब गिरिवर-बल ।

(१३)

गिरि जनि गिर स्याम के कर तें ।
करत विचार सबै ब्रजवासी, भय उपजत अति उर तें ।

ले ले लकुट ग्वाल सब धाये, करत सहाय जु तुरतें।
यह अति प्रबल, स्याम अति कोमल, रबकि रबकि हरबर तें।
सपत दिवस कर पर गिरि धार्यौ, बरसि थक्यौ अंबर तें।
सूरदास प्रभु इन्द्र गरव हरि, ब्रज राख्यौ करबर तें।

(१४)

भुजनि बहुत बल होत कन्हैया।
बार बार भुज देखि तनक से, कहत जसोदा मैया।
स्याम कहत, नहिं भुजा पिरानी, ग्वालन कियो सहैया।
लकुटनि टेकि सबै मिलि राख्यौ, अरु बाबा नंद-रैया।
मो सों क्यों रहतो गोबरधन, अतिहि बड़ो वह भारी।
सूर स्याम यह कहि परबोध्यो, देखि चकित महतारी।

अभ्यास के प्रश्न

नोट :—नीचे दिए गए प्रश्नों के संभावित उत्तरों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर का क्रमाक्षर दाहिनी ओर दिए कोष्ठक में लिखिये—

प्रश्न १. 'अब हौं नाच्यौ बहुत गोपाल' पद में सूर ने अपनी कौन सी मनोदशा का चित्रण किया है?

(क) निराशा, (ख) वैराग्य, (ग) वेदना, (घ) दैन्य (च) दुःख
( )

प्र० २. 'मो सम कौन कुटिल खल कामी?' शीर्ष पंक्ति वाले पद में 'सब पतितन में नामी' कहने से कवि का क्या अभिप्राय है?

(क) सब पतितों में मेरा भी नाम है। (ख) सबसे अधिक पापी मैं हूं। (ग) सब पापियों में नाम लेने वाला मैं ही हूं। (घ) सब पापी

मेरा ही नाम लेते हैं।, (च) सब पापियों में नाम वाला मैं ही हूं।
( )

प्र० ३. भगवान को नंदबाबा के आंगन में खेलता देख कर देवताओं और मुनियों को क्यों आश्चर्य हुआ ?

(क) यशोदा कृष्ण को कैसे खिला रही है ? (ख) कृष्ण कैसे अनजान बन कर खेल रहे हैं। (ग) करोड़ों ब्रह्माण्ड की रचना करने वाला देहली तक नहीं लांघ पा रहा है। (घ) ब्रह्माण्डों की रचना करने वाले को यशोदा खिला रही है। (च) स्वयं ईश्वर नंद के आंगन में क्रीड़ा कर रहे हैं। ( )

प्र० ४. भगवान के नाम का स्मरण करते ही अनाथ के प्राणों की रक्षा कैसे हुई ?

(क) शिकारी को सांप ने डस लिया। (ख) शिकारी को सचान ने मार दिया। (ग) शिकारी के हाथ से अचानक ही बाण छूट गया। (घ) सांप बाण लगने से मर गया। (च) साँप ने शिकारी को डसा और उसका बाण सचान को लगा। ( )

प्र० ५. 'मैया हौं गाय चरावन जैहों'। पद में किस भावना की प्रधानता है।

(क) उलाहने की। (ख) आत्म-विश्वास की। (ग) आश्वस्त करने की। (घ) बड़े हो जाने की। (च) निर्भयता की। ( )

प्र० ६. निम्न प्रश्नों का उत्तर २० शब्दों में दीजिए।

(क) सौ-कल्प जीवित रहने को कवि एक पल के किस सुख के पीछे व्यर्थ समझ रहा है ? (ख) स्वयं को श्रेष्ठतम पापी सिद्ध करने के लिए कवि के तर्क क्या हैं ? (ग) ग्वाल-बाल कृष्ण से अपनी गायें अलग करने को क्यों कह रहे हैं ? (घ) बांसुरी बजाते समय कृष्ण की छवि कैसी प्रतीत हो रही है ? (च) कवि अपनी रक्षा करने का आग्रह कृष्ण से क्यों कर रहा है ?

प्र० ७. संकलित पदों में से ऐसी पक्तियां छांटिये जिन में निम्न भाव व्यक्त हुए हैं।

(क) कवि ने स्वयं को अनाथ कह कर रक्षा की प्रार्थना की है। (ख) सत्संग की बात सुन कर मन उदासीन रहता है। (ग) कवि अपने अज्ञान को दूर करने की प्रार्थना कर रहा है। (घ) कृष्ण अपनी छाया को मक्खन खिला रहे हैं। (च) ग्वाल-बाल कृष्ण से वेणु-वादन का आग्रह कर रहे हैं। (छ) ब्रज पर प्रलयंकर मेघ घिर आये हैं। (ज) कृष्ण पर्वत उठाने में ग्वालों के सहयोग की बात कह रहे हैं।

प्र० ८. निम्न पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिये। उत्तर सीमा ४० शब्द।

(क) हौं अनाथ बैठ्यो द्रुम-डारनि, पारधि साधे बान। (ख) तृस्ना नाद करत घट भीतर········· तिलक दिये भाल। (ग) लट-लटकनि मनौ मत्त मधुपगन, माधुरी मधु पिये। (घ) दुरलभ जनम ············प्रेम तरंग। (च) यह अति प्रबल स्याम अति कोमल, रवकि रवकि हरवर तें।

प्र० ९. निम्न पंक्तियों में अलंकार बताइये—

(क) भरि भरि द्रोह विषै को धावत जैसे सूकर ग्रामी (रूपक, उदाहरण, उपमा, यमक) (ख) काम-क्रोध को पहिरि चोलना, कंठ विषै की माल (अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा) (ग) माया को कटि फैंटा बांध्यौ, लोभ तिलक दियौ भाल (श्लेष, यमक, रूपक, उपमा) (घ) लट-लटकनि मनो··········· मधुर पिये (उत्प्रेक्षा, यमक रूपक, उपमा) (च) जनु वन कमल सरोवर तजि कैं, मधुप उनींदे आये (उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, उदाहरण)।

प्र० १०. निम्न शब्दों के शुद्ध रूप लिखिये—
अंतरजामी, विषै, तृस्ना, छिन, सृंग, प्रवेसि, गुसैंया, दुरलभ, ब्रिंदरावन, परबोध्यो।

प्र० ११. निम्न शब्दों के प्रचलित हिन्दी रूप बताइये—
डरिया, डस्यौ, छांडि, होत, मो, सो, भयो, लौ, तोको, चितैं, हौं, तर।

प्र० १२. निम्न शब्दों में से प्रत्येक के ३ पर्याय बताइए—
सर, द्रुम, गोपाल, कमल, श्रीपति, लोचन, गैयन, सरोवर।

प्र० १३. निम्न बिंदुओं के आधार पर सूरदास के बाललीला-वर्णन पर १५० शब्दों में प्रकाश डालिये—
(क) बाल-रूप। (ख) बालक्रीड़ा। (ग) अलंकार संयोजन।

प्र० १४. गोवर्धन-धारण का जो वर्णन सूर ने किया है उसे अपनी भाषा में १०० शब्दों में लिखिये।

---

३. गोस्वामी तुलसीदास

जन्म : सन् १५३२ ई०
मृत्यु : सन् १६२३ ई०

जीवन परिचय

गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि माने गये हैं। विश्व के श्रेष्ठ कवियों में उनकी गिनती की जाती है। तुलसी के माता-पिता का निधन, संभवतः बचपन में ही हो गया था। नरहरिदास नामक महात्मा ने उनका पालन-पोषण किया और उन्हें राम-कथा से परिचित कराया। उनकी पत्नी का नाम रत्नावली कहा गया है। कहा जाता है कि अपनी स्त्री के प्रति उनकी बहुत आसक्ति थी और उसी की फटकार से उनका सांसारिक प्रेम राम-भक्ति में परिवर्तित हो गया। गृहस्थाश्रम त्याग कर वे साधु बन गए और उन्होंने दूर-दूर तक भ्रमण किया। उनका अध्ययन विस्तृत और गहन

था। जीवन के अन्तिम दिनों में वे काशी में थे जहाँ उनका देहावसान हुआ।

रचनाएँ

तुलसी की रचनाओं की संख्या बहुत बड़ी बताई जाती है, पर विद्वानों ने निम्नांकित १४ ग्रंथों को ही उनकी प्रामाणिक रचना माना है—

१. रामलला नहछू २. बरवै रामायण ३. वैराग्य संदीपनी ४. पार्वती मंगल ५. जानकी मंगल ६. रामाज्ञा प्रश्न ७. दोहावली ८. तुलसी-सतसई ९. कवितावली १०. हनुमान-बाहुक ११. गीतावली १२. कृष्ण गीतावली १३. विनय पत्रिका १४. रामचरितमानस।

इनमें 'रामचरितमानस,' तुलसी का सबसे प्रसिद्ध एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। यह महाकाव्य अवधी भाषा में और मुख्यत: दोहा-चौपाई छंदों में लिखा गया है। भारत के करोड़ों घरों में यह महाकाव्य धर्म ग्रंथ के रूप में पूजा और पढ़ा जाता है। यह ज्ञान, भक्ति, नीति, कर्मयोग आदि सभी का अमूल्य भंडार है।

काव्यगत विशेषतायें

तुलसीदास भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि कवि हैं। उत्तर भारत की जनता पर उनका भारी प्रभाव है। वे समन्वयवादी थे। समाज, धर्म साहित्य, भाषा, सभी क्षेत्र में उन्होंने विरोधी तत्त्वों के बीच समन्वय करने का प्रयत्न किया। राम के अनन्य भक्त होते हुए भी उन्होंने शिव, शक्ति, गणेश, सरस्वती, हनुमान, भैरव आदि सबकी स्तुति की। उन्होंने ज्ञान और भक्ति का समन्वय किया।

तुलसी श्रेष्ठ भक्त होने के साथ-साथ उच्चकोटि के कवि भी थे। उन्होंने प्रबन्ध काव्य, खंड काव्य, गीतिकाव्य, मुक्तक काव्य, सभी प्रकार की रचना की है। उनके काव्य का कला पक्ष और भावपक्ष, दोनों ही उच्चकोटि के हैं। वे आदर्शवादी थे और काव्य के माध्यम से भविष्य के समाज के आदर्शों की रचना कर रहे थे। मानव प्रकृति का ज्ञान, तुलसी से अधिक उस युग के किसी कवि को नहीं था।

तुलसी का ब्रज एवं अवधी, दोनों भाषाओं पर समान अधिकार था। दोनों में उन्होंने समान सफलता के साथ रचना की है। रामचरितमानस, बरवै रामायण आदि की भाषा अवधी है और कवितावली, गीतावली तथा विनयपत्रिका की ब्रजभाषा। भाषा की सरसता और गम्भीरता, विषय के अनुकूल है। उन्होंने संस्कृत के तत्सम शब्दों के अतिरिक्त अरबी, फारसी एवं बुन्देलखंडी आदि के शब्दों का भी प्रयोग किया है। उन्होंने वीर-गाथा काल की छप्पय पद्धति, विद्यापति एवं सूर की गीत पद्धति, भाटों आदि की कवित्त सवैया पद्धति, कबीर आदि की दोहा पद्धति और सूफियों की दोहा-चौपाई पद्धति आदि सभी का प्रयोग किया। उनके काव्य में अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है।

'तुलसी कवि थे, भक्त थे, पंडित-सुधारक थे लोक नायक थे, और भविष्य के सृष्टा थे। इन रूपों में उनका कोई भी रूप किसी से घट कर नहीं था।'

उन्हें प्राप्त कर हिन्दी गौरवान्वित हुई है।

धनुष-यज्ञ-प्रसंग

(प्रस्तुत पद्यांश तुलसीदास रचित 'रामचरितमानस' में से उद्धृत किया गया है। इसमें श्री राम द्वारा धनुष तोड़ने और सीता से विवाह के प्रसंग को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। सीता के मन की उत्सुकता और आनंद का कवि ने बड़ा मनोहारी वर्णन इस काव्यांश में किया है। सीता की शोभा एवं जयमाल प्रसंग का काव्यमय वर्णन कवि तुलसी ने इस पद्यांश में किया है। भाषा सरल और भाव मार्मिक बन पड़े हैं।)

विस्वामित्र समय सुभ जानी।
बोले अति सनेहमय बानी॥

उठहु राम भंजहु भव चापा।
मेटहु तात जनक परितापा॥

सुनि गुरु वचन चरन सिरु नावा।
हरषु विषादु न कछु उर आवा॥

ठाढ़े भए उठि सहज सुभाएँ ।
ठवनि जुवा मृगराजु लजाएँ ॥

दोहा :—उदित उदयगिरि मंच पर रघुवर बालपतंग ।
बिकसे संत-सरोज सब हरषे लोचन भृंग ।

नृपन्ह केरि आसानिसि नासी ।
वचन नखत अवली न प्रकासी ॥

मानी महिप कुमुद सकुचाने ।
कपटी भूप उलूक लुकाने ॥

भए विसोक कोक मुनि देवा ।
वरिसहिं सुमन जनावहिं सेवा ॥

गुर पद बंदि सहित अनुरागा ।
राम मुनिन्ह सन आयसु मांगा ॥

देखी विपुल विकल वैदेही ।
निमिष बिहात कलप सम तेही ॥

तृषित वारि बिनु जो तनु त्यागा ।
मुएं करइ का सुधा तड़ागा ॥

का बरषा जब कृषी सुखानें ।
समय चुकें पुनि का पछितानें ॥

अस जियँ जानि जानकी देखी ।
प्रभु पुलके लखि प्रीति बिसेषी ॥

गुरहि प्रनामु मनहि मन कीन्हा ।
अति लाघवँ उठाइ धनु लीन्हा ॥

दमकेउ दामिनि जिमि जब लयऊ ।
पुनि नभ धनु मंडल सम भयऊ ॥

लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़ें।
काहू न लखा देख सबु ठाढ़ ॥
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा।
भरे भुवन धुनि घोर कठोरा ॥

छंद : — भरे भुवन घोर कठोर रव रवि बाजि तजि मारगु चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कुरूम कलमले।
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हें सकल बिकल विचारही।
कोदंड खंडेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीं ॥

सोरठा :— संकर चापु जहाजु, सागरु रघुवर बाहुबलु।
बूड़े सो सकल समाजु, चढ़ा जो प्रथमहिं मोह बस ॥

प्रभु दोउ चाप खंड महि डारे।
देखि लोग सब भए\ सुखारे ॥
कौसिकरूप पयोनिधि पावन।
प्रेम बारि अवगाहु सुहावन ॥
सखिन्ह सहित हरषी अतिरानी।
सूखत धान परा जनु पानी ॥
श्रीहत भए भूप धनु टूटे।
जैसे दिवस दीप छवि छूटे ॥
सीय सुखहि बरनिअ केहि भांती।
जनु चातकी पाइ जलु स्वाती ॥

दोहा : —संग सखीं सुंदर चतुर गावहि मंगलचार।
गवनी बाल मराल गति सुषमा अंग अपार ॥

सखिन्ह मध्य सिय सोहति कैसें।
छवि गन मध्य महाछवि जैसें ॥

कर सरोज जयमाल सुहाई।
बिस्व विजय सोभा जेहिं छाई॥
तन सकोचु मन परम उछाहू।
गूढ़ प्रेंमु लखि परइ न काहू॥
जाइ समीप राम छबि देखी।
रहि जनु कुअँरि चित्र अवरेखी॥
चतुर सखीं लखि कहा बुझाई।
पहिरावहु जयमाल सुहाई॥
सुनत जुगल करमाल उठाई।
प्रेम बिबस पहिराइ न जाई॥
सोहत जनु जुग जलज सनाला।
ससिहि सभीत देत जयमाला॥
गावँहि छवि अवलोकि सहेली।
सिय जयमाल राम उर मेली॥

सोरठा :—रघुवर उर जयमाल देखि देव वरिसहिं सुमन।
सकुचे सकल भुआल जनु विलोकि रवि कुमुदगन॥
(रामचरितमानस से)

कवितावली

का वर्णन सूर की ही भांति श्रेष्ठ कहा जा सकता है। ग्रामवधू प्रसंग व सीता की लज्जा संबंधी छंदों में बड़ी कोमल एवं मार्मिक अनुभूतियों का चित्रण हुआ है।)

बाल्य-रूप

१

वरदंत की पंगति कुंदकली, अधराधर पल्लव खोलन की।
चपला चमकै घन बीच जगै छवि मोतिन-माल अमोलन की।
घुँघुरारि लटै लटकैं मुख ऊपर, कुंडल लोल कपोलन की।
नेवछावर प्रान करै तुलसी, बलि जाऊँ लला इन बोलन की।

२

ग्रामबधू प्रसंग

वनिता बनी स्यामल गौर के बीच,
विलोकहु री सखि! मोहि सो व्है।
मगजोग न कोमल, क्यों चलिहै,
सकुचाति मही पदपंकज छ्वै।
तुलसी सुनि ग्रामवधू विथकीं,
पुलकी तन, औ चले लोचन च्वै।
सब भाँति मनोहर मोहन रूप,
अनूप हैं भूप के बालक द्वै।

३

रानी मैं जानी अजानी महा, पवि पाहन हूँ तै कठोर हियो है।
राजहु काज अकाज न जान्यौ, कहो तिय को जिन कान कियो है॥

ऐसी मनोहर मूरत ये, बिछुरे कैसे प्रीतम लोग जियो है।
आँखिन में सखि राखिबै जोग, इन्हें किमि कैं वनवास दियो है ।।

४

सीस जटा उर बाहु विशाल, विलोचन लाल, तिरछी सी भौंहें।
तून सरासन बान धरे, तुलसी वन मारग में सोहैं ।।
सादर वारहिंबार सुभाव चितै तुम त्यौं हमरो मन मोहैं।
पूछति ग्रामवधू सिय सौं, कहो सांवरे से सखि रावरे कोहै ? ।।

सीता की लज्जा

५

सुनि सुंदर बैन सुधारस साने, सयानी है जानकी जानि भली।
तिरछे करि नैन दे सैंन तिन्हैं, समुझाइ कछू मुसुकाइ चली ।।
तुलसी तेहि औसर सोहैं सबै, अवलोकत लोचन लाहु अली।
अनुराग तड़ाग में भानु उदै, विगसी मनो मंजुल कंज कली ।।

गीतावली

(गीतावली तुलसीदास की एक प्रमुख रचना है। इसमें गीतों में राम-कथा कही गई है। इसकी भाषा व्रज है। संकलित छंदों में राम के वन जाने के वाद माता कौशल्या की वेदना का मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है। राम के विरह में माता कौशल्या धैर्य खो देती है और सूर की यशोदा की ही भांति पुत्र वियोग में उन्माद-ग्रस्त सी प्रतीत होती है। मातृ-हृदय की अनुभूतियों का सुन्दर चित्रण इन पदों में हुआ है।

१

जननी निरखत बान-धनुहियाँ।
बार बार उर नैननि लावत, प्रभुजू की ललित पनहियाँ।
कबहुँ प्रथम ज्यों जाइ जगावति, कहि प्रिय बचन सवारे।

उठहु तात बलि मातु वदन पर, अनुज सखा सब द्वारे।
कबहुँ कहत यों, बड़ी बार भई, जाउ भूप पंह मैया।
बन्धु बोलि जेंइय जो भावे, गई निछावर मैया।
कबहुँ समुझि वन-गमन राम को रहि चकि चित्र लिखीसी।
तुलसीदास, वह समय कहे तें, लागत प्रीति सिखी सी।

२

राघौ एक बार फिर आवौ।

ए वर वाजि विलोकि आपने, बहुरी वनहिं सिधावौ।
जे पय प्याइ पोखि, कर-पंकज बार-बार चुचकारे।
क्यों जीवहिं मेरे राम लाड़ले ! तें अब निपट बिसारे।
भरत सौगुनी सार करत हैं, अति प्रिय जान तिहारे।
तदपि दिन-हिं-दिन होत झाँवरे, मनहुं कमल हिम-मारे।
सुनहुं पथिक ! जो राम मिलहिं वन, कहियौ मातु संदेसो।
तुलसी मोहिं और सबहिन तें, इन्ह को बड़ो अन्देसो।

विनय-पत्रिका

(विनय-पत्रिका तुलसीदास के गीतों-स्तोत्रों का संग्रह है। इनमें गणेश, शिव, पार्वती, गंगा, यमुना, काशी, चित्रकूट, हनुमान, सीता, विष्णु आदि के गुणगान के साथ राम की स्तुति की गई है। इन गीतों की रचना ब्रजभाषा में हुई है।

संकलित छन्दों में राम की उदारता की चर्चा करते हुए कृपानिधि रा से स्वयं का उद्धार करने की प्रार्थना की गई है। जटायु, शवरी औ विभीषण के साथ किए राम के उदारतापूर्ण व्यवहार का स्मरण दिलाते हु कवि ने स्वयं के साथ भी इसी उदारता का व्यवहार करने की याचना क

है। दूसरे पद में कवि ने राम के पतित-पावन रूप का स्मरण दिलाते हुए अपनी दीनता का वर्णन किया है। आन्तरिक शुद्धि पर बल देते हुए उसे मुक्ति के लिए आवश्यक बताया गया है। अनेक उदाहरणों द्वारा कवि ने 'मोह-फांस' से मुक्त होने के लिए प्रभु और गुरु कृपा को अनिवार्य माना है। राम और सीता से प्रेम न करने वालों को कवि ने हर स्थिति में त्याग देने को कहा है।

तुलसी की दैन्य-भक्ति और समर्पण की भावना का अच्छा चित्रण इन पदों में हुआ है।

१

ऐसो को उदार जग माहीं ?
बिन सेवा जो द्रवै दीन पर, राम सरिस कोउ नाहीं।
जो गति जोग बिराग जतन करि, नहिं पावत मुनि ज्ञानी।
सो गति दई गीध-सबरी कहं, प्रभु न बहुत जिय जानी।
जो संपति दससीस अरपि करि, रावन सिव पंह लीनी।
सो संपदा बिभीषन कह अति, सकुचि सहित हरि दीनी।
तुलसीदास, सब भाँति सकल सुख जो चाहत मन मेरो।
तो भजु राम, काम सब पूरन करै कृपानिधि तेरो।

२

जाऊँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे !
काको नाम पतित-पावन जग, केहि अति दीन पियारे।
कौने देव बराय बिरद हित, हठि हठि अधम उधारे।
खग, मृग, व्याध, पखान, बिटप, जड़, जवन, कवन सुर तारे।
देव दनुज मुनि नाग मनुज सब, माया बिवस बिचारे।
तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु, कहा अपनपौ हारे।

माधव ! मोह फांस क्यों टूटैं ?
बाहिर कोटि उपाय करिय, अभ्यन्तर ग्रन्थि न छूटैं।
घृत-पूरन कराह अंतरगत ससि प्रतिबिंब दिखावै।
ईंधन अनल लगाय कल्प सत औटत नास न पावै।
अंतर मलिन, विषय मन अति, तन पावन करिय पखारे।
मरइ न उरग अनेक जतन बलमीकि विविध विधि मारे।
तुलसिदास हरि-गुरु-करुना बिनु विमल विवेक न होई।
बिनु विवेक संसार-घोर निधि, पार न पावै कोई।

४

जाके प्रिय न राम वैदेही।
तजिए ताहि कोटि वैरी सम, जद्यपि परम सनेही।
तज्यो पिता प्रह्लाद, विभीषन बंधु, भरत महतारी।
बलि गुरु तज्यौ कंत ब्रज बनितन्हि, भए मुद मंगलकारी।
नाते नेह राम के मनियत, सुहृद सुसेव्य जहाँ लौं।
अंजन कहा आँखि जेहि फूटै, बहुतक कहौं कहाँ लौं।
तुलसी सो सब भांति परम हित, पूज्य प्रान ते प्यारो।
जासौं होय सनेह राम-पद, ऐतो मतो हमारो।

अभ्यास के प्रश्न

नोट :—निम्न प्रश्नों के उत्तर के रूप में पांच-पांच विकल्प दिए गए हैं। ज
सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर हो उसका क्रमाक्षर दांयी ओर अंकित कोष्ठक
में लिखिए :—

प्र० १. 'उठहु राम भंजहु भव-चापा'। यह कथन विश्वामित्र ने कहा थ

क्योंकि—

(क) वे राम का विवाह करवाना चाहते थे। (ख) वे राम की वीरता का प्रदर्शन करना चाहते थे। (ग) वे राम की शक्ति पर विश्वास करते थे। (घ) वे अन्य राजाओं के गर्व को तोड़ना चाहते थे। (च) वे जनक की प्रतिज्ञा पूरी करवाना चाहते थे। ( )

प्र० २. तुलसीदास ने किन व्यक्तियों का त्याग करने के लिए कहा है ?

(क) जिन्हें राम और सीता प्रिय नहीं हैं। (ख) जो ईश्वर में विश्वास नहीं करते। (ग) जिनमें विनम्रता नहीं है। (घ) जो धन को ही सर्वोपरि मानते हैं। (च) जो सांसारिकता में लिप्त रहते हैं। ( )

प्र० ३. 'आंखन में सखि राखिबै जोग, इन्हें किमि के बनवास दियो है।' प्रस्तुत पंक्ति का मुख्य भाव क्या है ?

(क) राजा दशरथ के अन्याय की ओर संकेत करना। (ख) राम की छवि का महत्त्व बतलाना। (ग) ग्रामवधुओं की राम, लक्ष्मण, सीता के प्रति आसक्ति। (घ) ग्रामवधुओं के आश्चर्य का प्रदर्शन। (च) कैकेयी के कठोर हृदय की ओर संकेत। ( )

प्र० ४. तुलसीदास जी के अनुसार भगवान रूपी गुरु की कृपा के अभाव में क्या प्राप्त नहीं हो सकता है ?

(क) विषयों पर विजय। (ख) मन की मलिनता की निवृत्ति। (ग) कर्तव्याकर्तव्य भेद-बुद्धि। (घ) भगवान की भक्ति। (च) माया से छुटकारा। ( )

प्र० ५. निम्नांकित प्रश्नों का उत्तर ३० शब्दों में दीजिए :—

(क) धनुष के टूटते ही तीनों लोकों में क्या प्रतिक्रिया हुई ? (ख) "नेवछावर प्राण करें तुलसी", राम के किस रूप के लिए कहा गया है ? (ग) ग्रामवधुएँ, राम के संबंध में सीता से क्या जानना चाहती हैं ? (घ) राम के वियोग में माता कौशल्या के क्या उद्‌गार हैं ? (च)

राम की उदारता किन शब्दों में प्रकट की गई है ?

प्र० ६. गीतावली के पदों में से ऐसी पंक्तियाँ छाँटिए, जिनमें निम्न भाव स्थितियाँ व्यंजित हुई हैं।

(क) प्रभु की जूतियाँ हृदय-नेत्रों से लगाना। (ख) राम से उठने का आग्रह करना। (ग) किंकर्त्तव्यविमूढ़-सी रह जाना। (घ) हाथी-घोड़ो की देखभाल के लिये आने का आह्वान करना। (च) पथिक से अपना संदेसा कहना।

प्र० ७. निम्न पंक्तियों का आशय २० शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

(क) सोहत जुग-जुग जलज सनाला, ससिही समित देत जयमाला।
(ख) सकुचे सकल भुआल, जनु बिलोकि रवि कुमुदगन।
(ग) अनुराग-तड़ाग में भानु उदै, विगसीं मनो मंजुल कंज कली। (घ) तुलसिदास, वह समय कहे तें, लागत प्रीत सिखी-सी। (च) अंजन कहा आँखि जेहि फूटे।

प्र० ८. निम्न पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइये :—

(क) उदित उदय गिरि मंच पर रघुवर बाल पतंग। (रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, यमक)

(ख) माधव, मोह फाँस क्यों टूटै ? (श्लेष, उत्प्रेक्षा, रूपक, उपमा)

(ग) अनुराग-तड़ाग में भानु उदै। (अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक)

(घ) मनहुँ कमल हिम मारे। (उत्प्रेक्षा, यमक, उपमा, रूपक)

(च) घृत पूरन कराह अंतर्गत, ससि प्रतिबिंब दिखावै।
ईंधन अनल लगाय कलप-सत औटत नास न पावै। (उदाहरण, रूपक, दृष्टान्त, उत्प्रेक्षा)

प्र० ९. राम के द्वारा धनुष तोड़ने पर विश्वामित्र की प्रसन्नता को उन्हीं के शब्दों में व्यक्त कीजिए। उत्तर सीमा ५० शब्द।

○ १०. तुलसीदास जी के बाल-वर्णन की सूरदास जी के बाल-वर्णन से तुलना निम्न बिन्दुओं के आधार पर कीजिए :

भाव, भाषा, शब्द लालित्य एवं काव्य सौंदर्य। (उत्तर सीमा २०० शब्द)

○ ११. 'विनय के पद्य तुलसीदास जी की दास भाव की भक्ति का सफल विवेचन करते हैं,' प्रस्तुत कथन की सार्थकता अथवा निरर्थकता के विषय में अपने विचार लगभग १०० शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।

○ १२. निम्न बिन्दुओं के आधार पर तुलसी के काव्य की विशेषताएं १५० शब्दों में बताइये।

(क) विषय-वस्तु। (ख) भाषा। (ग) शैली। (घ) छन्द योजना। (च) भाव-पक्ष।

---

४. मीरां बाई

जन्म : अनुमानतः सन् १४९८ ई०
मृत्यु : सन् १५८३ ई०

जीवन परिचय

मीरां हिन्दी, राजस्थानी और गुजराती की सर्वश्रेष्ठ कवियत्री हैं। उनके काव्य का मुख्य गुण भाव और भाषा की सरलता है। मीरां जोधपुर के संस्थापक राव जोधा के पौत्र रतनसिंह की पुत्री और प्रसिद्ध वीर जयमल की चचेरी बहिन थी। उनका विवाह मेवाड़ के महाराणा सांगा के बड़े पुत्र भोजराज के साथ हुआ जिनका देहान्त भी शीघ्र ही हो गया। विधवा होने के बाद मीरां ने अपना सारा जीवन कृष्ण-भक्ति में लगा दिया। उनका

अधिक समय ईश्वर भजन और साधु-सन्तों की संगति में बीतने लगा। राजघराने की एक रानी का साधु-संतों से मिलना-जुलना और कीर्तन करना राजपरिवार वालों को अच्छा नही लगा। उन्होंने मीरां को अनेक कष्ट देना प्रारम्भ कर दिया। अन्त में वे मेवाड़ छोड़कर वृन्दावन आदि स्थानों की तीर्थ यात्रा करती हुई द्वारिका पहुँची और भगवान रणछोड़ की आराधना में लीन हो गई। वहीं उनका देहान्त हुआ।

रचनाएँ

मीरां बाई की रचनाएँ इस प्रकार बताई जाती हैं—नरसीजी रा मायरो, गीत गोविंद की टीका, राग गोविंद, राग सोरठ के पद आदि। इनमें से कोई भी पुस्तक प्रामाणिक रूप से उपलब्ध नहीं है। वास्तव में इस समय उनके फुटकर पद ही मिलते हैं। मीरां के पदों की भाषा ब्रजभाषा मिश्रित राजस्थानी है।

काव्यगत विशेषताएँ

मीरां प्रथम कोटि की भक्त कवि हैं। उनकी भक्ति, कान्ता भाव या माधुर्य भाव की है। उन्होंने भगवान को पति मानकर भक्ति की है। उनके पदों में विरह-वेदना और व्याकुलता का मार्मिक चित्रण हुआ है। उनकी कविता में प्रेम की गम्भीरता के दर्शन होते हैं। उनमें विरह की वेदना भी है और मिलन का उल्लास भी। उनकी कविता का प्रधान गुण सादगी और सरलता है। मीरां की भाषा सरल है, उसके भाव सरल हैं। उनकी भाषा में सरलता, सुबोधता और सरसता का गुण है। अलंकारों का आडंबर उसमें नहीं है। मीरां के पदों में अनेक राग-रागनियों का प्रयोग हुआ है। उनके पदों में काव्य, संगीत और नृत्य, तीनों कलाओं का समन्वय हुआ है।

मीरां की कविता में प्रेम की गंभीर अभिव्यंजना है। भाव की ऐसी तल्लीनता अन्यत्र दुर्लभ है। उनका विरह-निवेदन अत्यन्त करुणापूर्ण और मर्मस्पर्शी है। सादगी उनकी कविता की मुख्य विशेषता है। कला का अभाव ही उसकी सबसे बड़ी कला है। उसकी भाषा सरल है, भाव सरल हैं, फिर भी वह अत्यन्त सरल और हृदयहारी है। भावावेश, संगीतात्मकता, और

प्रसाद-माधुर्य गुण सम्पन्न भाषा, गीतिकाव्य के ये प्रमुख तत्व मीरां के काव्य में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं ।

पदावली

(मीरां के इन पदों में अपने आराध्य कृष्ण के प्रति तीव्र अनुराग प्रकट हुआ है । वे कृष्ण को अपना पति मानती हैं और उसके अतिरिक्त अन्य कोई भी उन्हें अच्छा नहीं लगता । उसके दर्शन बिना उनके नेत्र दुखने लगते हैं और पल भर भी चैन नहीं मिलता । उस प्रिय के चरणों का स्पर्श निरन्तर करते रहने के लिए वे बार-बार आग्रह करती हैं। सारे संसार का विरोध होने पर भी वह गोविन्द के प्रति अपनत्व प्रकट करती है । कृष्ण का मोहक रूप वे सदा-सदा के लिए अपने नेत्रों में बसा लेना चाहती हैं । द्रौपदी, प्रह्लाद, गज आदि भक्तों के उद्धार का स्मरण कराते हुए वे अपने भी उद्धार की प्रार्थना करती हैं । उनका मन निरंतर उस प्रभु के आगमन की प्रतीक्षा करता रहता है ।

मीरां के संकलित पदों में भक्त के विनय और प्रेमी के मन के उल्लास और आनन्द की अभिव्यक्ति हुई है । भाव और भाषा दोनों ही सरल हैं ।

पदावली

१

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई ।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई ।।
छाँड़ि दयी कुल की कानि, कहा करिहै कोई ।
संतन ढिग वैठि वैठि, लोक-लाज खोई ।।
अंसुवन जल सींचि सींचि, प्रेम-वेलि वोई ।
अव तो वेलि फैल गयी, आणंद फल होई ।।
भगत देखि राजी हुई, जगत देखि रोई ।
दासि मीरां लाल गिरधर, तारो अव मोही ।।

२

दरस बिन दूखन लागे नैन

जब के तुम बिछुरे प्रभु मोरे कबहूँ न पायो चैन।
विरह कथा का सों कहूं सजनी वह गई करवत ऐन।
कल न परत पल, हरि मग जोवत, भयी छ मासी रैन।
मीरां के प्रभु कब रे मिलोगे, दुख-मेटण सुख दैन।

३

माई म्हैं तो लियो गोविन्दा मोल।

कोई कहै सस्तो, कोई कहै मंहगो, लियो तराजू तोल।
कोई कहै छानै, कोई कहै चौड़े, लियो बंजता ढोल।
कोई कहै कारो, कोई कहै गोरो, लियो है आँखें खोल।
सुर नर मुनि जाको पार न पावै, सब लिया प्रेम-पटोल।
जहर पियाला राणा जी भेज्यां पिया म्हैं अमृत घोल।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर आवत प्रेम के मोल।

४

बसो मेरे नैनन में नंदलाल।

मोर मुकुट मकराकृत कुंडल, अरुण तिलक सोहे भाल।
मोहनी मूरत सांवरी सूरत, नैना बने बिसाल।
अधर सुधारस मुरली राजत, उर बैजंती माल।
मीरां प्रभु संतन सुखदाई, भगत-बछल गोपाल।

५

राणाजी म्हैं तो गोविन्द का गुण गास्यां।

चरणामृत को नेम हमारो, नित उठि दरसन जास्यां।
हरि मंदिर में निरत करास्यां, घूंघरिया घमकास्यां।

स्याम नाम का जहाज चलास्यां, भवसागर तर जास्यां।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, निरख परख गुण गास्यां।

६

कोई कहियो रे मोहन आवन की।
आवन की मन भावन की।
ए दोउ नैन कह्यो नहिं मानै, नदियां बहै जैसे सावन की।
आप न आवै, लिखि नहिं भेजे, बान परी ललचावन की।
कहा करूं कुछ बस नहिं मेरो, पांख नहिं उड़ जावन की।
मीरां के प्रभु! कब रे मिलोगे, चेरी भयी तेरे दावन की।

७

पग बांध घुंघरयां नाच्यां री।
लोग कह्यो मीरां भई बावरी, सासु कहै कुलनासी री।
विष का प्याला राणा भेज्यां, पीवत मीरां हांसी री।
तन मन वारां हरि चरणां मां, दरसन अमरित पास्यां री।
मीरां के प्रभु गिरिधर नागर, थारी शरणां आस्यां री।

८

भजु मन चरण कंवल अविनासी।
जेताई दीसै धरण-गगन विच, तेताई सब उठ जासी।
कहा भयो तीरथ व्रत कीन्हें, कहा लिये करवत कासी।
इस देही का गरव न करणा, माटी में मिल जासी।
यो संसार चहर की बाजी, सांझ पड़यां उठ जासी।
कहा भयो है भगवा पहरयां, घर तज भये सन्यासी
जोगी होय जुगत नहिं जाणी, उलट जनम फिर आसी

अरज करुं अवला कर जोरें, स्याम तुम्हारी दासी।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, काटो जम की फांसी।

६

आली री म्हारे नैना वान पड़ी।
चित्त चढ़ी म्हारे माधुरी मूरत, हियड़ां अनी गड़ी।
कव री ठाढ़ी पंथ निहारूं अपने भवन खड़ी।
अटक्यां प्राण सांवरो प्यारो, जीवन मूर जड़ी।
मीरां गिरिधर हाथ विकानी, लोग कह्यां बिगड़ी।

अभ्यास के प्रश्न

नोट :—नीचे कुछ प्रश्न और उनके संभावित उत्तर के पांच विकल्प दिए जा रहे हैं। सही उत्तर का क्रमाक्षर दाहिनी ओर कोष्ठक में लिखिए—

प्र० १. 'कोई कहियो रे मोहन आवन की'—मीरां कृष्ण के आगमन का समाचार सुनने के लिए इतनी उत्सुक क्यों हैं ?

(क) वे शीघ्र लौट कर आने का वचन दे गए हैं। (ख) मीरां कृष्ण दर्शन के लिए व्याकुल हैं। (ग) मीरां उन्हें स्व-रक्षा के लिए बुला रही हैं। (घ) मीरां का उनके पास जाना संभव नहीं है। (च) मीरां राणा के अत्याचारों से भयभीत हैं। ( )

प्र० २. मीरा की भक्ति किस भाव की है ?

(क) सख्य भाव। (ख) दास्य भाव। (ग) कांता भाव। (घ) मातृ-भाव। (च) सखी भाव

प्र० ३. 'वसो मेरे नैनन में नंदलाल' शीर्षक पद में मीरां ने कृष्ण के कौन से रूप की चर्चा की है ?

(क) भक्त-वत्सल । (ख) दीन-प्रतिपालक । (ग) नंद-नंदन । (घ) द्वारकानाथ । (च) प्रतिपालक । ( )

प्र० ४. 'अंसुवन जल सींचि सींचि प्रेम-बेलि बोई' । इस पंक्ति में मीरां क्या भाव प्रकट कर रही हैं ?

(क) प्रेम-बेल आँसुओं से सींची जाती है । (ख) विरह से ही प्रेम पनपता है । (ग) प्रेम उत्पन्न करने के लिए कष्ट सहने पड़ते हैं । (घ) प्रेम के लिए हृदय भावुक होना चाहिए । (च) बिना आँसू बहाये प्रेम नहीं हो सकता । ( )

प्र० ५. 'दरस बिण दूखण लागे नैन'—इस पद में मीरां किस भाव को प्रकट कर रही हैं ?

(क) प्रभु-भक्ति । (ख) अपनी विवशता । (ग) अपनी वास्तविक स्थिति । (घ) विरह व्यथा । (च) नेत्रों की व्याकुलता । ( )

प्र० ६. हरि-चरणों में सर्वस्व अर्पित कर देने के बाद मीरा को क्या मिलने की आशा है ?

(क) भगवान की कृपा (ख) भगवान के दर्शन (ग) भगवान की भक्ति । (घ) भगवान की शरण (च) जन्म-मरण से मुक्ति ( )

प्र० ७. नीचे दी गई किस पंक्ति से मीरां की निर्भीकता का पता चलता है ।

(क) जाके सिर मोर-मुकुट मेरो पति सोई । (ख) कल न परत पल, हरि मग जोवत ·····। (ग) कोई कहै छानै ·····बजंता ढोल । (घ) पग बाँध घुंघर्‌या नाचाँ री । (च) राणा जी मैं तो गोविन्द का गुण गास्याँ । ( )

प्र० ८. मीरा के पदों में किस भाषा का प्रयोग किया गया है ?

(क) राजस्थानी-गुजराती का मिलाजुला रूप । (ख) राजस्थानी-अवधि

का मिश्रित रूप। (ग) राजस्थानी-व्रजभापा का मिश्रित रूप। (घ) शुद्ध राजस्थानी। (च) शुद्ध व्रजभापा। (   )

प्र० ९. निम्न पंक्तियों का आशय २५ शब्दों में समझाइये।
(क) 'जहर पियाला राणा जी भेज्याँ, पीवत मीरां हांसी री।
(ख) 'अंसुवन जल सींचि सींचि प्रेम वेलि वोई।
(ग) 'कहा करूं कछु वस नहीं मेरो, पाँख नहीं उड़ जावन की।'
(घ) 'जेताई दीसे धरण गगन विच, तेताई सव उठ जासी'।
(च) 'काटो जम की फाँसी'।

प्र० १०. मीरां ने अपने नेत्रों की किस आदत का उल्लेख किया है? उत्तर सीमा १० शब्द।

प्र० ११. घुंघरु बांध कर नृत्य करते समय मीरां ने उनके प्रति दूसरों और कुटुंबियों के मनोभावों का किस रूप में वर्णन किया है? उत्तर-सीमा १० शब्द।

प्र० १२. निम्न पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइये—
(क) भजु मन चरण-कंवल अविनासी। (अनुप्रास, उपमा, रूपक) (ख) स्याम नाम का जहाज चलास्यां, भवसागर तरजास्याँ। (रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा) (ग) नदियां बहै जैसे सावन की। (उदाहरण, उपमा, रूपक) (घ) अंसुवन जल सींचि-सींचि प्रेम-वेलि बोई।
(रूपक, यमक, उपमा)

प्र० १३. निम्न शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए —
भगत-वछल, नेम, दरसन, निरत, पांख, अमरित।

प्र० १४. निम्न शब्दों के तीन-तीन पर्याय बताइये—
कमल, नैन, रैन, मुकुट, नदी, चेरी।

प्र० १५. निम्न शब्दों के प्रचलित खड़ी बोली रूप वताइये—
जाके, सोई, छांडि, गास्यां, थारी, जेताई, तेताई भयो, म्हारे।

प्र० १६. चिर-प्रतीक्षा के उपरांत मीरां और कृष्ण के मिलन की कल्पना करते हुए, मीरां के मन के आनंद और उल्लास का वर्णन १०० शब्दो में कीजिए।

प्र० १७. मीरां और राणा के बीच हुए काल्पनिक वार्तालाप को अपने शब्दो में लिखिए। उत्तर-सीमा १०० शब्द।

प्र० १८. निम्न बिन्दुओं के आधार पर मीरां की काव्यगत विशेषताओं पर २०० शब्दों का निबन्ध लिखिए—

(क) भाषा-शैली। (ख) भक्ति-भावना। (ग) विरह-निवेदन। (घ) अलंकार-संयोजन।

प्र० १९. मीरां और सूर की कृष्ण-भक्ति में जो अन्तर है, उसकी सोदाहरण विवेचना कीजिए। उत्तर सीमा २५० शब्द।

प्र० २०. कबीर, सूर, तुलसी, मीरां की रचनाओं के आधार पर बताइए कि भक्तिकाल की क्या विशेषताएँ उनके काव्य में हैं। अपने उत्तर की पुष्टि में संकलित कविताओं में से उदाहरण दीजिए। उत्तर सीमा २५० शब्द।

---

५ रहीम

जन्म : १५५६ ई०
मृत्यु : १६२७ ई०

जीवन परिचय

रहीम का पूरा नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था। [illegible] योद्धा, कुशल राजनीतिज्ञ और सहृदय कवि थे। [illegible] दी। सम्राट अकबर के अभिभावक वैरामखाँ [illegible] के दरबार के नवरत्नों में से एक थे। [illegible]

भाषा, अवधी आदि अनेक भाषाओं के विद्वान थे। स्वयं कुशल कवि होने के अतिरिक्त वे कवियों के आश्रयदाता भी थे। ऐसी जन श्रुति है कि कवि गंग की कविता से प्रसन्न होकर उन्होंने प्रचुर धन दिया। इससे उनकी दान-वीरता का परिचय मिलता है। उन्होंने अकबर की ओर से अनेक युद्धों में भी भाग लिया। अकबर की मृत्यु के बाद जहाँगीर जब सम्राट बना तब रहीम से उनकी नहीं बनी और उनके वृद्धावस्था के दिन बड़े कष्ट में व्यतीत हुए।

रचनाएँ

रहीम ने अनेक काव्य-ग्रन्थों की रचना की। 'बरवै नायिका भेद', 'दोहावली', 'रासपंचाध्यायी' तथा 'मदनाष्टक' उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। बरवै, नायिका भेद की भाषा अवधी है, शेष की ब्रजभाषा। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना 'दोहावली' है जिसे कुछ लोग 'रहीमसतसई' भी कहते हैं।

काव्यगत विशेषताएँ

हिन्दी के मुसलमान कवियों में रहीम का प्रमुख स्थान है। रहीम ने हिन्दी के अतिरिक्त फारसी, संस्कृत आदि में भी अनेक विषयों पर रचना की। उनकी कविता के मुख्य विषय हैं—भक्ति, नीति और शृंगार। उनके दोहों में लोक-व्यवहार, नीति, भक्ति तथा अन्य अनुभूतियों का सुन्दर समन्वय हुआ है। नीति काव्य के क्षेत्र में रहीम का स्थान सर्वोपरि है। उन्होंने जीवन में कड़वे मीठे अनेक अनुभव किए और भले, बुरे सभी प्रकार के दिन देखे। इससे उनके काव्य में मानव जीवन की अनुभूतियों का बड़ा मार्मिक एवं सजीव वर्णन हुआ है। उनके नीति सम्बन्धी दोहों में जीवन के अनुभवों का निचोड़ है। उनके अनेक दोहे कहावतों के रूप में प्रसिद्ध हो गये हैं।

रहीम मुसलमान होते हुए भी हिन्दू संस्कृति से भली भाँति परिचित थे। अपनी कविता में अनेक स्थानों पर उन्होंने हिन्दुओं की पौराणिक कथाओं और सामाजिक प्रथाओं का उल्लेख किया है। इनकी नीतिपरक उक्तियों पर संस्कृत कवियों की छाप देखने को मिलती है।

अकबरी दरबार के हिन्दी कवियों में रहीम का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

इनके व्यक्तित्व से अकबरी दरबार गौरवान्वित हुआ और इनके काव्य से हिन्दी समृद्ध हुई। उनकी भाषा शैली सरस सुबोध और सरल है। भाषा मे मुहावरों, कहावतों के प्रयोग से उनके दोहे बड़े प्रभावशाली बन गए हैं। दृष्टान्त, उदाहरण, अर्थान्तरन्यास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारो के स्वाभाविक प्रयोग से उनकी कविता में स्पष्टता और मार्मिकता का गुण आ गया है।

दोहे

रहीम के संकलित दोहों में उदारता, समता, क्षमा, परोपकार, मित्रता, आत्मसम्मान आदि के सम्बन्ध में कहा गया है। इनके नीति सम्बन्धी दोहों में लोकव्यवहार की बात कही गई है। हिन्दुओं के कृष्ण-सुदामा, हरि-हाथी, भृगु-विष्णु, विष्णु-लक्ष्मी, शिव-गंगा, आदि के पौराणिक कथानकों के माध्यम से रहीम ने नीति एवं उदारता के उपदेश दिए हैं। इन दोहों में जीवन का अनुभव चित्रित हुआ है। कुछ दोहों में कहावतों व मुहावरों का प्रयोग हुआ है। इन दोहों में रहीम ने जीवन अनुभवों को काव्यमयीअभिव्यक्ति दी है।

जे गरीव पर हित करैं, ते रहीम वड़ लोग।
कहा सुदामा वापुरो, कृष्ण मिताई जोग। १।

वड़े दीन को दु:ख सुनें, लेत दया उर आनि।
हरि हाथी सौं कब हुती, कहु रहीम पहचानि। २।

क्षिमा वड़न को चाहिए, छोटन को उतपात।
का रहीम हरि को घट्यो, जो भृगु मारी लात। ३।

रहिमन मोहि न सुहाइ, अमी पियावत मान विनु।
जो विप देइ वुलाइ, मान सहित मरिवो भलो। ४।

पावस देखि रहीम मन, कोयल साधी मौन।
अव दादुर वक्ता भए, हमें पूछिहैं कौन ? ५।

माँगै घटत रहीम पद, किती करी बड़ काम।
तीन पैग वसुधा करी, तऊ बावनै नाम। ६।

रहिमन निज मन की विथा, मन ही राखैं गोय।
सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय। ७।

जो रहीम ओछो बढ़ै, तो अति ही इतराय।
प्यादा सौं फरजी भयौं, टेढो टेढो जाय। ८।

कहि रहीम सम्पति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति-कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत। ९।

जो रहीम गति दीप की, कुलकपूत गति सोई।
बारै उजियारो करै, बढै अँधेरो होइ। १०।

रहिमन वित्त अधर्म को, जात न लागै वार।
चोरी करि होरी रची, मची तनक में छार। ११।

रहिमन पानी राखियै, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती मानुख चून। १२।

कमला थिर न रहीम कहि, यह जानत सब कोइ।
पुरुष पुरातन की बधू, क्यों न चंचला होइ। १३।

अच्युत चरन-तरंगिनी, सिव सिर मालति माल।
हरि न बनायों सुरसरी, कीजौ इंदव भाल। १४।

अमर वेलि बिन मूल की, प्रतिपालित है ताहि।
रहिमन ऐसे प्रभुहिं तजि, खोजत फिरिए काहि। १५।

दीन सबन को लखत हैं, दीनहिं लखै न कोय।
जो रहीम दीनहिं लखैं, दीनबन्धु सम होय। १६।

दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहिं।
ज्यों रहीम नट कुंडली, सिमिटि कूदि कढ़ि जाहिं। १७।

रहिमन वहाँ न जाइए, जहाँ कपट का हेत।
जानो कली अनार की, तन राता मन सेत। १८।

जो बड़ेन को लघु कहैं, नहिं रहीम घटि जाहिं।
गिरिधर मुरलीधर कहै, कछु दुःख मानत नाहिं। १९।

प्रीतम छवि नैनन बसी, पर छबि कहाँ समाय।
भरी सराय रहीम लखि, आप पथिक फिरि जाय। २०।

टूटे सुजन मनाइए, जो टूटै सौ बार।
रहिमन फिरि फिरि पोइए, टूटे मुक्ताहार। २२।

अभ्यास के प्रश्न

नोट:—नीचे कुछ प्रश्न और उनके संभावित उत्तर के पाँच-पाँच विकल्प दिए गए हैं। सही उत्तर का क्रमाक्षर दाहिनी ओर के कोष्ठक में लिखिए—

प्र० १. रहीम ने बड़े लोगों को क्षमा-गुण अपनाने के लिए क्यों कहा है?
(क) उनकी उदारता प्रकट होती है। (ख) क्षमा न करने पर उनका अहित हो सकता है। (ग) क्षमा करने से उनकी कोई हानि नहीं होती। (घ) क्षमा करने पर छोटे लोग उनका गुण-गान करते हैं। (च) सारा संसार उन्हें याद रखता है। ( )

प्र० २. रहीम की दृष्टि में बड़ा आदमी कौन है?
(क) धनवान। (ख) दानी। (ग) गरीबों का शुभचिंतक। (घ) सामाजिक कार्यकर्ता। (च) सबको प्रसन्न रखने वाला। ( )

प्र० ३. 'पानी गये न ऊबरै ....' में, मनुष्य के लिए ...

शब्द किस अर्थ में आया है ?

(क) व्यक्तित्व । (ख) विशाल हृदयता । (ग) आत्म-सम्मान । (घ
तेजस्विता । (च) यज्ञ । (

प्र० ४. 'माँगत घटत रहीम पद.................' में कवि ने माँगने वा
को अपमानित क्यों माना है ?

(क) माँगने वाले से सब घृणा करते हैं । (ख) मांगने वालों
घटिया वस्तुएँ मिलती हैं । (ग) माँगने वालों का आत्म सम्मान न
हो जाता है । (घ) माँगने वाला अपनी दृष्टि में गिर जाता है
(च) उससे सब दूर रहना पसन्द करते हैं । (

प्र० ५. 'रहिमन तहाँ न जाइए.................' में, कवि कहाँ नहीं ज
को कहता है ?

(क) जहाँ गरीबी है । (ख) जहाँ स्वार्थी लोग हैं । (ग) जहाँ कपटपू
प्रेम-व्यवहार है । (घ) जहाँ अनुचित धन मिलने की सम्भावना है
(च) जहाँ लालची लोग रहते हैं । (

प्र० ६. 'जो रहीम गति दीप.......... होय' । इस दोहे में 'कुलपूत'
संदर्भ में 'वारे' व 'बाढ़े' शब्द के क्या अर्थ हैं ?

(क) बाहर-बढ़ना । (ख) जलाने पर-बुझाने पर । (ग) बाहर-भीतर
(घ) बचपन में-बड़ा होने पर । (च) समय पर-मरने पर । (

प्र० ७. 'पावस देखि रहीम मन............कौन' ? इस दोहे में रहीम
किस ओर संकेत दिया है ?

(क) कोयल की प्रकृति की ओर । (ख) मेंढक की प्रकृति की ओर ।
(ग) मौसम के प्रभाव की ओर । (घ) सज्जन व्यक्ति के स्वभाव की
ओर । (च) अपनी स्वयं की प्रकृति की ओर । ( )

प्र० ८. निम्न प्रश्नों का उत्तर एक वाक्य में दीजिए ।

(क) दीपक और कपूत में क्या समानता होती है ? (ख) लक्ष्मी का
चंचल होने का क्या कारण है ? (ग) रहीम हरि न बनकर हर बनना

क्यों पसन्द करते हैं ? (घ) रुष्ट हुए सज्जनों को क्यों मना लेना चाहिए ? (च) सच्चे मित्र की क्या पहचान है ?

९. निम्न पंक्तियों का आशय ३० शब्दों में स्पष्ट कीजिए—

(क) सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लेहैं कोय।

(ख) प्यादे से फर्जी भयो, टेढ़ो टेढ़ो जाय।

(ग) चोरी कर होरी रची, भयी तनिक में छार।

(घ) ज्यों रहीम नट-कुंडली सिमिट कूदि कढ़ि जाहिं।

(च) पुरुष पुरातन की वधू क्यों न चंचला होय।

१०. निम्न पंक्तियों की अन्तर्कथाएँ तीन चार वाक्यों में लिखिए—

(क) कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई योग।

(ख) हरि हाथी सौं कब हुती, कहु रहीम पहिचानि।

(ग) का रहीम हरि को घट्यो, जो भृगु मारी लात।

(घ) तीन पैग वसुधा करी, तऊ बाव ने नाम।

(च) अच्युत-चरन तरंगिनी, सिव सिर मालति-माल।

११. रहीम के दोहों में अर्थांतरन्यास अलंकार का प्रचुरता से प्रयोग हुआ है। उसका लक्षण ज्ञात कीजिए और संकलित दोहों में से तीन उदाहरण दीजिए।

१२. निम्न पंक्तियों में अलंकार बताइये—

(१) विपति-कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत। (रूपक, उपमा, यमक)

(२) रहिमन पानी राखिये·········चून। (श्लेष, यमक, रूपक)

(३) टूटे सुजन मनाइये·········मुक्ताहार। (दृष्टान्त, उपमा, उत्प्रेक्षा)

१३. निम्न शब्दों के शुद्ध तत्सम रूप बताइये—

छिमा, श्रमी, बिथा, गोय, मीत, छार, थिर, दीरघ, मानुप, चून, हाथी।

१४. निम्न दोहों के भाव से मिलते-जुलते अपने किसी अनुभव का उल्लेख १५० शब्दों में कीजिए—

(क) रहिमन मोहि न सुहाय ········मरिबो भलो। (दोहा सं० ४)
(ख) रहिमन निज मन की·········कोय। (दोहा सं० ७)
(ग) प्यादा सों फरजी भयो, टेढ़ो टेढ़ो जाय। (दोहा नं० ८)
(घ) रहिमन वित्त अधर्म को, जात न लागे बार। (दोहा सं० ११)
(च) कमला थिर न···   ···चंचला होय। (दोहा सं० ११)

प्र० १५. रहीम तथा बिहारी के नीति-परक दोहों में काव्य की दृष्टि से क्या अन्तर है? उदाहरण सहित समझाइये। उत्तर सीमा १५० शब्द।

प्र० १६. संकलित दोहों में दिए गये उपदेशों का वर्गीकरण निम्न बिन्दुओं के आधार पर कर उनके भाव संक्षेप में समझाइए। उत्तर-सीमा १५० शब्द।
(१) मित्रता। (२) बड़प्पन। (३) क्षमा। (४) आत्म-सम्मान। (५) अहंकार। (६) ईश्वर भक्ति।

---

६. नरोत्तमदास

जन्म : १४३९ ई०
मृत्यु : १५४५ ई०

जीवन-परिचय

नरोत्तमदास का जन्म उत्तर प्रदेश के सीतापुर जिले के बाड़ी ग्राम के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके जीवन-वृत्त के सम्बन्ध में कहीं कोई विशेष उल्लेख नहीं मिलता। शिवसिंह सैंगर 'सरोज' में इन के जीवन परिचय के सम्बन्ध में सूचना के अतिरिक्त और कोई उल्लेख नहीं किया गया है।

रचनाएँ

इनकी दो रचनाओं का उल्लेख मिलता है—'सुदामा चरित' और 'ध्रुव-

रित' अभी तक अनुपलब्ध हैं। कुछ विद्वान 'विचारमाला' नामक ग्रंथ का
ी उल्लेख करते हैं जो उपलब्ध नहीं है। 'सुदामा-चरित' के कारण ही
न्हें इतनी लोकप्रियता मिली है।

ाव्यगत-विशेषताएँ

नरोत्तमदास की ब्रजभाषा बड़ी सजीव है। उसमें लोकोक्तियों और
मुहावरों का सुन्दर प्रयोग हुआ है। इनकी कथा कहने की शैली बड़ी रोचक
और प्रभावशाली है। इनके काव्य की भाषा व्यवस्थित, परिमार्जित और
हृदयग्राहिणी है। इन्होंने मुख्यत: कवित्त और सवैया छंद का प्रयोग किया है
अलंकारों की स्वाभाविक छटा ने इनके काव्य को आकर्षक सौन्दर्य
दिया है।

'सुदामा-चरित', नरोत्तमदास की काव्य-प्रतिमा का कीर्ति-कलश है।

सुदामा-चरित

(कृष्ण-सुदामा की मित्रता की कथा को लेकर कवि ने इस खण्ड-काव्य
की रचना की है। अपनी पत्नी से प्रेरित होकर दीन सुदामा, अपने बाल्यकाल
के मित्र कृष्ण से भेंट करने जाते हैं और लौटने पर, कृष्ण की कृपा से वे
अपने को वैभव-सम्पन्न पाते हैं।

कविता में सुदामा की दीनता का सुन्दर वर्णन हुआ है। इसमें दीन-
हृदय के सच्चे चित्र हैं। सामान्य गृहस्थ जीवन के चित्रों ने कविता को
आकर्षक बना दिया है। कवि ने कृष्ण और सुदामा की मित्रता का भावपूर्ण,
मार्मिक वर्णन किया है। इसमें सुदामा की दरिद्रता और आत्म-सम्मान की
भावना तथा श्रीकृष्ण के अतुल वैभव और मैत्री भाव का सजीव चित्र
उपलब्ध होता है। सम्पूर्ण वर्णन हृदयग्राही है और कवि की भावुकता का
परिचय देता है।

कविता की भाषा स्वाभाविक और सुबोध है। उसमें प्रवाह है। उपमा,
रूपक, अनुप्रास आदि के स्वाभाविक प्रयोग से काव्य-सौन्दर्य में वृद्धि हुई है।
भावों के साथ भाषा का इतना सुन्दर मिलाप, कविता की श्रेष्ठता का
कारण है।

विप्र सुदामा बसत हो, सदा आपने धाम।
भीख मांग भोजन करें, हिये जपत हरिनाम।
ताकी घरनी पतिव्रता, गहे वेद की रीति।
सलज सुसील सुबुद्ध अति, पति-सेवा सों प्रीति।
कह्यौ सुदामा एक दिन, कृस्न हमारे मित्र।
करत रहति उपदेस तिय, ऐसो परम विचित्र।१।

स्त्री

लोचन कमल दुख-मोचन तिलक भाल।
श्रवननि कुंडल, मुकुट धरे माथ हैं।
ओढ़े पीत बसन, गरे में वैजयन्ती-माल।
संख चक्र गदा और पद्म लिए हाथ हैं।
कहत नरोत्तम संदीपनि गुरु के पास।
तुम ही कहत हम पढ़े एक साथ हैं।
द्वारिका के गए हरि दारिद हरैंगे प्रिय।
द्वारिका के नाथ वे अनाथन के नाथ हैं।

सुदामा

द्वारिका जाहु जू, द्वारिका जाहु जू, आठहु जाम यहै जक तेरे।
जो न कही करिए तो बडौ दुःख, जैए कहाँ अपनी गति हेरे।
द्वार खरे प्रभु के छरिया तहं, भूपति जान न पावत नेरे।
पांच सुपारि तें देखु विचारिकै, भेंट को चारि न चाउर मेरे।३।
यह सुनिके तब बाँभनी, गई परोसिनि पास।
पाव सेर चाउर लिए, आई सहित हुलास।
सिद्धि करी गनपति सुमिरि, बांध दुपटिया खूंट।
मांगत खात चले तहाँ, मारग बाली-बूट।४।

द्वारपाल

सीस पगा न झगा तन में, प्रभु जान को आहि बसै केहि ग्रामा।
धोती फटी सी लटी दुपटी, अरु पाँय उपानह की नहिं सामा।
द्वार खरो द्विज़ दुर्बल एक, रह्यौ चकि सौ बसुधा अभिरामा।
पूछत दीनदयाल को धाम, बतावत आपनो नाम सुदामा।५।

बोल्यो द्वारपालक 'सुदामा नाम पांडे' सुनि,
छाँडै राज-काज ऐसे जी की गति जाने को ?
द्वारिका के नाथ हाथ जोरि धाय गहे पाँय
भेंटे लपटाय करि ऐसे दुख-साने को ?
नैन दोऊ जल भरि पूँछत कुसल हरि
विप्र बोल्यो, विपदा में मोहि पहिचाने को ?
जैसी तुम करी तैसी करै को कृपा के सिन्धु
ऐसी प्रीत दीनवन्धु, दीनन सौं माने को ? ।६।

ऐसे वेहाल वेवाइन सौं, पग कंटक-जाल लगे पुनि जोए।
'हाय। महादुख पायौ सखा तुम, आए इतै न कितै दिन खोए'।
देखि सुदामा की दीन दसा, करुना करके करुनानिधि रोए।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सौं पग धोए।७।

श्रीकृष्ण

आगे चना गुरु-मातु दए ते लए तुम चावि हमें नहिं दीने।
स्याम कह्यौ मुसुकाय सुदामा सों, चोरि की वानि में हौ जु प्रवीने।
पोटरी कांख में चांपि रहे तुम, खोलत नाहिं सुधा-रस भीने।
पाछिली वानि अजौं न तजी तुम, तैसेई भाभी के तंदुल कीने।८।

दीनो हुतौ सो दे चुके, विप्र न जानी गाथ।
चलती वेर गुपालजी, कछू न दीन्हों हाथ।९।

वैसेई राज-समाज बने, गज-बाजि घने मन संभ्रम छायो।
वैसेई कंचन के सब धाम हैं, द्वारिकै मांभि मनो फिरि आयो।
मौन विलोकिवे को मन लोचन, सोचत ही सब गाँव मंझायो।
पूछत पांडे फिरे सब सों, पर झोंपरी को कहुँ खोज न पायो।

कनक दंड कर में लिए, द्वारपाल हैं द्वार।
जाय दिखायो विप्र ने, यो है महल तुम्हार।१०।

अभ्यास के प्रश्न

नोट :—नीचे कुछ प्रश्न और उनके संभावित उत्तर के पाँच-पाँच विकल्प दिए हैं। सही उत्तर का क्रमाक्षर दाहिनी ओर के कोष्ठक में लिखिए।

प्र० १. सुदामा की स्त्री ने सुदामा को द्वारिका जाने के लिए क्यों प्रेरित किया ?

(क) मित्र से मिलने के लिए। (ख) पुराने संबधों की याद दिलाने के लिए। (ग) अपनी दरिद्रता दूर करने के लिए। (घ) कृष्ण की उपासना करने के लिए। (च) द्वारिका की यात्रा करने के लिए। (   )

प्र० २. सुदामा द्वारिका जाने में क्यों आनाकानी कर रहे थे ?

(क) उनके पास भेंट देने को कुछ नहीं था। (ख) इस भय से कि कहीं कृष्ण उन्हें भूल न गए हों। (ग) वृद्धावस्था के कारण इतनी दूर जाने में असमर्थ थे। (घ) पत्नी को अकेला छोड़कर नहीं जाना चाहते थे। (च) अपनी गरीबी वे कृष्ण को नहीं बताना चाहते थे। (   )

प्र० ३. 'आगे चना गुरु मातु दिये.........' में कृष्ण का वर्ताव किस प्रकार का है ?

(क) शिकायत का। (ख) डाट-डपट का। (ग) उलाहने का। (घ) उपहास का। (च) मित्रता के स्मरण का। (   )

प्र० ४. सुदामा की पत्नी को कृष्ण से क्या आशा थी ?

(क) मुक्ति प्रदान करेंगे। (ख) दरिद्रता को दूर कर देंगे। (ग) मित्रता निभायेंगे। (घ) अपने समान बना लेंगे। (च) अनाथों की रक्षा करेंगे। ( )

प्र० ५. द्वारपाल ने श्रीकृष्ण जी के पास जाकर सुदामा के लिए यह क्यों कहा कि वह द्वारिका को देखकर हक्का-बक्का रह गया है ?
(क) द्वारिका का वैभव बतलाने के लिए। (ख) सुदामा की गरीबी बतलाने के लिए। (ग) द्वारिका के अद्वितीय सौंदर्य को बतलाने के लिए (घ) सुदामा का भोलापन बतलाने के लिए। (च) सुदामा की निंदा करने के लिए। ( )

प्र० ६. 'श्रीकृष्ण ने सुदामा के पैर अपनी आँखों के आँसुओं से धोये' इस कथन के द्वारा कवि क्या भाव प्रकट करना चाहता है ?
(क) करुणा। (ख) पश्चाताप। (ग) प्रायश्चित। (घ) भावुकता। (च) भक्त-वत्सलता। ( )

प्र० ७. 'सीस पगा न झगा तन में............'इस सवैये द्वारा कवि किस रस की अभिव्यक्ति कर रहा है ? (उत्तर एक शब्द में)

प्र० ८. श्री कृष्ण ने सुदामा से शिष्टाचार के विरुद्ध ये शब्द क्यों कहे कि तुम चोरी की आदत में प्रवीण हो ? (उत्तर सीमा २५ शब्द)

प्र० ९. श्री कृष्ण ने सुदामा को क्या दिया ? (उत्तर-सीमा १० शब्द)

प्र० १०. श्री कृष्ण ने सुदामा का ऐसा भव्य स्वागत क्यों किया ?
(उत्तर-सीमा २५ शब्द)

प्र० ११. निम्न प्रश्नों का एक वाक्य में उत्तर दीजिए।
(क) सुदामा की पत्नी की क्या विशेषताएं थी ? (ख) उसके मन में कृष्ण का कौन सा रूप था ? (ग) उसके द्वारिका जाने के आग्रह पर सुदामा की क्या प्रतिक्रिया थी ? (घ) द्वारपाल ने कृष्ण के सामने सुदामा का वर्णन किन शब्दों में किया ? (च) सुदामा से मिलने पर कृष्ण ने

उनके साथ कैसा व्यवहार किया ?

प्र० १२. निम्न पंक्तियों का आशय २० शब्दों में लिखिए—
(क) पाछिली बानि अजौं न तजी तुम, तेसेई भाभी के तंदुल कीने। (ख) सलज-सुसील सुबद्ध अति, पति-सेवा सों प्रीति। (ग) मांगत खात चले तहां, मारग बाली-बूट। (घ) पांय उपानह की नहीं सामा। (च) देखि सुदामा की दीन दसा, करुना करके करुना निधि रोये।

प्र० १३. निम्न शब्दों के शुद्ध रूप लिखिये—
हिये, क्रस्न, गरे, छरिया, नेरें, मोहि, दीने, अजो, कीने, दीन्हो, तुम्हार।

प्र० १४. निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए—
विप्र, धाम, सलज, वसन, पद्म, जाम, तंदुल, उपानह, अभिरामा, प्रबीने।

प्र० १५. सुदामा के द्वारिका से लौट जाने के बाद पत्नी के साथ हुए वार्तालाप का काल्पनिक वर्णन १०० शब्दों में कीजिए।

प्र० १६. संदीपन ऋषि के यहाँ कृष्ण और सुदामा के छात्र-जीवन का अनुमान करते हुए १०० शब्दों में वर्णन कीजिए।

---

७. रसखान

जन्म : १५५८ ई०
मृत्यु : १६१८ ई०

जीवन परिचय—

रसखान का मूल नाम सैयद इब्राहीम था। हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि

में जिन मुसलमान कवियों का नाम लिया जाता है उन में कबीर, जायसी, रहीम, ताज आदि के साथ रसखान का नाम भी उल्लेखनीय है। ऐसे ही कवियों के लिए भारतेन्दु ने कहा था---

'इन मुसलमान हरि-जनन पैं कोटिन हिन्दू वारिये।'

रसखान जाति के मुसलमान पठान थे। 'रसखान' इन का उपनाम था। उनकी कविता ऐसी सरस हुई कि 'रसखान' शब्द सरस कविता का पर्याय हो गया। श्री कृष्ण के प्रति रसमयी भक्ति-भावना के कारण भक्तजन इन्हें रसखान नाम से पुकारने लगे थे। आरंभ में ये प्रेमी स्वभाव के थे। भक्तों के सत्संग से उनका लौकिक प्रेम कृष्ण-प्रेम में बदल गया। वृन्दावन पहुँच कर उन्होंने महाप्रभु बल्लभाचार्य के पुत्र गोस्वामी विठ्ठलनाथ से दीक्षा ली और वैष्णव हो गये। गोसांई जी के २५२ प्रधान शिष्यों में रसखान की भी गणना हुई।

रचनाएँ

रसखान की दो रचनाएं प्रसिद्ध हैं—(१) सुजान-रसखान, जिसमें १२६ सवैये और कवित्त तथा १० दोहे-सोरठे हैं और (२) प्रेम-वाटिका, जिसमें ५२ दोहे हैं।

काव्यगत विशेषताएँ

रसखान-काव्य का मुख्य विषय कृष्ण-प्रेम है। इनकी संपूर्ण कविता कृष्ण-प्रेम और व्रज-प्रेम से भरी हुई है। रसखान मस्त प्रेमी-भक्त और भावुक-हृदय के कवि थे। उन के प्रेम के आलंबन कृष्ण हैं। प्रिय कृष्ण के साथ सम्बन्ध रखने वाली सभी वस्तुएँ इन्हें प्रिय हैं। व्रज की भूमि, वन, उपवन, नदी, नाले, पर्वत, सरोवर, पशु-पक्षी, ग्वाल-वाल सभी के प्रति उनका गहरा अनुराग है।

रसखान की कविता सरस, मधुर और स्वाभाविक है। भाव और भाषा का अपूर्व सौंदर्य उनकी कविता में मिलता है। इन की कविता की भाषा, व्रजभाषा है। भाषा की ऐसी सफाई, ऐसा सुथरापन, ऐसा माधुर्य, दूसरे कवियों में दुर्लभ है। सरलता और मधुरता उनकी भाषा का मुख्य गुण है।

चलते मुहावरों का उन्होंने सुन्दर प्रयोग किया है। इन की ब्रजभाषा टकसाली, सरस और सरल है। उस में शब्दाडंबर जरा भी नहीं है। इनकी रचनाओं में प्रेम का मनोहर चित्रण हुआ है। रसखान अपनी तन्मयता, भाव-विह्वलता, और मार्मिक शैली के कारण हिन्दी साहित्य में महत्त्वपूर्ण पद के अधिकारी हो गये हैं।

रसखान वास्तव में रस की खान हैं। रस-सिक्त रचनाओं के कारण इन्होंने अपना नाम सार्थक कर दिया है।

भक्ति कण

(भक्ति सम्बन्धी संकलित सवैये बहुत लोकप्रिय हैं। रसखान की भक्ति भावना इन सवैयों में छलकी पड़ती है। प्रेमी को प्रिय ही प्यारा नहीं लगता, प्रिय से सम्बन्धित समस्त वस्तुएँ भी उसे वैसी ही प्यारी लगती हैं। वह हर स्थिति में कृष्ण के समीप रहना चाहता है। कृष्ण की लकड़ी और कमरिया पर वह सारा सुख न्यौछावर करना चाहता है। उसे यम की कोई चिंता नहीं क्योंकि उसे विश्वास है कि कृष्ण उसके रक्षक हैं। प्रिय के हाथ से रोटी छीन कर जाने वाला कौआ भी उसकी दृष्टि में भाग्यशाली है। भाषा का माधुर्य, सवैयों में प्रकट हुआ है।)

(१)

मानुस हों तो वही रसखानि, बसौं ब्रज गोकुल गांव के ग्वारन।
जो पसु हों तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मंझारन।
पाहन हों तो वही गिरि को, जु कियो कर-क्षत्र पुरन्दर धारन।
जो खग हों तो बसेरो करों, मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन।

(२)

या लकुटी अरु कामरिया पर, राज तिहूं पुर को तजि डारौं।
आठहुं सिद्धि, नवौं निधि को सुख, नंद की गाय चराय बिसारौं।
रसखानि कबौं इन आंखिन सौं, ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।
कोटिक वे कलधौत के धाम, करील के कुंजन ऊपर वारौं।

वा छवि को रसखानि विलोकत, वारत काम कला निधि कोटी।
काग के भाग कहा कहिये, हरि-हाथ सौं ले गयो माखन रोटी।

(८)

गावैं गुनी गनिका गंधर्व औ सारद सेस सबै गुन गावत।
नाम अनंत गनंत गनेस ज्यौं, ब्रह्मा त्रिलोचन पार न पावत।
योगी जति तपसी अरु सिद्ध, निरंतर जाहि समाधि लगावत।
ताहि अहीर की छोहरियाँ छछिया भर छाछ पै नाच नचावत।

अभ्यास के प्रश्न

नोट :—नीचे कुछ प्रश्न और उनके पांच-पांच विकल्प दिए जा रहे हैं। उपयुक्त उत्तर का क्रमाक्षर दाँयी ओर कोष्ठक में अंकित कीजिए।

प्र० १. 'काग के भाग कहा कहिये.......' में कौए के भाग्य की सराहना क्यों की गई है ?

(क) उसने श्री कृष्ण की बाल-लीला देखी थी। (ख) उसने श्री कृष्ण के हाथ से रोटी छीन ली थी। (ग) उसने श्री कृष्ण के हाथ का स्पर्श किया था। (घ) उसने श्री कृष्ण का ध्यान आकर्षित किया था। (च) उसने श्री कृष्ण की अनन्य भक्ति की थी। ( )

प्र० २. 'कहा करिहै रवि-नंद विचारो' पंक्ति में कौन-सा भाव है ?

(क) अहंकार। (ख) निश्चिंतता। (ग) निरादर। (घ) आत्म-विश्वास। (च) श्रद्धा। ( )

प्र० ३. रसखान कवि हर जन्म में व्रजभूमि में ही क्यों जन्म लेना चाहता है ?

(क) वहाँ घी-दूध-दही की सुविधा है। (ख) कृष्ण का सामिप्य मिलता रहता है। (ग) गोपियों के साथ रास-लीला करना चाहता है। (घ)

ब्रजभाषा से उसे अत्यधिक मोह है। (च) वहाँ परम एकान्त सुलभ है।
( )

प्र० ४. प्रस्तुत पाठ में किस छंद का प्रयोग हुआ है ?

(क) छप्पय। (ख) पद। (ग) दोहा। (घ) सवैया। (च) कवित्त।
( )

प्र० ५. निम्न प्रश्नों का उत्तर एक वाक्य में दीजिए।

(क) गंगा नदी के प्रभाव का वर्णन कवि ने किस प्रकार किया है ? (ख) 'पाहन हों तो वही गिरि को' कह कर कवि किस पर्वत की ओर संकेत दे रहा है। (ग) आठहुं सिद्धि, नवों निधि कौन-सी हैं। (घ) कृष्ण को प्राप्त करने के लिए कौन-कौन लालायित रहते हैं ?

प्र० ६. अलंकार बताइये –

(क) ब्रज के वन बाग तड़ाग निहारों। (वृत्यानुप्रास, छेकानुप्रास, लाटानुप्रास) (ख) जु कियो कर-छत्र पुरंदर धारन। (रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा) (ग) कोटिक वे कलधौत के धाम, करील के कुंजन ऊपर वारो। (वृत्यानुप्रास, छेकानुप्रास, लाटानुप्रास) (घ) ताखन, जाखन राखिये, माखिन चाखिन हारो सो राखन हारो। (लाटानुप्रास, यमक, श्लेष) (च) अहीर की छोहरियाँ, छछिया भर छाछ पै नाच नचावत। (लाटानुप्रास, वृत्यानुप्रास, श्रुत्यानुप्रास)।

प्र० ७. चौथे पद के आधार पर निम्न की अंतर्कथाएं लिखिए। प्रत्येक की शब्द-सीमा ४० शब्द। द्रोपदी, गज, गनिका, गीध, अजामिल, अहिल्या, प्रह्लाद।

प्र० ८. निम्न शब्दों में से प्रत्येक के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए :— पुरंदर, तड़ाग, कलधौत, शिव, रवि, भागीरथी, कामदेव, मानुष, पाहन, शारदा, शेषनाग।

प्र० ९. निम्न शब्दों के खड़ी बोली के प्रचलित रूप बताइये —

समें लगभग ७०० दोहे-सोरठे हैं। 'सतसई' उस रचना को कहते हैं जिसमें ७०० छंद हों। संस्कृत, प्राकृत तथा हिन्दी में भी सतसई ग्रन्थों की रचना बिहारी से पूर्व हो चुकी थी। तुलसी और रहीम भी सतसइयाँ लिख चुके थे। शृंगार-विषयक सतसई सबसे पहले बिहारी ने ही लिखी।

काव्यगत विशेषताएँ

'बिहारी सतसई', मुक्तक काव्य रचना है। उसमें शृंगार, भक्ति, नीति आदि विषयों के मुक्तक दोहे हैं। बिहारी का मुख्य विषय शृंगार है। 'बिहारी सतसई' को साहित्य जगत में बहुत लोकप्रियता प्राप्त हुई। उस पर ५० से भी अधिक टीकाएं लिखी गई। संस्कृत, फारसी, उर्दू आदि में उसके रूपांतर व भाषांतर हुए।

बिहारी रीतिकाल के श्रेष्ठ शृंगारी कवि हैं। उनके काव्य का विषय यौवन, प्रेम और सौंदर्य है। अद्भुत कल्पना, मानव प्रकृति का सूक्ष्म अध्ययन एवं थोड़े में गंभीर भाव व्यक्त करने की विशेषताओं के कारण उनके दोहे प्रभावशाली एवं सरस बन पड़े हैं। उन्होंने कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ को व्यक्त करने में सफलता प्राप्त की है। इसी से 'बिहारी ने गागर में सागर भरा हैं' वाली उक्ति प्रसिद्ध हुई है। उनकी सतसई सौंदर्य और प्रेम के मनोरम चित्रों की चित्रशाला है।

शृंगार के दोहों के अतिरिक्त बिहारी ने नीति और भक्ति के दोहे भी लिखे हैं। उनके नीति के दोहे बड़े प्रभावशाली सिद्ध हुए हैं। भक्ति संबंधी दोहों में भी भक्त की आत्मा का स्वर सुनाई पड़ता है, यद्यपि बिहारी भक्त नहीं थे। प्रकृति वर्णन के दोहे भी बिहारी ने लिखे हैं। वे भी भावपूर्ण बन पड़े हैं।

बिहारी ने ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। उनकी भाषा चुस्त, शब्द नपे-तुले, सशक्त एवं सार्थक हैं। कहीं-कहीं उर्दू, फारसी और बुन्देलखण्डी शब्दों का प्रयोग भी हुआ है।

बिहारी हिन्दी के श्रेष्ठ शृंगारी कवि हैं।

बसौं, बसेरो करौं, तजि डारौं, पचि हारैं, तऊ, मोसी, तोसी, पोसे।

प्र० १०. संकलित छंदों को दृष्टि में रखते हुए, निम्न बिन्दुओं के आधार पर रसखान की काव्यगत विशेषताओं पर १५० शब्दों का निबंध लिखिए :
(१) भाषा-शैली (२) भाव-पक्ष (३) कला-पक्ष।

प्र० ११. 'रसखान, रस की खान थे'—इस उक्ति को १०० शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

---

८. बिहारी

जन्म : सन् १५९५ ई०
मृत्यु : सन् १६६४ ई०

जीवन परिचय

बिहारी का जन्म ग्वालियर के समीप बसुवा गोविन्दपुर में हुआ था। वे माथुर चौबे जाति के थे। उनके पिता का नाम केशवराव था। वे जयपुर नरेश मिर्जा राजा जयसिंह के आश्रय में रहते थे। कहा जाता है कि महाराजा जयसिंह अपनी एक नवविवाहिता पत्नी के प्रेम में इतने लीन हो गये थे कि उन्होंने राज्य का कार्य देखना तक छोड़ दिया था। बिहारी ने 'नहिं पराग नहीं मधु······' वाला दोहा लिख कर उनके पास भिजवाया जिससे उनकी मोह-निद्रा टूट गई और वे पहले की भांति राज्य कार्य सम्हालने लगे। इस दोहे पर प्रसन्न होकर बाद में राजा ने उन्हें प्रत्येक दोहे पर एक अशर्फी पुरुषकार स्वरूप दी थी। राजा जयसिंह के आदेश पर ही उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'बिहारी सतसई' की रचना की।

रचनाएँ

बिहारी की एक ही रचना मिलती है जिसका नाम 'बिहारी सतसई' है।

इसमें लगभग ७०० दोहे-सोरठे हैं। 'सतसई' उस रचना को कहते हैं जिसमें ७०० छंद हों। संस्कृत, प्राकृत तथा हिन्दी में भी सतसई ग्रन्थों की रचना बिहारी से पूर्व हो चुकी थी। तुलसी और रहीम भी सतसइयाँ लिख चुके थे। शृंगार-विषयक सतसई सबसे पहले बिहारी ने ही लिखी।

काव्यगत विशेषताएँ

'बिहारी सतसई', मुक्तक काव्य रचना है। उसमें शृंगार, भक्ति, नीति आदि विषयों के मुक्तक दोहे हैं। बिहारी का मुख्य विषय शृंगार है। 'बिहारी सतसई' को साहित्य जगत में बहुत लोकप्रियता प्राप्त हुई। उस पर ५० से भी अधिक टीकाएं लिखी गई। संस्कृत, फारसी, उर्दू आदि में उसके रूपांतर व भाषांतर हुए।

बिहारी रीतिकाल के श्रेष्ठ शृंगारी कवि हैं। उनके काव्य का विषय जीवन, प्रेम और सौंदर्य है। अद्‌भुत कल्पना, मानव प्रकृति का सूक्ष्म अध्ययन एवं थोड़े में गंभीर भाव व्यक्त करने की विशेषताओं के कारण उनके दोहे प्रभावशाली एवं सरस बन पड़े हैं। उन्होंने कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ को व्यक्त करने में सफलता प्राप्त की है। इसी से 'बिहारी ने गागर में सागर भरा हैं' वाली उक्ति प्रसिद्ध हुई है। उनकी सतसई सौंदर्य और प्रेम के मनोरम चित्रों की चित्रशाला है।

शृंगार के दोहों के अतिरिक्त बिहारी ने नीति और भक्ति के दोहे भी लिखे हैं। उनके नीति के दोहे बड़े प्रभावशाली सिद्ध हुए हैं। भक्ति संबंधी दोहों में भी भक्त की आत्मा का स्वर सुनाई पड़ता है, यद्यपि बिहारी भक्त नहीं थे। प्रकृति वर्णन के दोहे भी बिहारी ने लिखे हैं। वे भी भावपूर्ण बन पड़े हैं।

बिहारी ने ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। उनकी भाषा चुस्त, शब्द चुने-चुने, सशक्त एवं सार्थक हैं। कहीं-कहीं उर्दू, फारसी और बुन्देलखण्डी शब्दों का प्रयोग भी हुआ है।

बिहारी हिन्दी के श्रेष्ठ शृंगारी कवि हैं।

दोहे

(इस संकलन में विहारी की अन्योक्ति, नीति एवं भक्ति सम्बन्धी दोहे
को संकलित किया गया है। विहारी की अन्योक्तियाँ वड़ी भावपूर्ण वनी हैं।
अन्योक्ति में प्रस्तुत का कथन न करके अप्रस्तुत का कथन किया जाता है
पर अर्थ प्रस्तुत का ही लिया जाता है। कवि जिस वात का वर्णन करन
चाहता है उसे प्रस्तुत कहते हैं, उससे समानता रखने वाली वात अप्रस्तु
कहलाती है। विहारी ने अन्योक्तियों के माध्यम से मानव जीवन को अने
चेतावनियाँ दी हैं। अन्योक्तियों के द्वारा कवि ने स्वार्थमुक्त होने, मूर्खों
बचने, आशान्वित रहने और सांसारिक माया-मोह में न उलझने की वा
मार्मिक ढंग से कही है।

नीति सम्वन्धी दोहों में जीवन का आदर्श प्रस्तुत किया गया है। इ
दोहों में विनम्र बनने, कृपणता त्यागने, लालच में न पड़ने और सुख-दुःख क
समान रूप से स्वीकारने की वात कही है। नीतिविषयक दोहों में दृष्टा
अलंकार का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

यद्यपि विहारी भक्त नहीं थे किन्तु फिर भी भक्ति सम्बन्धी दोहों क
रचना की है। कृष्ण के रूप-सौन्दर्य का प्रभावशाली वर्णन किया है। भ
के क्षेत्र में कवि ने मतवाद का खण्डन करते हुए सच्चे मन से ईश्वर भज
करने को कहा है। व्यर्थ के आडंबर को त्यागने, और मन को कपट रहि
करने पर कवि ने बल दिया है। व्रजभाषा का सुष्ठु रूप इन दोहों
मिलता है।

अन्योक्ति—

स्वारथ सुकृत न श्रम वृथा, देखि विहंग विचारि।
बाज पराये पानि पर, तू पंछीन न मारि।१।

करि फुलेल को आचमन, मीठो कहत सराहि।
ए गंधी मतअंध तू, इतर दिखावत काहि।२।

जिन दिन देखे वे कुसुम गई सु बीति बहार।
अब अलि रही गुलाब में, अपत कटीली डार।३।

इहीं आस अटक्यौं रहै, अलि गुलाव के मूल।
ह्वैहैं फेरि वसन्त ऋतु, इन डारनि वे फूल।४।

वे न इहां नागर बड़े, जिन आदर तो आव।
फूल्यौं अनफूल्यो भयो, गंवई गांव गुलाब।५।

जा के एकाएक हू जग व्यौसाई न कोइ।
सो निदाघ फूलै-फलै आक डहडहो होइ।६।

को छूटयो इहि जाल परि, कत कुरंग अकुलात।
ज्यों-ज्यों सुरझि भज्यौ चहै, त्यौं-त्यौं उरझत जात।७।

नीति—

नर की अरु नल-नीर की, गति एकै करि जोइ।
जेतो नीचो ह्वै चलै, तेतो ऊंचो होइ।८।

मीत न नीति गलीति है, जो धरिये धन जोरि।
खाये खर्चे जो जुरै, तो जोरियै करोरि।९।

गुनी गुनी सव के कहे निगुनी गुनी न होत।
सुन्यौ कहूं तरू अरक तैं, अरक समान उदोत।१०।

कनक कनक तें सौ गुनी मादकता अधिकाय।
वा खाये वौरात जग, या पाये वौराय।११।

कोटि जतन कोऊ करै, परै न प्रकृतिहि वीच।
नल-वल जल ऊंचौ चढ़ै, अन्त नीच को नीच।१२।

दीरघ सांस न लेहि दुख सुख सांईहि न भूलि।
दई दई क्यों करतु है, दई दई सो कवूलि।१३।

भक्ति

मेरी भव वाधा हरो, राधा नागरि सोय।
जा तन की झांई परै, स्याम हरित दुति होय।१४।

सीस मुकुट कटि काछनि, कर मुरली उर माल।
यहि बानिक मो मन बसो, सदा बिहारी लाल।१५।

अपने अपने मत लगे, बादि मचावत सोर।
ज्यौं ज्यौं सबही सेइबो, एकै नंदकिसोर।१६।

जप माला छापा तिलक, सरै न एकौ काम।
मन कांचै नाचै वृथा, सांचे रांचे राम।१७।

कब को टेरत दीन रट, होत न स्याम सहाय।
तुमहूं लागी जगत गुरु, जगनायक जग बाय।१८।

तौं लगि या मन सदन में, हरि आवैं किहि बाट।
विकट जटे जौं लौं निपट, खुलैं न कपट कपाट।१९।

मोहि तुम्हें बाढ़ीं बहस, को जीतै जदुराज।
अपने अपने बिरद की, दुहुन निबाहन लाज।२०।

मोहूं दीजै मोष, जो अनेक पतितनि दिये।
जो बांधे ही तोष, तौ बाँधौ अपने गुननि।२१।

तजि तीरथ, हरि-राधिका, तन-दुति करि अनुराग।
जिहिं ब्रज-केलि निकुंज-मग, पग पग हो[illegible] [illegible]र।२।

अ

(ग) गुलाव की डाल में काटें लगे हैं। (घ) सुख के क्षण बीत गये। (च) जीवन में सुख कम, दुःख अधिक है। ( )

प्र० २. 'मीत न नीति गलीति है..............' में धन-संग्रह के लिये कौन सी वात नीति-सम्मत बताई गई है।

(क) सही-गलत ढंग से धन जमा करना। (ख) कष्ट सह कर भी धन-संग्रह करना। (ग) रहने-खाने में विना कृपणता किये, धन-संग्रह करना। (घ) सभी कार्य-व्यवहार ठीक से करना और धन की चिन्ता न करना। (च) धन की चिंता में कभी कुछ न करना। ( )

प्र० ३. करि फुलेल को आचमन, मीठो कहत सराहि..........इस दोहे द्वारा कवि क्या प्रकट करना चाहता है ?

(क) गंधी की मूर्खता। (ख) इत्र खरीदने वालों की बुद्धि। (ग) राजनीति के रंग-ढंग। (घ) गुण-ग्राहकता का अभाव। (च) (च) युग का परिवर्तन। ( )

प्र० ४. को छूटयो इहि जालि परि...........इस दोहे में कवि किसकी ओर संकेत कर रहा है।

(क) हिरन की ओर। (ख) मायाजाल की ओर। (ग) मायाजाल में फंसे प्राणी की ओर। (घ) संसार की वास्तविकता की ओर। (च) माया के स्वभाव की ओर। ( )

प्र० ५. विहारी ने राम से मिलने को क्या युक्ति वतलाई है ?

(क) जप-तप-पर ही भरोसा नहीं करना चाहिये। (ख) मन को कच्चा नहीं रखना चाहिए। (ग) सच्चे हृदय से भगवान को याद करना चाहिए। (घ) वाह्य आडम्वर से दूर रहना चाहिए। (च) धार्मिक मत-मतांतरों में नहीं पडना चाहिये। ( )

प्र० ६. निम्न प्रश्नों का उत्तर दीजिये।

(क) सोने को धतूरे से सौ गुना मादक क्यों कहा गया है? (ख) व्यर्थ के

सीस मुकुट कटि काछनि, कर मुरली उर माल।
यहि बानिक मो मन बसो, सदा बिहारी लाल।१५।

अपने अपने मत लगे, वादि मचावत सोर।
ज्यों ज्यों सबही सेइबो, एकै नंदकिसोर।१६।

जप माला छापा तिलक, सरै न एको काम।
मन कांचै नाचै वृथा, सांचे रांचे राम।१७।

कब को टेरत दीन रट, होत न स्याम सहाय।
तुमहूं लागी जगत गुरु, जगनायक जग बाय।१८।

तौं लगि या मन सदन में, हरि आवैं किहिं बाट।
विकट जटे जौं लौं निपट, खुलैं न कपट कपाट।१९।

मोहिं तुम्हें बाढ़ीं बहस, को जीतै जदुराज।
अपने अपने बिरद की, दुहुन निबाहन लाज।२०।

मोहूं दीजै मोष, जो अनेक पतितनि दिये।
जो बांधे ही तोष, तौ बाँधौ अपने गुननि।२१।

तजि तीरथ, हरि-राधिका, तन-दुति करि अनुराग।
जिहिं ब्रज-केलि निकुंज-मग, पग पग होत प्रयाग।२।

अभ्यास के प्रश्न

नोट :—नीचे कुछ प्रश्न अंकित हैं। उनके पांच पांच विकल्प भी संभावि उत्तर के रूप में दिये गये हैं। सही उत्तर का क्रमाक्षर दाहिनी ओर कोष्ठक में लिखिये।

प्र० १. 'जिन दिन देखे वे कुसुम·········डारे', दोहे का मुख्य भा क्या है ?

(क) सुख में सार नहीं है। (ख) जीवन में केवल दुःख ही दुःख है

(ग) गुलाव की डाल में काटें लगे हैं। (घ) सुख के क्षण बीत गये।
(च) जीवन में सुख कम, दुःख अधिक है। ( )

प्र० २. 'मीत न नीति गलीति है..............' में धन-संग्रह के लिये कौन सी वात नीति-सम्मत वताई गई है।

(क) सही-गलत ढंग से धन जमा करना। (ख) कष्ट सह कर भी धन-संग्रह करना। (ग) रहने-खाने में विना कृपणता किये, धन-संग्रह करना। (घ) सभी कार्य-व्यवहार ठीक से करना और धन की चिन्ता न करना। (च) धन की चिंता में कभी कुछ न करना। ( )

प्र० ३. करि फुलेल को आचमन, मीठो कहत सराहि...........इस दोहे द्वारा कवि क्या प्रकट करना चाहता है ?

(क) गंधी की मूर्खता। (ख) इत्र खरीदने वालों की बुद्धि। (ग) राजनीति के रंग-ढंग। (घ) गुण-ग्राहकता का अभाव। (च) (च) युग का परिवर्तन। ( )

प्र० ४. को छूट्यो इहि जालि परि...........इस दोहे में कवि किसकी ओर संकेत कर रहा है।

(क) हिरन की ओर। (ख) मायाजाल की ओर। (ग) मायाजाल में फंसे प्राणी की ओर। (घ) संसार की वास्तविकता की ओर। (च) माया के स्वभाव की ओर। ( )

प्र० ५. विहारी ने राम से मिलने की क्या युक्ति वतलाई है ?

(क) जप-तप-पर ही भरोसा नहीं करना चाहिये। (ख) मन को कच्चा नहीं रखना चाहिए। (ग) सच्चे हृदय से भगवान को याद करना चाहिए। (घ) वाह्य आडम्बर से दूर रहना चाहिए। (च) धार्मिक मत-मतांतरों में नहीं पड़ना चाहिये। ( )

प्र० ६. निम्न प्रश्नों का उत्तर दीजिये।

(क) सोने को धनूरे से सौ गुना मादक क्यों कहा गया है? (ख) व्यर्थ के

धार्मिक मत मतांतरों में न पड़ने के लिये कवि क्यों कहता है? (ग) राधा से अपने सांसारिक दुःख दूर करने का आग्रह कवि ने क्यों किया है ? (घ) कृष्ण को किस रूप में कवि अपने मन में वसाना चाहता है ? (च) किस स्थिति में ईश्वर का हृदय में प्रवेश सम्भव नहीं है ? ( )

प्र० ७. निम्न पंक्तियों का आशय २५ शब्द में स्पष्ट कीजिये ।

(क) को छूटयो इहि············उरझत जात ।

(ख) जेतो नीचे व्है चलै, तेतौ ऊँचो होय ।

(ग) वा खाये बौरात जग, या पाये बौराय ।

(घ) जा तन की झांई परै, स्याम हरित दुति होय ।

(च) जो बाँधे ही तोष, तो बाँधौ अपने गुननि ।

प्र० ८. 'मुक्तक काव्य' की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं ? ३० शब्दों में समझाइये ।

प्र० ९. अन्योक्ति किसे कहते हैं? इस पाठ के दोहों में **कुरंग, अलि, बाज, गुलाब** से सम्बन्धित अन्योक्तियाँ किन को लक्ष्य करके कही गई हैं ?

प्र० १०. निम्न पंक्तियों में अलंकार बताइये ।

(१) गुनी गुनी सब के कहे, निगुनी गुनी न होत । (लाटानुप्रास, यमक, श्लेष, वृत्यानुप्रास) ।

(२) कनक कनक तें सौ गुनीं मादकता अधिकाय । (श्लेष, यमक, उपमा, रूपक)

(३) दई-दई क्यों करतु है, दई दई सो कबूलि । (लाटानुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा)

(४) जा तन की झांई परै, स्याम हरित दुति होय । (श्लेष, यमक, उपमा, रूपक)

(५) विकट जटे जौं लौं निपट, खुलैं न कपट कपाट । (रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, श्लेष)

प्र० ११. निम्न शब्दों के अर्थ बताइये ।

नल-नीर, वीच, पानि, मति-अंध, अपत, गंवई, निदाघ, डहडहो, कुरंग, वादि, जग-वाय ।

प्र० १२. कनक, दई, अरक, स्याम, हरित शब्दों के दो दो पर्याय लिखिये ।

प्र० १३. कोष्ठक में दिये शब्द-रूपों में से कौन सा रूप, वर्तमानकाल का वाचक नहीं है—

(क) (परै) न प्रकृतिहिं वीच । (ख) नल वल जल ऊंचो (चढ़ै)। (ग) मन कांचै (नाचै) वृथा । (घ) वादि (मचावत) सोर । (च) तौ (वांधो) अपने गुननि । ( )

प्र० १४. कवीर और विहारी की अन्योक्तियों, में आपको क्या अन्तर प्रतीत होता है ? १५० शब्दों में उत्तर दीजिये ।

प्र० १५. सूर और विहारी की भक्ति में आप का क्या अंतर प्रतीत होता है ? उत्तर सीमा १०० शब्द ।

प्र० १६. 'विहारी ने गागर में सागर भरा है ।' इस उक्ति का आशय १५० शब्दों में स्पष्ट कीजिये ।

९. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

जन्म : १८६५ ई०
मृत्यु : १९४५ ई०

जीवन परिचय

श्री 'हरिऔध' का जन्म १८६५ ई० में आजमगढ़ जिले में निजामावा[illegible] में हुआ। आपकी शिक्षा घर पर ही हुई। उन्हें संस्कृत, उर्दू, फारसी आ[illegible] का अच्छा अभ्यास था। बीस वर्ष की अवस्था में ये निजामाबाद मिडि[illegible] स्कूल में अध्यापक नियुक्त हुए और १८८९ ई० में क़ानूनगो हो गए। इ[illegible] पद से अवकाश लेने के बाद वे काशी विश्वविद्यालय में अवैतनिक रूप [illegible] हिन्दी के अध्यापन का कार्य करने लगे। लगभग १५-१६ वर्षों तक व[illegible] कार्य करने के बाद वे फिर आजमगढ़ आ गए और लगभग अस्सी वर्ष [illegible] आयु में वहीं उनका देहावसान हुआ। उपाध्याय जी सरल प्रकृति और उद[illegible] विचारों के पुरुष थे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने उन्हें सभापति पद अ[illegible] 'साहित्य-वाचस्पति' की उपाधि देकर सम्मानित किया। उनके प्रसि[illegible] प्रबंध-काव्य 'प्रिय प्रवास' पर उन्हें मंगलाप्रसाद पुरस्कार प्रदान किया गय[illegible]

रचनाएँ

उपाध्याय जी की प्रतिभा बहुमुखी थी। उन्होंने कविता ही नहीं गद्य भी लिखा है। वे अच्छे अलोचक भी थे। 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' और 'अधखिला फूल' उनके उपन्यास हैं, जिनकी भाषा सरल, ठेठ हिन्दी है। 'बोलचाल', 'चौखे चौपदे', 'चुभते चौपदे', में मुहावरों का सुन्दर प्रयोग हुआ है। प्रिय-प्रवास' उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना है जिसमें कृष्ण के अक्रूर के साथ मथुरा जाने की कथा है। 'वैदेही वनवास', 'रसकलश', पारिजात' आदि इनकी अन्य प्रमुख काव्य-कृतियाँ हैं।

काव्यगत विशेषताएँ

हरिऔध जी खड़ी बोली के प्रतिष्ठित कवि हैं। उन्होंने राधा-कृष्ण के

चरित्र को आधुनिक रूप में समाज-सेवा की भावना से युक्त करके चित्रित किया है। उन्होंने व्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों में ही काव्य रचना की है। भाषा के सरल और कठिन दोनों रूपों पर उनका समान अधिकार था। उन्होंने संस्कृत के छन्दों का बड़ा सफल प्रयोग किया है। 'प्रिय प्रवास', संस्कृत के छन्दों में लिखा हुआ हिन्दी का प्रथम महाकाव्य है।

हरिऔध जी ने प्रकृति का विस्तार से चित्रण किया है। वात्सल्य के मनोभावों का चित्रण करने में उन्हें विशेष सफलता मिली है। खड़ी बोली को उन्होंने भाषा, भाव, छंद और अभिव्यंजना की दृष्टि से नया रूप प्रदान किया। इनके काव्य में एक ओर तो सरल हिन्दी का सहज सौंदर्य है और दूसरी ओर संस्कृत पदावली की छटा।

हरिऔध खड़ी बोली के पहले महाकाव्यकार हैं।

कर्मवीर

(प्रस्तुत कविता हरिऔध के 'पद्य-प्रमोद' काव्य संकलन से ली गई है। इसमें कवि ने सच्चे कर्मवीरों के गुणों का यशोगान किया है। कर्मवीर वे लोग हैं जो मुसीबतों में तनिक भी विचलित नहीं होते और सुख, दुःख दोनों में प्रसन्न रहते हैं। वे कठिन से कठिन काम को भी अपनी सामर्थ्य द्वारा संभव कर दिखलाते हैं। सच्चे कर्मवीर व्यर्थ की बातें करने के बजाय काम करने में विश्वास करते हैं। अपने अथक परिश्रम द्वारा वे बड़े-बड़े निर्माण के कार्य करते हैं। कवि का कहना है कि आज दुनिया के जितने भी देश बुद्धि, विद्या, धन, वैभव की दृष्टि से फले फूले हैं वह सब सच्चे कर्मवीरों के कठोर श्रम का ही प्रताप है।

कवि ने ओजस्वी शैली में कर्मवीरों का गुणगान करते हुए साहस के साथ मुसीबतों का सामना करते रहने की प्रेरणा इस कविता में दी है।)

१

देखकर बाधा विविध, बहु विघ्न, घबराते नहीं।
रह भरोसे भाग के, दुःख देख पछताते नहीं॥

काम कितना ही कठिन हो, किन्तु उकताते नहीं।
भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं॥
हो गए एक आन में उनके बुरे दिन भी भले।
सब जगह सब काल में, वे ही मिले फूले फले॥

२

चिलचिलाती धूप को जो चाँदनी देवें बना।
काम पडने पर करें जो शेर का भी सामना।
जो कि हँस हँस के चबा लेते हैं लोहे का चना।
"है कठिन कुछ भी नहीं", जिनके है जी में यह ठना।
कोस कितने ही चलें पर वे कभी थकते नहीं।
कौनसी है गाँठ जिसको खोल वे सकते नहीं।

३

काम को आरम्भ करके यों नहीं जो छोड़ते।
सामना करके नहीं जो भूल कर मुँह मोड़ते।
जो गगन के फूल बातों से नहीं हैं तोड़ते।
संपदा मन से करोड़ों की नहीं जो जोड़ते।
बन गया हीरा उन्हीं के हाथ से है कारवन।
काँच को करके दिखा देते हैं वे उज्ज्वल रतन।

४

पर्वतों को काट कर सड़कें बना देते हैं वे।
सैंकड़ों मरुभूमि में नदियाँ बहा देते हैं वे।
गर्भ में जल-राशि के बेड़ा चला देते हैं वे।
जंगलों में भी महामंगल रचा देते हैं वे।
भेद नभ-तल का उन्होंने है बहुत बतला दिया।
है उन्होंने ही निकाली तार की सारी क्रिया।

५

व्योम को छूते हुए दुर्गम पहाड़ों के शिखर।
वे घने जंगल जहाँ रहता है तम आठों प्रहर।
गर्जते जल-राशि की उठती हुई ऊँची लहर।
आग की भयदायिनी फैली दिशाओं में लवर।
ये कँपा सकती कभी, जिसके कलेजे को नहीं।
भूल कर भी वह नहीं नाकाम रहता है कहीं।

६

सब तरह से आज जितने देश हैं फूले फले।
बुद्धि, विद्या, धन, विभव के हैं जहाँ डेरे डले।
वे बनाने से उन्हीं के बन गए इतने भले।
वे सभी हैं हाथ से ऐसे सपूतों के पले।
लोग जब ऐसे समय पाकर जनम लेंगे कभी।
देश की और जाति की होगी भलाई भी तभी।

यशोदा विलाप

(प्रस्तुत प्रसंग हरिऔध जी के 'प्रिय प्रवास' महाकाव्य से लिया गया है। उद्धव के मथुरा से आने पर यशोदा कृष्ण के कुशल-क्षेम के समाचार पूछती है। उसे इस बात की चिन्ता है कि कहीं मथुरा में उसका राजदुलारा दुखी तो नहीं है। यह समस्त प्रसंग करुणा से ओत-प्रोत, मार्मिक एवं हृदय-स्पर्शी है। इसकी भाषा सरल और प्रसंगानुकूल है।

(१)

मेरे प्यारे स-कुशल, सुखी और सानंद तो हैं
कोई चिंता मलिन उनको तो नहीं है बनाती?
ऊधो! छाती वदन पर है म्लानता भी नहीं तो,
हो जाती है हृदय तल में तो नहीं वेदनाएँ।

(२)

मैं थी सारा दिवस मुख को देखते थी बिताती
हो जाती थी व्यथित उसको म्लान जो देखती थी।
हा ! ऐसे ही अब वदन को देखती कौन होगी ?
ऊधो ! माता सदृश ममता अन्य की है न होती।

(३)

जो लाती थीं विविध रंग के मुग्धकारी खिलौने
वे आती हैं सदन अब भी कामना में पगी सी।
हा ! जाती हैं पलट जब वे हो निराशा-निमग्ना
तो उन्मत्ता-सदृश पथ की ओर मैं देखती हूं।

(४)

प्यारा खाता रुचिर नवनी को बड़े चाव से था,
खाते-खाते पुलक पड़ता, नाचता, कूदता था।
ए बातें हैं सरस नवनी देखते ही याद आतीं
हो जाता है मधुरतर औ स्निग्ध भी दग्धकारी।

(५)

प्यारे ऊधो सुरत करता लाल मेरी कभी है
क्यों होता है न अब उसको ध्यान बूढ़े पिता का।
रो रो हो हो विकल अपने वार हैं जो विताते
हा ! वे सीधे सरल शिशु हैं क्यों नहीं याद आते ?

(६)

कैसे वृन्दा-विपिन विसरा, क्यों लता-वेलि भूली ?
कैसे जी से उतर ब्रज की कुंज-पुंजें गयीं हैं ?

कैसे फूले विपुल फल से नम्रता भूजात भूले ?
कैसे भूला विकच तरु, वो अर्कजा कूल वाला ।

(७)

जा कुंजों में प्रतिदिन जिन्हें चाव से था चराया
जो प्यारी थीं परमव्रज के लाड़िले को सदा ही ।
खिन्ना, दीना विकल वन में आज, जो घूमती हैं
ऊधो ! कैसे हृदय-धन को हाय ! वे धेनु भूलीं ?

अभ्यास के प्रश्न

:—नीचे कुछ प्रश्न और उनके उत्तर के पांच-पांच विकल्प दिए गए हैं। सही उत्तर का क्रमाक्षर दायीं ओर के कोष्ठक में लिखिए ।

१. जीवन में कौन-सा व्यक्ति कभी असफल नहीं होता ?
(क) धनवान । (ख) चतुर । (ग) निर्भीक । (च) व्यावहारिक । (च) कपटी ।

२. 'माता सदृश ममता, अन्य की है न होती'—में कौन-सा भाव मुख्य है ?
(क) स्नेह । (ख) वात्सल्य । (ग) प्रेम । (घ) सहानुभूति । (च) करुणा ।

३. यशोदा 'उन्मत्ता सदृश पथ की ओर' क्यो देखती है ?
(क) कृष्ण की प्रतीक्षा के कारण (ख) किसी संदेश की प्रतीक्षा के कारण । (ग) विक्षिप्त होने के कारण । (घ) घोर निराशाओं के कारण । (च) माता होने के कारण ।

४. 'जो प्यारी थीं परम व्रज के लाडिले को', में 'जो' से किस की ओर संकेत है ?
(क) गोपिकाएं । (ख) गायें । (ग) नदियां । (घ) लताएँ । (च)

मुरली ।

प्र० ५. निम्न प्रश्नों का उत्तर २० शब्दों में दीजिए —

(क) 'बन गया हीरा उन्हीं के हाथ से है कार्बन' का क्या अभिप्राय है; (ख) 'जंगल में महामंगल रचना' से क्या तात्पर्य है ? (ग) 'चिल-चिलाती धूप को चाँदनी बनाने' से क्या समझते हो ? (घ) 'भेद नभ-तल का' से कवि का क्या अभिप्राय है ? (च) 'कांच को उज्जवल रत्न बनाने' से नया तात्पर्य है ?

प्र० ६. 'कर्मवीर' कविता के आधार पर कर्मवीर पुरुषों के गुणों का उल्लेख ५० शब्दों में कीजिए ।

प्र० ७. संक्षेप में भाव समझाइए ।

(क) हो जाती है हृदय-तल में तो नहीं वेदनाएँ ? (ख) हो जाता मधुरतर औ स्निग्ध भी दग्धकारी । (ग) कैसे रो रो हो हो विकल अप वार हैं जो बिताते । (घ) कैसे फूले विपुल फल से नम्रता भूजात भूले (च) जो आती हैं सदन में अब भी कामना में पगी सी ।

प्र० ८. निम्न मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य बनाइए—

(क) फलना-फूलना । (ख) लोहे के चने चबाना । (ग) गांठ खोलना (घ) गगन के फूल तोड़ना । (च) जंगल में मंगल मनाना । (छ) विभ के डेरे लगाना । (ज) धूप को चाँदनी बनाना ।

प्र० ९. निम्न शब्दों के तीन तीन पर्यायवाची शब्द लिखो ।

वीर, चांदनी, गगन, फूल, पर्वत, जंगल, तम, लहर, देश ।

प्र० १०. 'यशोदा-विलाप' में कौन से छंद का प्रयोग हुआ है और उ के लक्षण क्या हैं ?

प्र० ११. कृष्ण के ब्रज लौट आने पर उनका यशोदा, ग्वाल-बाल औ

गोपियों से जो वार्तालाप हुआ, उसका काल्पनिक वर्णन १०० शब्दों में कीजिए।

१२. ऐसे तीन कर्मवीरों का परिचय दीजिए जिन्होंने कविता में व्यक्त भावों को जीवन में सत्य करके दिखलाया हो।

---

१०. मैथिलीशरण गुप्त

जन्म : सन् १८८६ ई०
मृत्यु : सन् १९६४ ई०

जीवन परिचय

गुप्त जी का जन्म सन् १८८६ ई० में चिरगाँव (झाँसी) में हुआ। इनके पिता भी अच्छे कवि थे। इन्हें कविता लिखने का प्रोत्साहन श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी से प्राप्त हुआ। घर पर ही इन्होंने हिन्दी संस्कृत आदि का अध्ययन किया। गुप्त जी सरल, सादगी-प्रिय निरभिमानी व्यक्ति थे। उनकी वेशभूषा, रहन-सहन आदि सभी सादगी से ओतप्रोत थे। वैष्णव धर्म के अनुयायी होते हुए आप सब धर्मों के प्रति उदार और सहिष्णु थे। वे राष्ट्रीय कवि थे। अपनी कविता के द्वारा उन्होंने स्वतन्त्रता आन्दोलन में योग दिया। उनके काव्य में भारतीय संस्कृति और सभ्यता का गौरवशाली चित्रण हुआ है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत के राष्ट्रपति ने उन्हें भारतीय संसद (राज्य सभा में सदस्य के रूप में मनोनीत कर राष्ट्र-सेवा का पुरस्कार दिया। भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित भी किया।

रचनाएँ—

गुप्त जी की रचनाओं की संख्या बहुत अधिक है। उनकी कुछ प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय पुस्तकों के नाम इस प्रकार हैं—भारत-भारती जयद्रथ-वध, पंचवटी, किसान, नहुष, द्वापर, कुणाल, सिद्धराज, यशोधरा, विष्णुप्रिया,

विश्व-वेदना, साकेत और जय भारत। इनके अतिरिक्त मेघनाद वध, पलासी का युद्ध, विरहिणी ब्रजांगना, स्वप्न वासवदत्ता, उमर खैयाम की रुबाइयाँ आदि उनके द्वारा अनुवादित कृतियाँ हैं। 'साकेत' महाकाव्य पर गुप्त जी को हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने 'मंगलाप्रसाद पुरस्कार' देकर सम्मानित किया।

काव्यगत विशेषताएँ —

गुप्त जी हमारे राष्ट्र-कवि थे। उन्हें भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधि कवि कहा जाता है। खड़ी बोली के अन्यतम कवियों में गुप्त जी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उनके काव्य में भारत की संस्कृति के स्वर्णिम अतीत का सुन्दर और सजीव चित्रण हुआ है। वे उदार विचारों के थे। हिन्दू होते हुए भी उन्होंने अपने काव्य में बौद्ध, सिख, मुसलमान और ईसाई धर्मों के महापुरुषों की कथा कही। उनकी कविता में राष्ट्रीय चेतना के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय भावनाओं का चित्रण भी हुआ है।

गुप्त जी के काव्य में नारी को महत्त्वपूर्ण एवं सम्मान का स्थान मिला है। यशोधरा, उर्मिला, आदि नारियों को, जिन पर अब तक किसी का विशेष ध्यान नहीं दिया था, गुप्त जी ने अमर बना दिया। गुप्त जी रामभक्त कवि माने जाते हैं। तुलसी के 'मानस' के बाद हिन्दी में रामकाव्य का दूसरा स्तम्भ गुप्त जी का 'साकेत' ही है। गुप्त जी ने दो महाकाव्य और उन्नीस खण्डकाव्यों की रचना की है।

खड़ी बोली के विकास में गुप्त जी के योग को कभी नहीं भुलाया जा सकता। उन्होंने जब कविता लिखना प्रारम्भ किया तब खड़ी बोली को काव्य के लिए अनुपयुक्त भाषा माना जाता था। गुप्त जी ने खड़ी बोली को सुन्दर, सुघड़ रूप देकर उसे काव्य के लिए भी उपयोगी बनाया। आज खड़ी बोली का जो सम्पन्न रूप है, उसे, काव्यभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने वाले यही प्रथम कवि थे। 'भारत भारती, और 'जयद्रथ वध' पुस्तकें अपने समय में इतनी लोकप्रिय थीं कि उससे खड़ी बोली के महत्त्व को स्वीकार किया जाने लगा।

गुप्त जी रामभक्त कवि थे। समाज की सुव्यवस्था के लिए वे मर्यादा को आवश्यक मानते थे। नारी के प्रति इनका दृष्टिकोण आदरपूर्ण रहा है। गुप्त जी राष्ट्रीय कवि भी थे। इनकी प्रायः सभी रचनाएं राष्ट्रीयता से परिपूर्ण हैं। उत्तर भारत में 'भारत भारती' द्वारा राष्ट्रीयता के प्रचार प्रसार में बड़ी सहायता मिली है। बाद की रचनाओं में भी राष्ट्रीयता का चित्रण किसी-न-किसी रूप में अवश्य हुआ है। गुप्त जी की यह विशेषता रही है कि बदलती परिस्थितियों के साथ-साथ इन्होंने अपने काव्य का स्वर भी बदला है। इसीलिए गुप्त जी को युग का प्रतिनिधि कवि कहा जाता है।

गुप्त जी ने प्रबन्ध, मुक्तक, गीत, तीनों प्रकार का काव्य लिखा है। उनके काव्य की भाषा, सरल और प्रभावशालिनी है। वह इतनी सीधी और सरल है कि साधारण पाठक भी उसे बिना कठिनाई के समझ सकता है। छन्दों और शैलियों की जैसी विविधता गुप्त जी के साहित्य में दिखाई पड़ती है, वैसी आधुनिक किसी हिन्दी कवि में नहीं मिलती। उनकी भाषा शुद्ध और परिमार्जित है।

गुप्त जी आर्य-संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना के प्रतिनिधि कवि हैं)

मंथरा की कुटिलता —

प्रस्तुत पद्यांश, गुप्त जी द्वारा लिखित 'साकेत' महाकाव्य से लिया गया है। इसमें कवि ने मंथरा की कुटिलता, वाक्पटुता तथा वचन विदग्धता और कैकेयी के मन के अन्तर्द्वन्द को बड़ी मार्मिक अभिव्यक्ति दी है। संवादों के कारण कविता में नाटकीय वातावरण की सृष्टि हुई है। कविता की भाषा सरल और भाव बोध-गम्य है।

देखकर कैकेयी यह हाल,
आप उससे बोली तत्काल—
'अरी, तू क्यों उदास है आज,
भरत जब कल होगा युवराज?'

मंथरा बोली निस्संकोच,
'आप को भी तो है कुछ सोच?'
हँसी रानी सुनकर यह बात,
उठी अनुपम आभा अवदात।

'सोच है मुझको निस्संदेह,
भरत जो है मामा के गेह,
सफल करके निज निर्मल दृष्टि,
देख वह सका न यह सुख सृष्टि।'

ठोक कर अपना क्रूर कपाल,
जता कर, यही कि फूटा भाल,
किंकरी ने तब कहा तुरन्त—
'हो गया भोलेपन का अन्त।'

न समझी कैकेयी वह बात,
कहा उसने—'यह क्या उत्पात ?
वचन क्यों कहती है तू वाम ?
नहीं क्या मेरा बेटा राम ?'

'और, वे औरस भरत कुमार ?'
—कुदासी बोली कर फटकार।
कहा रानी ने पा कर खेद—
'भला, दोनों में है क्या भेद ?'

'भेद ?'—दासी ने कहा सतर्क
'सवेरे दिखला देगा अर्क,
राजमाता होगी जब एक,
दूसरी देखेगी अभिषेक।'

रोक कर कैकेयी ने रोष,
कहा—'देती है किसको दोष ?
राम की माँ क्या कल या आज,
कहेगा मुझे न लोक समाज ?'

कहा दासी ने धीरज त्याग—
'लगे इस मेरे मुँह में आग,
मुझे क्या, मैं होती हूँ कौन ?
नहीं फिर क्यों रहती हूँ मौन ?

देख कर किन्तु स्वामि-हित घात,
निकल ही जाती है कुछ बात,
इधर भोली हैं जैसी आप
समझती सबको वैसी आप।

नहीं तो यह सीधा षड्यन्त्र,
रचा क्यों जाता यहाँ स्वतन्त्र ?
कहा रानी ने—'क्या षड्यन्त्र ?
वचन है तेरे मायिक मन्त्र।

हुई जाती हूँ मैं उद्भ्रान्त,
खोलकर कह तू सब वृतान्त।
मंथरा ने फिर ठोका भाल—
शेष है अब भी क्या कुछ हाल ?

सरलता भी ऐसी है व्यर्थ,
समझ जो सके न अर्थानर्थ,
भरत को करके घर से त्याग,
राम को देते हैं नृप राज।

भरत से सुत पर भी सन्देह,
बुलाया तक न उन्हें जो गेह।'
कहा कैकेयी ने सक्रोध—
'दूर हो दूर, अभी निर्बोध।'

सामने से हट, अधिक न बोल,
द्विजिह्वे, रस में विष मत घोल।

उड़ाती है तू घर में कीच,
नीच ही होते हैं बस नीच।

हुआ भ्रू कुंचित भाल विशाल,
कपोलों पर उड़ते थे बाल।
प्रकट थी मानो शासन नीति,
मंथरा सहमी देख सभीति।

तीक्ष्ण थे लोचन अटल अड़ोल,
लाल थे लाली भरे कपोल।
न दासी देख सकी उस ओर,
जला दे कहीं न कोप कठोर।

किन्तु वह हटी न अपने आप,
खड़ी ही रही नम्र चुप चाप।
अन्त में बोली स्वर सा साध—
'क्षमा हो मेरा यह अपराध।

स्वामि-सम्मुख सेवक या भृत्य,
आप ही अपराधी हैं नित्य।
दण्ड दें कुछ भी आप समर्थ,
कहा क्या मैंने अपने अर्थ ?

समझ में आया जो कुछ मर्म,
उसे कहना था मेरा धर्म।
न था यह मेरा अपना कृत्य,
भर्तृ हैं भर्तृ, मृत्य हैं भृत्य।—

मही पर अपना माथा टेक,
भरा था जिसमें अति अविवेक,
किया दासी ने उसे प्रणाम,
और वह चली गई अविराम।

गई दासी, पर उसकी बात,
दे गई मानो कुछ आघात।

'भरत से सुत पर भी सन्देह,
बुलाया तक न उसे जो गेह ॥'

('साकेत' से)

मां, कह एक कहानी —

(यह कविता गुप्त जी के 'यशोधरा' महाकाव्य से ली गई है। बालक राहुल अपनी माता यशोधरा से कहानी सुनाने के लिए प्रार्थना कर रहा है कहानी का विषय भी कवि ने ऐसा चुना है जिसका सम्बन्ध गौतम बुद्ध के जीवन के उस प्रसंग से है जिससे उनका करुणामय रूप प्रकट होता है। शिशु राहुल आनन्दपूर्वक कहानी सुनता जाता है। माता के अन्तिम शब्दों को दुहराकर कथा को आगे बढ़ाने का संकेत करता है। कवि ने अन्त में राहुल के मुख से जिस न्याय-पक्ष का समर्थन करवाया है, वह बालस्वभाव की न्याय प्रवृत्ति को स्पष्ट करता है। 'न्याय दया का दानी', इस कविता का सार है।

कहानी कहने का ढंग सुन्दर है। भाषा सीधी, सरल, साधारण बोलचाल की है।)

"मां कह एक कहानी।"
"बेटा, समझ लिया क्या तूने,
मुझ को अपनी नानी।"
"तू है हठी मानधन मेरे
सुन, उपवन में बड़े सवेरे
तात, भ्रमण करते थे तेरे
जहां सुरभि मनमानी।"
"जहां सुरभि मनमानी ?
हां मां, यही कहानी।"
"गाते थे खग कलकल स्वर से
सहसा एक हंस ऊपर से
गिरा, बिद्ध होकर खर-शर से
हुई पक्ष की हानी।"

"हुई पक्ष की हानी ?
करुणा भरी कहानी।"

"चौंक उन्होंने उसे उठाया
नया जन्म था उसने पाया
इतने में आखेटक आया
लक्ष्य - सिद्धि का मानी।"

"लक्ष्य - सिद्धि का मानी।
कोमल - कठिन कहानी।"

"माँगा उसने आहत पक्षी,
तेरे तात किन्तु थे रक्षी,
तब उसने जो था खग-भक्षी—
हठ करने की ठानी।"

"हठ करने की ठानी।
अब बढ़ चली कहानी।"

"हुआ विवाद, सदय-निर्दय में,
उभय आग्रही थे स्व-विषय में,
गई बात तब न्यायालय में,
सुनी, सभी ने जानी।"

"सुनी सभी ने जानी।
व्यापक हुई कहानी।"

"राहुल, तू निर्णय कर इसका,
न्याय पक्ष लेता है किसका ?
कह दे निर्भय, जय हो जिसका।
सुन लूं तेरी वाणी।"

"माँ मेरी क्या वाणी ?
मैं सुन रहा कहानी।"

"कोई निरपराध को मारे
तो क्यों अन्य उसे न उबारे

रक्षक पर भक्षक को वारे—
न्याय दया का दानी।"

"न्याय दया का दानी।
तूने गुनी कहानी।"

अभ्यास के प्रश्न

ट :—नीचे कुछ प्रश्न और उनके पाँच-पाँच विकल्प दिये जा रहे हैं। जो विकल्प सर्वाधिक उपयुक्त हो, उसका क्रमाक्षर दाँयी ओर दिये कोष्ठक में लिखिये।

१. मंथरा कैकेयी को उकसा कर, अयोध्या के राजकुल में भीषण दुर्घटना का कारण क्यों बनी ?
(क) क्योंकि वह कैकेयी नरेश की गुप्तचर थी। (ख) क्योंकि उसे रानी कौशल्या से ईर्ष्या थी। (ग) क्योंकि वह अयोध्या का अहित चाहती थी। (घ) क्योंकि उसे भविष्य का कल्पना न थी। (च) क्योंकि वह केवल स्वामिभक्त थी।

२. कैकेयी के हाथों अयोध्या का जो अनिष्ट हुआ, उसका दोष मुख्यतया किस पर रखा जा सकता है ?
(क) कैकेयी के दुर्बल मन पर। (ख) मंथरा दासी पर। (ग) अयोध्या के दुर्भाग्य पर। (घ) राम के भाग्य पर। (च) राजा दशरथ की दुर्बुद्धि पर।

३. 'नहीं तो यह सीधा षड्यन्त्र ?' पंक्ति में मंथरा षड्यन्त्र का क्या कारण बताना चाहती है ?
(क) राजा दशरथ का राम के प्रति विशेष अनुराग। (ख) रानी कौशल्या की कुटिलता। (ग) रानी कैकेयी का भोलापन। (घ) सभासदों की गुप्त मंत्रणा। (च) भरत की राज्य के प्रति अनासक्ति।

४. निम्न प्रश्नों का उत्तर २० शब्दों में दीजिये।
(क) 'द्विजिह्वे रस में विष मत घोल' से क्या अभिप्राय है ? (ख) 'भरत तू क्यों कहती है राम ?' से आप क्या समझते हैं ? (ग) 'न्याय दया का दानी' किसे कहा गया है ? (घ) 'हृदय-निधि का मानी' से

क्या तात्पर्य है ? (च) 'भरत से सुत पर भी संदेह' पंक्ति का आशय क्या है ?

प्र० ५. मंथरा ने अपना भाल ठोककर कैकेयी को जो कुछ कहा उसे दो तीन वाक्यों में लिखिए ।

प्र० ६. 'माँ कह एक कहानी' शीर्षक गीत का मूल भाव दो वाक्यों में बताइये ।

प्र० ७. निम्नांकित शब्दों का अर्थ स्पष्ट कीजिये —
किंकरी, औरस, अर्क, अभिषेक, मायिक-मंत्र ।

प्र० ८. गुप्त जी की ख्याति के क्या कारण हैं ? उन पर १०० शब्दों में प्रकाश डालिये ।

प्र० ९. अपने पिता के दया-भाव की कथा को सुनकर जो प्रतिक्रिया राहुल के मन में हुई होगी, उसे वह अपने मित्रों के बीच किस प्रकार प्रकट करेगा ? उत्तर सीमा १०० शब्द ।

प्र० १०. कैकेयी के अनुताप करने पर मंथरा की क्या मानसिक स्थिति हुई होगी ? उत्तर सीमा ५० शब्द ।

---

११. सुमित्रानंदन पंत | जन्म : सन् १९०० ई०

जीवन परिचय—

पंत जी का जन्म कूर्माचल प्रदेश के अलमोड़ा जिले के कौसानी ग्राम में हुआ । इलाहाबाद के म्योर कालेज से इण्टर की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद इन्होंने पढ़ाई छोड़ दी । घर पर उन्होंने हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, बंगला आदि भाषाओं का अध्ययन किया । इसके अतिरिक्त विदेशी साहित्य और भारतीय दर्शन का भी गम्भीर अध्ययन किया । साहित्य के क्षेत्र में कालिदास, रवीन्द्र, शैले, कीट्स, वर्ड्स वर्थ, टैनीसन आदि आपके प्रिय कवि रहे । दर्शन

के क्षेत्र में शंकर, विवेकानन्द, रामतीर्थ, अरविंद आदि ने इन्हें प्रभावित किया। राजनीति के क्षेत्र में इन पर गांधी और मार्क्स का सबसे अधिक प्रभाव पड़ा। पंत जी का व्यक्तित्व सुन्दर और आकर्षक है। प्रकृति ने उन्हें कवि का रूप, मन, वाणी, रुचि और आकर्षण प्रदान किया है।

भारत सरकार ने पंत जी को पद्मभूषण की उपाधि देकर सम्मानित किया। देश का सबसे बड़ा साहित्यिक पुरस्कार 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' भी इन्हें मिल चुका है।

कृतियां—

पंत जी की कृतियों की संख्या बहुत बड़ी है। कुछ उल्लेखनीय कृतियां इस प्रकार हैं—

१. कविता संग्रह : वीणा, ग्रंथि, पल्लव, गुंजन, युगान्त, युगवाणी, ग्राम्या, युग-पथ, स्वर्ण-किरण, स्वर्ण-धूलि, उत्तरा, वाणी, अतिमा, लोकायतन, रश्मिबंध, पल्लविनी, चिदंबरा आदि। २. गीति नाट्य : रजत शिखर, शिल्पी, सौवर्ण। ३. नाटक : ज्योत्सना। ४. गद्य : गद्य-पथ, पांच कहानियां। ५. अनुवाद : मधुज्वाल। (उमरखय्याम की रुबाइयों का अनुवाद।

काव्यगत विशेषताएं—

छायावादी कवियों में पंत जी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वे छायावाद के सूत्रधारों में से हैं। बाद में उन्होंने प्रगतिवाद में अपना स्वर मिलाया और फिर दर्शन व आध्यात्म से प्रभावित कविताएं लिखीं।

पंत जी के काव्य को हम तीन युगों में बांट सकते हैं। प्रथम युग में पंत जी प्रेम, सौंदर्य और प्रकृति के कवि थे। उनकी प्रारम्भिक कविताओं पर विवेकानन्द, रवीन्द्रनाथ ठाकुर और अंग्रेजी के रोमांटिक कवियों का प्रभाव पड़ा। इस युग की कविताओं में प्रकृति सम्बन्धी कविताओं की प्रधानता है। दूसरे युग की रचनाएं, कार्ल मार्क्स और गांधी के विचारों से प्रभावित हैं। इन कविताओं में कवि का ध्यान समाज और समाज के लोगों की स्थिति पर गया है। प्रथम युग की रचनाएं कल्पना प्रधान हैं और इनके दूसरी रचनाएं जीवन की कठोरता का चित्रण करने वाली यथार्थवादी

तीसरा युग आध्यात्मवादी कविताओं का है। इस काल की कविताओं पर अरविंद के जीवन-दर्शन का प्रभाव है। ये रचनाएं चिंतन प्रधान हैं।

पंत जी की भाषा विशुद्ध हिन्दी है। उसमें संस्कृत शब्दों की प्रचुरता है। पंत जी ने जब लिखना प्रारम्भ किया था तब खड़ी बोली में काव्य-रचना तो होने लगी थी पर उसमें मधुरता नहीं थी। पंत जी ने खड़ी बोली की कर्कशता और रूखेपन को दूर कर उसे ब्रजभाषा के समान सरस, मधुर और कोमल बनाया। पंत जी की भाषा इतनी सशक्त और सम्पन्न है कि वह सूक्ष्म से सूक्ष्म भावों को सहजता से चित्रित कर देती है। मैथिलीशरण गुप्त ने कविता के क्षेत्र में खड़ी बोली का प्रवेश कराया तो पंत ने कोमल रूप प्रदान कर उसे संवारा है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अन्योक्ति, समासोक्ति आदि अलंकारों के अतिरिक्त उनके काव्य में अंग्रेजी शैली के मानवीकरण, विशेषण विपर्यय आदि नये अलंकारों का भी प्रयोग हुआ है। पंत हिन्दी कविता के गौरव-स्तम्भ हैं।

भारत माता—

(संकलित कविता पंत जी के 'ग्राम्या' काव्य-संकलन से ली गई है। कवि ने भारत माता को ग्रामवासिनी कह कर हमारे देश के उन छोटे-छोटे गांवों में भारत माता का निवास बतलाया है जो दरिद्रता और अज्ञान से घिरे हुए हैं। यह कविता परतंत्र भारत [illegible] ई थी। परतं[illegible]

भारतमाता ग्रामवासिनी।

खेतों में फैला है श्यामल
धूल भरा मैला सा आंचल,
गंगा-यमुना में आंसू जल,

मिट्टी की प्रतिमा उदासिनी।

दैन्य जड़ित अपलक नत चितवन,
अधरों में चिर नीरव रोदन,
युग युग के तम से विषण्ण मन।

वह अपने घर में प्रवासिनी।

तीस कोटि संतान नग्न तन
अर्ध क्षुधित, शोषित, निरस्त्र जन,
मूढ़, असभ्य, अशिक्षित, निर्धन,

नतमस्तक, तरुतल, निवासिनी।

स्वर्ण शस्य पर पद-तल लुंठित,
धरती सा सहिष्णु मन कुंठित,
क्रन्दन कंपित अधर मौन स्मित,

राहु-ग्रसित, शरदेन्दु हासिनी।

चिंतित भृकुटि क्षितिज तिमिरांकित
नमित नयन नभ वाष्पाच्छादित,
आनन-श्री छाया-शशि उपमित,

ज्ञान मूढ़ गीता प्रकाशिनी।

सफल आज उसका तप संयम
पिला अहिंसा स्तन्य सुधोपम
हरती जन मन-भ्रम, भव-तम-भ्रम

जग जननी, जीवन विकासिनी।

पर्वत-प्रदेश में पावस

[[illegible] पंत प्रकृति के सुकुमार कवि कहे जाते हैं। कूर्माचल प्रदेश के प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण आपने एक चतुर चितेरे की भांति किया है।

तीसरा युग आध्यात्मवादी कविताओं का है। इस काल की कविताओं पर अरविंद के जीवन-दर्शन का प्रभाव है। ये रचनाएं चिंतन प्रधान हैं।

पंत जी की भाषा विशुद्ध हिन्दी है। उसमें संस्कृत शब्दों की प्रचुरता है। पंत जी ने जब लिखना प्रारम्भ किया था तब खड़ी बोली में काव्य-रचना तो होने लगी थी पर उसमें मधुरता नहीं थी। पंत जी ने खड़ी बोली की कर्कशता और रूखेपन को दूर कर उसे ब्रजभाषा के समान सरस, मधुर और कोमल बनाया। पंत जी की भाषा इतनी सशक्त और सम्पन्न है कि वह सूक्ष्म से सूक्ष्म भावों को सहजता से चित्रित कर देती है। मैथिलीशरण गुप्त ने कविता के क्षेत्र में खड़ी बोली का प्रवेश कराया तो पंत ने कोमल रूप प्रदान कर उसे संवारा है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अन्योक्ति, समासोक्ति आदि अलंकारों के अतिरिक्त उनके काव्य में अंग्रेजी शैली के मानवीकरण, विशेषण विपर्यय आदि नये अलंकारों का भी प्रयोग हुआ है। पंत हिन्दी कविता के गौरव-स्तम्भ हैं।

भारत माता—

(संकलित कविता पंत जी के 'ग्राम्या' काव्य-संकलन से ली गई है। कवि ने भारत माता को ग्रामवासिनी कह कर हमारे देश के उन छोटे-छोटे गांवों में भारत माता का निवास बतलाया है जो दरिद्रता और अज्ञान से घिरे हुए हैं। यह कविता परतंत्र भारत में लिखी गई थी। परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ी भारत माता को कवि ने उदासिनी और प्रवासिनी कहा है। कवि का कहना है कि जब तक इसकी संतानें भूख, गरीबी, अशिक्षा, अज्ञान और शोषण से मुक्त नहीं हो जाती तब तक भारत माता को भला सुख कैसे मिल सकता है? अहिंसा के मार्ग को अपना कर भारत माता ने दुनिया को नये-युग का प्रकाश दिया है, यह बात अन्तिम चरण में कही गई है।

कविता की भाषा संस्कृतमय है। पंत का शब्द-शिल्प इस कविता में सुन्दर बन पड़ा है। शब्दों की प्रतीक योजना और उपमा तथा रूपक अलंकारों के प्रयोग से कविता का सौंदर्य बढ़ गया है।)

भारतमाता ग्रामवासिनी ।
    खेतों में फैला है श्यामल
    धूल भरा मैला सा आंचल,
    गंगा-यमुना में आंसू जल,
मिट्टी की प्रतिमा उदासिनी ।
    दैन्य जड़ित अपलक नत चितवन,
    अधरों में चिर नीरव रोदन,
    युग युग के तम से विषण्ण मन ।
वह अपने घर में प्रवासिनी ।
    तीस कोटि संतान नग्न तन
    अर्ध क्षुधित, शोषित, निरस्त्र जन,
    मूढ़, असभ्य, अशिक्षित, निर्धन,
नतमस्तक, तरुतल, निवासिनी ।
    स्वर्ण शस्य पर पद-तल लुंठित,
    धरती सा सहिष्णु मन कुंठित,
    क्रन्दन कंपित अधर मौन स्मित,
राहु-ग्रसित, शरदेन्दु हासिनी ।
    चिंतित भृकुटि क्षितिज तिमिरांकित
    नमित नयन नभ वाष्पाच्छादित,
    आनन-श्री छाया-शशि उपमित,
ज्ञान गूढ़ गीता प्रकाशिनी ।
    सफल आज उसका तप संयम
    पिला अहिंसा स्तन्य सुधोपम
    हरती जन मन-भ्रम, भव-तम-भ्रम
जग जननी, जीवन विकासिनी ।

पर्वत-प्रदेश में पावस

[...] पंत प्रकृति के सुकुमार कवि कहे जाते हैं। कूर्मांचल प्रदेश के [...]तिक दृश्यों का चित्रण आपने एक चतुर चितेरे की भांति किया है।

कवि की इन कविताओं को पढ़कर प्रकृति का रूप साकार हो जाता है। प्रस्तुत कविता, कवि की छायावादी रचनाओं में से एक श्रेष्ठ रचना है। छायावादी शैली की यह विशिष्टता है कि कवि प्रकृति का मानवीकरण करता है। प्रस्तुत कविता में यह विशेषता दृष्टव्य है।)

पावस ऋतु थी, पर्वत प्रदेश
पल पल परिवर्तित प्रकृति-वेश।

मेखलाकार पर्वत अपार,
अपने सहस्र दृग-सुमन फाड़,
अवलोक रहा है बार बार
नीचे जल में निज महाकार।

—जिसके चरणों में पड़ा ताल
दर्पण सा फैला है विशाल।

गिरि का गौरव गाकर झरझर
मद से नस नस उत्तेजित कर,
मोती की लड़ियों से सुन्दर
झरते हैं झाग भरे निर्झर।

गिरिवर के उर से उठ उठ कर
उच्चाकांक्षाओं-से तरुवर,
हैं झांक रहे नीरव नभ पर
अनिमेष, अटल, कुछ चिन्ता पर।

—उड़ गया अचानक, लो भू-धर
फड़का अपार पारद के पर।
रव शेष रह गए हैं निर्झर
है टूट पड़ा भू पर अंबर.

धंस गये धरा में सभय शाल
उठ रहा धुआं, जल गया ताल,
—यों जलद-यान में विचर विचर
था इन्द्र खेलता, इन्द्रजाल।

वन की सूनी डाली पर

(प्रस्तुत कविता में कवि ने दार्शनिक के रूप में इस नश्वर संसार में दुःख में भी सुख की अनुभूति करने की प्रेरणा दी है । कवि को प्रकृति के विभिन्न रूपों में अपनी इस दार्शनिक विचारधारा की पुष्टि मिलती है । वह कुसुमों से हंसना, खिलना और कलियों से मुस्कराना तथा कांटों भरी डालियों से भी सुख की लाली चुनने की प्रेरणा देता है ।)

कुसुमों के जीवन का पल
हंसता ही जग में देखा ।
इन म्लान मलिन अधरों पर
स्थिर रहीन स्मिति की रेखा ।

वन की सूनी डाली पर
सीखा कलि ने मुस्काना ।
मैं सीख न पाया अब तक
सुख से दुख को अपनाना ।

कांटों से कुटिल भरी हो
यह जटिल जगत की डाली ।
इस में ही तो जीवन के
पल्लव की फूटी लाली ।

अपनी डाली के कांटे
बेधते नहीं अपना तन ।
सोने सा उज्जवल बनने
तपता नित प्राणों का धन ।

दुःख-दावा से नव अंकुर
पाता जग-जीवन का वन ।
करुणार्द्र विश्व की गर्जन
बरसाती नव-जीवन कण ।

अभ्यास के प्रश्न

नोट : [illegible] नीचे कुछ प्रश्न दिये जा रहे हैं । उत्तर के निमित्त [illegible]

में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का क्रमाक्षर दांई ओर के कोष्ठक में लिखिए—

प्र० १. 'भारतमाता' कविता में भारत माता को 'ग्राम वासिनी' कह कर क्यों सम्बोधित किया है ?

(क) भारत में ग्रामों की अनगिनित संख्या है। (ख) भारत की अधिकांश जनता ग्रामवासिनी है। (ग) ग्रामजीवन ही भारत का वास्तविक जीवन है। (घ) ग्रामवासिनियां और भारत माता दोनों निर्धन है। (च) भारत मां भी ग्राम-स्त्रियों की ही तरह उपेक्षित है। ( )

प्र० २. 'भारत मां को' 'मिट्टी की प्रतिमा उदासिनी' कह कवि आपके मन में किस भाव की सृष्टि करना चाहता है—

(क) दीनता। (ख) करुणा। (ग) दया। (घ) क्षोभ। (च) क्रोध। ( )

प्र० ३. भारत माता की तुलना 'प्रवासिनी' से क्यों की है ?

(क) परिचितों के बीच अपरिचित-सी लगने के कारण। (ख) अपने ही लोगों से तिरस्कृत किए जाने के कारण। (ग) परिचितों के बीच एकान्त का कष्ट भोगने के कारण। (घ) अपरिचितों का सा-मौन रखने के कारण। (च) अपरिचितों की सी मर्यादा रखने के कारण। ( )

प्र० ४. 'नमित नयन नभ वाष्पाच्छादित' पंक्ति का शुद्ध अर्थ क्या है ?

(क) आंखें झुकी हैं और आकाश में बादल छाये हैं। (ख) अश्रु पूरित नेत्रों से आकाश धुंधला लग रहा है। (ग) वर्षाऋतु का आकाश आंखों के सामने झुक गया है। (घ) आंखों का आकाश आंसुओं से परिपूर्ण है। (च) आकाश धुंए से ढक गया है और आंखों में आंसू हैं।

प्र० ५. पंत की पठित कविताओं के आधार पर, कौन सी विशेषता सबसे अधिक स्पष्ट होती है ?

(क) उनकी भाषा, भाव के अनुरूप होती है। (ख) वे प्रकृति के सुकुमार कवि हैं। (ग) उन्होंने दलित-पीड़ित मानवता का सरस चित्रण किया है। (घ) उनका अलंकार प्रयोग नितांत मौलिक है।

(घ) उन्होंने हिन्दी कविता को नया छंद विधान दिया है।

६. 'पर्वत-प्रदेश में पावस' कविता में कवि ने प्रकृति को किस रूप में चित्रित किया है ?

(क) मानव के रूप में। (ख) देवता के रूप में। (ग) देवी के रूप में। (घ) विशाल दैत्य के रूप में। (च) विश्व-नियन्ता के रूप में।

७. 'जिसके चरणों में पड़ा ताल दर्पण सा फैला है विशाल।' इस पंक्ति में ताल को दर्पण की उपमा क्यों दी गई है ?

(क) उसकी विशालता के कारण। (ख) जल की स्वच्छता के कारण। (ग) जल की चमक के कारण। (घ) पर्वत के नीचे स्थित होने के कारण। (च) जल की गहराई के कारण।

८. 'मन की सूनी डाली पर' कविता ने कवि को क्या प्रेरणा दी है ?
(क) संसार में मनुष्य को सदा प्रसन्न रहना चाहिए। (ख) दुःख के क्षण में कभी नहीं घबराना चाहिए। (ग) दूसरों को सुखी बनाकर ही आनंद का अनुभव करना चाहिए। (घ) सुख के साथ दुःख को भी स्वीकार करना चाहिए। (च) दुःख से पीड़ित होकर ही मनुष्य महान बनता है।

९. 'उच्चाकांक्षाओं' की तुलना कवि ने तरुवर से क्यों की है ? उत्तर सीमा २० शब्द।

१०. कांटों से भरी डाली से कवि क्या शिक्षा प्राप्त करता है ? उत्तर १० शब्दों में लिखिए।

११. कवि ने दुःखों से 'नव अंकुर' प्राप्त करने की बात क्यों कही है ? इतिहास से एक दो उदाहरण देकर इस तथ्य की पुष्टि कीजिए। शब्द सीमा १०० शब्द।

१२. नीचे लिखी उपमाओं की सार्थकता पर अपने विचार लगभग १०० शब्दों में प्रकट कीजिए—

(क) [illegible] सुमन फाड़ (ख) मोती की लड़ियों से............ [illegible]। (ग) उड़ गया............पारद के पर। (घ) सोने सा

उज्ज्वल............प्राणों का धन । (च) जिसके चरणों.........
है विशाल ।

प्र० १३. राहु तथा चन्द्र की अन्तर्कथा लगभग ५० शब्दों में वर्णन
कीजिए ।

प्र० १४. निम्न पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए :—
(क) दैन्य जड़ित अपलक नत चितवन (ख) नत मस्तक तरु-तल
निवासिनी (ग) धरती सा सहिष्णु मन कुंठित (घ) चिंतित भृकुटि
क्षितिज तिमिरांकित (च) राहु ग्रसित शरदेन्दु-हासिनी

प्र० १५. अलंकार बताइये —
(क) धरती-सा सहिष्णु मन कुंठित (उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, श्लेष)
(ख) अपनी आंखों का अनुभव (वृत्यानुप्रास, छेकानुप्रास, लाटानुप्रास)
(ग) नमित नयन नभ-वाष्पाच्छादित (उपमा, रूपक, श्लेष
लाटानुप्रास) (घ) यों जलद-यान में विचर-विचर (रूपक, उपमा, श्लेष
उत्प्रेक्षा) (च) मोती की लड़ियों से सुन्दर (उत्प्रेक्षा, उपमा, रूपक
श्लेष)

प्र० १६. 'भारत माता' कविता को आधार बना कर 'आधुनिक भारत'
का १०० शब्दों में एक शब्द-चित्र दीजिए ।

प्र० १७. पंत की ये तीन कवितायें निम्न कोटियों में से किस कोटि में आती
हैं और क्यों ? लगभग १०० शब्दों में उत्तर दीजिए—
(१) प्रारंभ की कवितायें। (२) सौंदर्यवादी कवितायें। (३)
यथार्थवादी कवितायें। (४) आध्यात्मवादी कवितायें। (५) परिवर्तन
युग की कवितायें।

प्र० १८. संकलित कविताओं में से किन कविताओं के आधार पर हम
सुमित्रानन्दन पंत को छायावादी कवि कह सकते हैं और क्यों ? उत्तर
सीमा १०० शब्द ।

---

१२. माखनलाल चतुर्वेदी

जन्म : सन् १८८८ ई०
मृत्यु : सन् १९६७ ई०

जीवन परिचय—

माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के बावई ग्राम में हुआ था। नार्मल परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ये अध्यापक बने और इसी समय इन्होंने हिन्दी के साथ मराठी, गुजराती, अंग्रेजी आदि भाषाओं का अध्ययन किया। लोकमान्य तिलक के आदर्श और माधवराव सप्रे की शिक्षाओं से प्रेरित होकर इन्होंने राष्ट्र-सेवा और राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश किया। मदनमोहन मालवीय और गांधी जी के प्रभाव से ये कांग्रेस की ओर उन्मुख हुए। इन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेकर अनेक बार जेल-यात्रा भी की। इन्होंने 'प्रताप', 'प्रभा' एवं 'कर्मवीर' जैसे राष्ट्रीय ख्याति के साप्ताहिक पत्रों का वर्षों तक सफलता के साथ सम्पादन किया। हरिद्वार में होने वाले हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आप सभापति निर्वाचित हुए। उस समय आपको रजत-मुद्राओं से तोला गया था। 'हिम-किरीटिनी' काव्य-संग्रह पर इन्हें 'देव-पुरस्कार' प्राप्त हुआ। इसी रचना पर साहित्य-अकादमी ने भी पाँच हजार रुपये का पुरस्कार दिया। आपने 'एक भारतीय आत्मा' के छद्म-नाम से कविताएँ लिखी हैं। साहित्य सेवा के लिए सागर विश्वविद्यालय ने आपको डी० लिट० की मानद उपाधि से तथा भारत सरकार ने पद्मभूषण से अलंकृत किया।

रचनाएँ—

काव्य-संग्रह—हिम-किरीटिनी, हिम-तरंगिनी, माता, वेणु लो ! गूंजे धरा, बीजुरी काजल आँज रही।

गद्य काव्य—साहित्य-देवता।

कहानी-संग्रह—कलावती, कला का अनुवाद।

उज्जवल..........प्राणों का घन। (घ) जिसके चरणों.........
है विशाल।

प्र० १३. राहु तथा चन्द्र की अन्तर्कथा लगभग ५० शब्दों में वर्णित कीजिए।

प्र० १४. निम्न पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए :—
(क) दैन्य जड़ित अपलक नत चितवन (ख) नत मस्तक तरु-तल निवासिनी (ग) धरती सा सहिष्णु मन कुंठित (घ) चिंतित भृकुटि क्षितिज तिमिरांकित (च) राहु ग्रसित शरदेन्दु-हासिनी

प्र० १५. अलंकार बताइये —
(क) धरती-सा सहिष्णु मन कुंठित (उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, श्लेष) (ख) अपनी आंखों का अनुभव (वृत्यानुप्रास, छेकानुप्रास, लाटानुप्रास) (ग) नमित नयन नभ-वाष्पाच्छादित (उपमा, रूपक, श्लेष, लाटानुप्रास) (घ) यों जलद-यान में विचर-विचर (रूपक, उपमा, श्लेष, उत्प्रेक्षा) (च) मोती की लड़ियों से सुन्दर (उत्प्रेक्षा, उपमा, रूपक, श्लेष)

प्र० १६. 'भारत माता' कविता को आधार बना कर 'आधुनिक भारत' का १०० शब्दों में एक शब्द-चित्र दीजिए।

प्र० १७. पंत की ये तीन कवितायें निम्न कोटियों में से किस कोटि में आती हैं और क्यों? लगभग १०० शब्दों में उत्तर दीजिए—
(१) प्रारंभ की कवितायें। (२) सौंदर्यवादी कवितायें। (३) यथार्थवादी कवितायें। (४) आध्यात्मवादी कवितायें। (५) परिवर्तन युग की कवितायें।

प्र० १८. संकलित कविताओं में से किन कविताओं के आधार पर हम सुमित्रानन्दन पंत को छायावादी कवि कह सकते हैं और क्यों? उत्तर सीमा १०० शब्द।

१२ माखनलाल चतुर्वेदी

जन्म : सन् १८८८ ई०
मृत्यु : सन् १९६७ ई०

जीवन परिचय—

माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के बाबई ग्राम में हुआ था। नार्मल परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ये अध्यापक बने और इसी समय इन्होंने हिन्दी के साथ मराठी, गुजराती, अंग्रेजी आदि भाषाओं का अध्ययन किया। लोकमान्य तिलक के आदर्श और माधवराव सप्रे की शिक्षाओं से प्रेरित होकर इन्होंने राष्ट्र-सेवा और राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश किया। मदनमोहन मालवीय और गांधी जी के प्रभाव से ये कांग्रेस की ओर आकृष्ट हुए। इन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेकर अनेक बार जेल-यात्रा भी की। इन्होंने 'प्रताप', 'प्रभा' एवं 'कर्मवीर' जैसे राष्ट्रीय ख्याति के साप्ताहिक पत्रों का वर्षों तक सफलता के साथ सम्पादन किया। हरिद्वार में होने वाले हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आप सभापति निर्वाचित हुए। उस समय आपको रजत-मुद्राओं से तोला गया था। 'हिम-किरीटिनी' काव्य-संग्रह पर इन्हें 'देव-पुरस्कार' प्राप्त हुआ। इसी रचना पर साहित्य-अकादमी ने भी पाँच हजार रुपये का पुरस्कार दिया। आपने 'एक भारतीय आत्मा' के छद्म-नाम से कविताएँ लिखी हैं। साहित्य सेवा के लिए सागर विश्वविद्यालय ने आपको डी० लिट० की मानद उपाधि से तथा भारत सरकार ने पद्मभूषण से अलंकृत किया।

रचनाएँ—

काव्य-संग्रह—हिम-किरीटिनी, हिम-तरंगिनी, माता, वेणु लो! गूंजे धरा, बीजुरी काजल आँज रही।

गद्य काव्य—साहित्य-देवता।

कहानी-संग्रह—[illegible], कला का अनुवाद।

नाटक—कृष्णार्जुन युद्ध।

काव्यगत विशेषताएँ—

चतुर्वेदी जी की कविता का मूल स्वर राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत है। त्याग और बलिदान की भावना आपकी राष्ट्रीय कविताओं का प्राण है। इसके अतिरिक्त इन्होंने प्रेम और प्रकृति सम्बन्धी कविताएँ भी लिखी हैं। भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन को वाणी प्रदान करने वाले कवियों में इनका प्रमुख स्थान है। प्रारम्भ में क्रान्तिकारी होने के कारण इनकी कविता में विद्रोह की भावना भी मिलती है। कहीं-कहीं रहस्यवादियों जैसी कठिनता भी उनकी कविताओं में दिखाई देती है। उन्होंने राष्ट्र की कल्पना मुख्यतः माता के रूप में की है। उनका ध्यान कविता के मूल भाव पर केन्द्रित रहा। अतः कविता के बाह्य बन्धनों को उन्होंने पूरी तरह स्वीकार नहीं किया है। छन्दविधान में नवीनता लाने के लिए इन्होंने कई छन्दों को मिलाकर नवीन छन्द-योजना भी की है। उनके काव्य में कहीं ज्वालामुखी का धधकता स्वर पौरुष की हुंकार है तो कहीं करुणा की अजीब दर्द भरी मनुहार।

आपकी भाषा खड़ी बोली है जिसमें संस्कृत शब्दावली के साथ-साथ उर्दू तथा फ़ारसी के शब्दों का प्रयोग भी किया है। उनकी भाषा सामान्यतः सीधी, सरल, ओजस्वी तथा लाक्षणिकता और व्यंजकता से परिपूर्ण है। उन्होंने जब-तब संस्कृत शब्दों के बीच उर्दू-शब्दों का भी मुक्त प्रयोग किया है। भाषा की स्वच्छन्दता के कारण कहीं-कहीं दुरूहता भी आई है। वस्तुतः कवि ने अभिव्यक्ति को महत्त्वपूर्ण समझा है और इसीलिए भाषा-नियमों की बहुत चिंता नहीं की है। उनके भाषागत प्रयोग चाहे सामान्यतः स्वीकृत न हुए हों, पर उनकी मौलिकता में सन्देह नहीं किया जा सकता। शब्द चयन में उन्होंने तत्सम या तद्भव का बन्धन स्वीकार नहीं किया है। उपमाओं, उत्प्रेक्षाओं और रूपकों के भाव-सिक्त प्रवाह में बहा ले जाने की अद्भुत क्षमता उनके काव्य में है)।

बलिदान—

(यह कविता त्याग एवं समर्पण की भावना को लेकर लिखी गई है। जब तक किसी का त्याग नहीं होता तब तक इच्छित फल की प्राप्ति भी

नहीं होता। बीज का त्याग वृक्ष के रूप में फलित होता है। सिपाही का बीरतारण शत्रु-विजय के रूप में सामने आता है। अपना बलिदान देने वालों को भविष्य के फल का चाहे ज्ञान नहीं हो पाता हो किन्तु सारा संसार उनके बलिदान का यशोगान करता है।

कविता की भाषा सुबोध और भाव गम्भीर हैं। ओजमयी शैली ने कविता के सौन्दर्य को बढ़ा दिया है।)

१

बीज जब मिट्टी में मिल जाय
वृक्ष तब उगता है हे मित्र!
कलम की स्याही गिरती जाय
पत्र पर उठता जाता चित्र।

नदी नद सब जल के भंडार
चढ़ा देते हैं अपना रक्त।
अहा! तब कहीं मधुरता बूंद
मेघ से पाते वर्षा भक्त।

सफलता पाई अथवा नहीं
उन्हें क्या ज्ञात! दे चुके प्राण।
विश्व को चाहिए उच्च विचार
नहीं केवल अपना बलिदान।

२

बिगुल बज गया, चली सब सैन्य,
धरा भी होने लगी अधीर।
खाइयाँ खोदी रिपु ने हाय!
पार हों कैसे सैनिक वीर।

चूर दे उनको हिरे चूर
शरीरों से दे दिये शरीर।
इधर जो सेनापति ने कहा
उधर बढ़ गये सहस्रों वीर।

समय पर किया शत्रु का नाश
देव ने स्वाहा पाया प्राण।
शिव वीरों ने छेड़ी तान
अहा! बलिदान, धन्य बलिदान।

सिपाही—

(प्रस्तुत कविता निष्काम भाव से काम करते रहने और अनुशासन में रहकर आज्ञा पालन करने का संदेश देती है। सिपाही का जीवन, त्याग और बलिदान का जीवन होता है। इतिहास उसे याद नहीं रखता और संसार उसके त्याग को शीघ्र भूल जाता है। वह तो निःस्पृह भाव से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता जाता है। अपने सेनापति के हर आदेश पर प्राणों की बाजी लगा देना वह अपना कर्त्तव्य समझता है।

कविता में सिपाही की कर्तव्य परायणता और त्यागमय जीवन का चित्रण है। कविता की भाषा सरल और भाव प्रेरणादायी है।)

१

गिनो न मेरी श्वास, छुए
क्यों, मुझे विपुल सम्मान ?
भूलो ऐ इतिहास
खरीदे हुए विश्व-ईमान।

अरि मुंडों का दान
रक्त-तर्पण भर का अभिमान।
लड़ने तक महमान
एक पूंजी है तीर-कमान।

मुझे भूलने में सुख पाती
जग की काली स्याही।
दासों, दूर! कठिन सौदा है,
मैं हूँ एक सिपाही।

२

क्या वीणा की स्वर लहरी का
सुनूं मधुरतर नाद ?
छिः ! मेरी प्रत्यंचा भूले
अपना यह उन्माद ।

झंकारों का कभी सुना है
भीषण वाद - विवाद ?
क्या तुम को है कुरुक्षेत्र,
हल्दी घाटी की याद ?

सिर पर प्रलय, नेत्र में मस्ती,
मुट्ठी में मनचाही ।
लक्ष्य-मात्र मेरा प्रियतम है,
मैं हूँ एक सिपाही ।

३

ढोल धरे, सेनापति मेरे,
मन की घुंडी खोल ।
जल-थल, नभ हिलडुल जाने दे
तू किंचित मत डोल ।

दे हथियार या कि मत दे तू,
पर तू कर हुंकार ।
ज्ञातों को मत, अज्ञातों को
तू इस बार पुकार ।

धीरज, रोग, प्रतीक्षा, चिन्ता
सपने बने तबाही ।
कह 'तैयार', द्वार खुलने दे
मैं हूँ एक सिपाही ।

[illegible] के प्रश्न

* —[illegible] के [illegible] लिये गए हैं । [illegible]

क्रमाक्षर दांयी ओर के कोष्ठक में अंकित कीजिये–

प्र० १. प्रस्तुत कविता में वृक्ष के उगने के पीछे किस का बलिदान छिपा है ?
(क) माली का। (ख) बीज का। (ग) मिट्टी का। (घ) पानी का
(च) हवा का। ( )

प्र० २. कवि के अनुसार बलिदान देने वाले किस बात की चिन्ता नहीं करते ?
(क) प्राणों की। (ख) सफलता-असफलता की। (ग) सुख-दुःख की
(घ) कुटुम्बियों की। (च) मित्रों की। ( )

प्र० ३. 'सिपाही' शीर्षक कविता की रचना कवि ने किस भावना से प्रेरित होकर की है ?
(क) कर्त्तव्य-परायणता। (ख) देश-प्रेम। (ग) अनुशासन-प्रियता
(घ) निश्चितता। (च) आत्म-सम्मान। ( )

प्र० ४. निम्न पंक्तियों का आशय ३० शब्दों में स्पष्ट कीजिये—
(क) विश्व को चाहिए उच्च विचार, नहीं केवल अपना बलिदान।
(ख) बोल अरे सेनापति ! मन की घुंडी खोल। (ग) भूलो है इतिहास, खरीदे हुए विश्व-ईमान। (घ) ज्ञातों को मत, अज्ञातों को, तू इस बार पुकार। (च) छिः मेरी प्रत्यंचा भूले अपना यह उन्माद।

प्र० ५. 'बलिदान' शीर्षक कविता में कवि ने बलिदान का महत्त्व किस तरह प्रतिपादित किया है ? उत्तर ३० शब्दों में दीजिये।

प्र० ६. सिपाही, सेनापति को सम्बोधित करते हुए क्या भाव प्रकट कर रहा है ? उत्तर २० शब्दों में दीजिये।

प्र० ७. निम्न शब्दों के तीन-तीन पर्याय लिखो—
मित्र, स्याही, रक्त, मेघ, रिपु, शूर, सम्राट।

प्र० ८. निम्न शब्दों के विलोम लिखिये—
सफलता, ज्ञात, उच्च, अधीर, नाश, देव, सम्मान, स्मृति।

प्र० ९. संकलित दोनों कविताओं के आधार पर 'त्याग और बलिदान' पर १०० शब्दों में अपने विचार प्रकट कीजिये।

प्र० १०. राष्ट्रीय-कवि के रूप में माखनलाल चतुर्वेदी की काव्यगत विशेषताओं का परिचय १५० शब्दों में दीजिये।

१३. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

जन्म : १८९७ ई०
मृत्यु : १९६० ई०

जीवन परिचय—

नवीन जी का जन्म ग्वालियर राज्य के भयाना नामक ग्राम में हुआ था। बाल्यावस्था में कुछ दिन नाथद्वारा में रहने के बाद उनकी शिक्षा-दीक्षा शाजापुर, उज्जैन और कानपुर में हुई। गांधी जी की प्रेरणा से उन्होंने बी० ए० की पढ़ाई अधूरी छोड़ दी और सत्याग्रह आन्दोलन में सम्मिलित हो गये। देश की व्यवहारिक राजनीति से उनका घनिष्ठ संबंध रहा। वे भारतीय संविधान निर्मात्री परिषद् के सदस्य रहे। हिन्दी को राजभाषा बनाने में उनका बड़ा योग रहा। वे राजभाषा-आयोग और भारतीय संसद के सदस्य भी रहे। नवीन जी स्वभाव से उदार, फक्कड़ और मस्त तबियत के थे। 'प्रताप' और 'प्रभा' नामक राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं का उन्होंने वर्षों सम्पादन किया।

कृतियां—

नवीन जी की मुख्य काव्य-कृतियां इस प्रकार हैं—

उर्मिला, कुंकुम, रश्मि-रेखा, अपलक, क्वासि, विनोबा-स्तवन, प्राणार्पण, आदि।

काव्यगत विशेषताएं—

नवीन जी की कविता का मूल स्वर आक्रोश का है। उस में वैष्णव संस्कारों की आध्यात्मिकता और राष्ट्रीयता का विद्रोही स्वर भी सम्मिलित है। नवीन युग के क्रान्तिकारी कवि थे। आप की रचनाएं राष्ट्रीय-जागरण, नव-चेतना और नये आवेग से ओत-प्रोत हैं। उन में क्रान्ति का स्वर, और उन्माद का अनुघोष है। कहीं-कहीं निराशा का वेग भी इतना प्रबल हो जाता है कि कवि नियति एवं प्रकृति, सब को नष्ट करने का आह्वान

करता है। "कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल पुथल मच जाये", उनकी इसी प्रकार की कविता है। स्वाभाविकता, सरलता, सरसता तथा प्रभावशीलता ने मिल कर उनकी कविताओं में ओजस्विता भर दी है।

नवीन, राष्ट्रीय-वीर-काव्य के प्रणेताओं में से मुख्य रहे हैं। ब्रजभाषा नवीन जी की मातृभाषा थी और उनके प्रत्येक ग्रंथ में ब्रजभाषा के छंद भी सम्मिलित हैं। राष्ट्रीय आंदोलन के सक्रिय कार्यकर्त्ता होने के कारण उन की रचनाओं में विद्रोह एवं जागरण के स्वर मिलते हैं। इसके अतिरिक्त प्रेम-विरह की व्यंजना भी उनके काव्य में हुई है। छायावादी युग में उन्होंने काव्य-रचना की, किन्तु वैसी भावुकता और आकाशी-कल्पना से उन्होंने अपने काव्य को मुक्त रखा है। कहीं कहीं रहस्यवादी भावनाओं ने उनके काव्य को गूढ़ एवं अस्पष्ट भी बनाया है। ओजमयी शैली, स्वाभाविक भाषा-प्रवाह तथा क्रांति एवं विद्रोह के स्वर ने, उनके काव्य को गरिमा दी है। बाद के कवियों जैसे बच्चन, नरेन्द्र शर्मा, दिनकर, अंचल आदि के काव्य पर नवीन जी का पर्याप्त प्रभाव लक्षित होता है।

जूठे पत्ते—

(प्रस्तुत कविता में कवि ने गरीबी और भूख से पीड़ित मनुष्य की दयनीय स्थिति का चित्रण करते हुए, मन के आक्रोश को प्रकट किया है। जूठे पत्ते चाटते, गरीबों को देख कर उसका मन विद्रोह कर उठता है और वह ईश्वर तक का गला दबा देने की सोचने लगता है। ईश्वर की सृष्टि में यह विषमता उसे क्रुद्ध करती है। भूख और अज्ञान का वीभत्स रूप देख कर रोने वालों को वह कायर समझता है और उन्हें धिक्कारता है। कविता की भाषा सरल और शैली ओजमयी है।)

(१)

क्या देखा है तुमने नर को, नर के आगे हाथ पसारे ?
क्या देखे हैं तुमने उसकी, आंखों में खारे-फ़ौव्वारे ?
देखा है ? फिर भी कहते हो, कि तुम नहीं हो विप्लवकारी।
लपक चाटते जूठे पत्ते, जिस दिन मैंने देखा नर को।
उस दिन सोचा, क्यों न लगा दूं, आज आग में दुनिया भर को।

करता है। "कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल पुथल मच जाये", उनकी इसी प्रकार की कविता है। स्वाभाविकता, सरलता, सरसता तथा पदहृदयग्राहीता ने मिल कर उनकी कविताओं में ओजस्विता भर दी है।

नवीन, राष्ट्रीय-वीर-काव्य के प्रणेताओं में से मुख्य रहे हैं। ब्रजभाषा नवीन जी की मातृभाषा थी और उनके प्रत्येक ग्रंथ में ब्रजभाषा के छंद भी सम्मिलित हैं। राष्ट्रीय आंदोलन के सक्रिय कार्यकर्त्ता होने के कारण उन की रचनाओं में विद्रोह एवं जागरण के स्वर मिलते हैं। इसके अतिरिक्त प्रेम-विरह की व्यंजना भी उनके काव्य में हुई है। छायावादी युग में उन्होंने काव्य-रचना की, किन्तु वैसी भावुकता और आकाशी-कल्पना से उन्होंने अपने काव्य को मुक्त रखा है। कहीं कहीं रहस्यवादी भावनाओं ने उनके काव्य को गूढ़ एवं अस्पष्ट भी बनाया है। ओजमयी शैली, स्वाभाविक भाषा-प्रवाह तथा क्रांति एवं विद्रोह के स्वर ने, उनके काव्य को गरिमा दी है। बाद के कवियों जैसे बच्चन, नरेन्द्र शर्मा, दिनकर, अंचल आदि के काव्य पर नवीन जी का पर्याप्त प्रभाव लक्षित होता है।

जूठे पत्ते—

(प्रस्तुत कविता में कवि ने गरीबी और भूख से पीड़ित मनुष्य की दयनीय स्थिति का चित्रण करते हुए, मन के आक्रोश को प्रकट किया है। जूठे पत्ते चाटते, गरीबों को देख कर उसका मन विद्रोह कर उठता है और वह ईश्वर तक का गला दबा देने की सोचने लगता है। ईश्वर की सृष्टि में यह विषमता उसे क्रुद्ध करती है। भूख और अज्ञान का वीभत्स रूप देख कर रोने वालों को वह कायर समझता है और उन्हें धिक्कारता है। कविता की भाषा सरल और शैली ओजमयी है।)

(१)

क्या देखा है तुमने नर को, नर के आगे हाथ पसारे ?
क्या देखें हैं तुमने उसकी, आंखों में खारे-फ़ौव्वारे ?
देखा है ? फिर भी कहते हो, कि तुम नहीं हो विप्लवकारी।
लपक चाटते जूठे पत्ते, जिस दिन मैंने देखा नर को।
उस दिन सोचा, क्यों न लगा दूं, आज आग मैं दुनिया भर को।

वह भी सोचा, क्यों न टेंटुआ घोंटा जाये स्वयं जगपति का ।
जिसने अपने ही स्वरूप को, रूप दिया इस घृणित विकृति का ।

(२)

जगपति कहाँ ? अरे सदियों से, वह तो हुआ राख की ढेरी ।
वरना समता-संस्थापन में, लग जाती क्यों इतनी देरी ?
छोड़ आसरा अलख शक्ति का, रे नर, स्वयं जगत्पति तू है ।
तू यदि जूठे पत्ते चाटे, तो तुझ पर लानत है, थू है ।
कैसा बना रूप यह तेरा, घृणित, दलित, वीभत्स भयंकर ।
नहीं याद क्या तुझको, तू है चिर सुंदर, नवीन, प्रलयंकर ?
भिक्षा पात्र फेंक हाथों से, तेरे स्नायु बड़े बलशाली ।
अभी उठेगा प्रलय नींद से, जरा बजा तू अपनी ताली ।

(३)

ओ भिखमंगे, अरे पतित तू, ओ मजलूम, अरे चिर दोहित ।
तू अखंड-भंडार शक्ति का, जाग अरे निद्रा सम्मोहित ।
प्राणों को तड़पाने वाले, हुंकारों से जल-थल भर दे ।
अनाचार के अंबारों में, अपना ज्वलित पलीता धर दे ।
भूखा देख तुझे उमड़े, आंसू नयनों में जन-जन के ।
तो तू कह दे, नहीं चाहिये, हमको रोने वाले-मन के ।
तेरी भूख, बहालत तेरी, यदि न उभार सके क्रोधानल ।
तो फिर समझूंगा कि हो गयी सारी दुनिया, कायर निर्बल ।

[illegible] नीम—

(नीम के वृक्ष के माध्यम से कवि ने कृषक की दरिद्रता देख कर समाज के शोषण और अनाचार को अपने आक्रोश का लक्ष्य बनाया है ।

कवि ने अन्य राष्ट्रों में होने वाले परिवर्तनों की ओर संकेत करते हुए भारतवासियों के पराक्रम और पौरुष को चुनौती भरे शब्दों में ललकारा है । कवि का यह प्रबल विश्वास है कि 'उसके अपने' ही विद्रोह जाग कर उठेंगे और शुभ-दिन लौट आएंगे ।)

(१)

खड़ा हुआ है एक नीम यह, किसी किसान दीन के द्वारे।
मानो कोई अलख जगाता, सिद्ध खड़ा हो बिना सहारे।
ध्यान-मग्न सा, असंलग्न सा, वीतराग यह वल्कल धारी।
कितना ही दुख-दरद कथाएं, देख चुका है बारी-बारी।
अगणित व्यथा-वेदनाओं के, इसने यहां किये हैं दर्शन।
अगणित बार विलोका इसने, कृषकों के दृग-जल का वर्षण।

(२)

जिस घर के दरवाजे तरु है, वह घर अब सुनसान हुआ है।
सांय-सांय करता है मानो, वह एकांत श्मशान हुआ है।
इस घर नामक खंडहर में जो कृषि-जीवी दम्पति रहते थे।
वो समाज की पीड़ा-शोषण, अनाचार निशिदिन सहते थे।
वे ही अब दुर्भिक्ष-प्रताड़ित, जर्जर-देह, भूख के मारे।
चले गये हैं कहीं-नीम को छोड़ अकेला अपने द्वारे।

(३)

मैं पहुंचा झुटपुटे समय, उस एकाकी तरुवर के नीचे।
कुछ क्षण को मैंने अपने यह, भारी-भारी लोचन मींचे।
नीम उसी क्षण मुझ से बोला, 'ओ गतिमय, दो पैरों वाले।
मुझ निर्गति, मुझ अचल, विवश की, आकर कुछ तो व्यथा बंटा ले।
तू कब तक देखता रहेगा, नित्य उजड़ते यों सब के घर?
कब तक तांडव-नृत्य करेगी, यह विभीषिका इस धरती पर?'

(४)

कभी कभी मेरी डालों पर, दूर देश के पंछी आकर।
उन देशों के जन-परिवर्तन-गायन गाते मुझे सुना कर।
सिहर उठा करता हूं तब मैं, वे बात सुन अन्तरतर में।
पीर निरख अपने मानव को, रोया करता हूं निशि-भर में।
क्या वह बल, वह अतुल पराक्रम, मम-मानव में नहीं जगेगा?
अरे बोल, विप्लव के रस में, कब तक मेरा मनुज पगेगा?"

(५)

मैंने उस क्षण सुनी नीम की, यह कटु-सत्य व्यथा की वाणी।
और छलछला उठा उष्ण-सा, मेरे मीलित-दृग में पानी।
किन्तु किया अनुभव कि हृदय में, सुलगी है, विप्लव-चिनगारी।
मैंने देखा कि उठ रहे हैं, निद्रा से मेरे नर-नारी।
मैंने देखा, दूर क्षितिज में, विहंस रहे हैं मेरे लपटी।
है बोला-'ओ नीम! बिलख मत, आते हैं अब शुभ दिन झपटी।'

अभ्यास के प्रश्न

नोट।—नीचे कुछ बहुविकल्पात्मक प्रश्न दिये गये हैं। सही उत्तर के विकल्प का क्रमाक्षर दांयी ओर के कोष्ठक में लिखिये।

प्र० १. 'उस दिन सोचा, क्यों न लगा दूं, आज आग मैं दुनिया भर को' कवि ने किस दिन दुनिया में आग लगाने की बात सोची ?
(क) जिस दिन उसने गरीबों का शोषण देखा। (ख) जिस दिन उसने भिखारी देखे। (ग) जिस दिन उसने नर को जूठे पत्ते चाटते देखा। (घ) जिस दिन उसने गरीबों को आंसू बहाते देखा। (ङ) पंडित पुजारियों को गुलछर्रे उड़ाते देखा। ( )

प्र० २. 'वह तो हुआ राख की ढेरी,' कह कर कवि ईश्वर को मृत घोषित क्यों कर रहा है ?
(क) समाज में असमानता देख कर। (ख) मनुष्यों में अनास्था देखकर। (ग) विज्ञान की प्रगति देखकर। (घ) जाति-पांति के भेद देख कर। (ङ) मनुष्य की विकृति देख कर। ( )

प्र० ३. 'चले गये हैं कहीं—नीम को छोड़ अकेला अपने हारे।'
दीन किसान अपना घर क्यों छोड़ कर चला गया है ?
(क) यात्रा करने के लिये। (ख) अकाल और भूख से पीड़ित होकर। (ग) किसी कुटुंबी से मिलने के लिये। (घ) जलवायु परिवर्तन के लिये। (ङ) भवन के लिये नये साधनों को जुटाने के लिये। ( )

प्र० ४. दूर देश के पक्षी आकर वृक्ष को किन विषयों की बातें बताते हैं ?
(क) विभिन्न पक्षियों के सम्बन्ध में। (ख) वहां के

परिवर्तनों के सम्बन्ध में। (ग) वहाँ की जलवायु के सम्बन्ध में। (घ) वहाँ के लोगों के रहन-सहन के सम्बन्ध में। (च) वहाँ की परंपराओं के सम्बन्ध में। ( )

१० ५. 'मैं बोला—ओ मित्र! बिलख मत...............' पंक्ति में कौन-सा भाव व्यक्त हुआ?

(क) व्यथा। (ख) निराशा। (ग) सहानुभूति। (घ) करुणा। (च) क्षोभ। ( )

१० ६. निम्न पंक्तियों का लगभग ३० शब्दों में भावार्थ स्पष्ट कीजिए—

(क) आँखों में खारे—फव्वारे। (ख) जिसने अपने ही स्वरूप को, रूप दिया इस घृणित विकृति का। (ग) अनाचार के अंबारों में, अपना ज्वलित पलीता धर दे। (घ) ध्यान मग्न-सा, असंलग्न सा, वीतराग वह वल्कलधारी। (च) मानो कोई अलख जगाता, सिद्ध खड़ा हो विश्व सहारे। (छ) तू है चिर सुंदर, नवीन, प्रलयंकर।

१० ७. निम्न शब्दों तथा शब्द-खंडों का अर्थ-विस्तार लगभग दस शब्दों में कीजिये।

(क) अलख-शक्ति। (ख) चिर-दोहित। (ग) दग-जल। (घ) मीलित-दृग।

१० ८. 'जूठे पत्ते' शीर्षक कविता का मूल-भाव ४० शब्दों में समझाइये।

१० ९. 'एक नीम' कविता के आधार पर कवि तथा नीम के बीच हुए वार्तालाप को ४० शब्दों में लिखिये।

१० १०. निम्न मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिये—
हाथ पसारना, टँटुआ घोटना, राख का ढेर होना, कानस देना, थू है कुलछना उठना।

१० ११. संधि विच्छेद कीजिए—
जगत्पति, विकृति, अनाचार, क्रोधानल, निर्गति।

३० १२. 'जूठे पत्ते' शीर्षक कविता के आधार पर गरीबों की दयनीय स्थिति और कवि के आक्रोश का वर्णन १०० शब्दों में कीजिये।

४० १३. भाषा, भाव, और शैली के आधार पर कविवर नवीन के काव्य की विशेषताओं का वर्णन १५० शब्दों में कीजिये।

१४. भगवतीचरण वर्मा | जन्म : १९०३ ई०

जीवन परिचय—

भगवतीचरण वर्मा हिन्दी के प्रमुख प्रगतिवादी कवि हैं। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के शफ़ीपुर गाँव में हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा कानपुर में हुई और उच्च-शिक्षा, प्रयाग विश्वविद्यालय में। बचपन से ही आपकी रुचि साहित्य में रही। कवि और गद्य लेखक, दोनों रूपों में आप ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। कुछ समय तक फ़िल्म संसार और आकाशवाणी से भी इनका सम्बन्ध रहा। इस समय स्वतन्त्र लेखन को वृत्ति अपना कर लखनऊ में रह रहे हैं। इनकी अनेक रचनाएँ राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं और अनेक भाषाओं में इनका अनुवाद हुआ है।

भारत सरकार इन्हें पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित कर चुकी है।

कृतियाँ

वर्मा जी की प्रतिभा बहुमुखी है। इन्होंने काव्य, नाटक, कहानी, उपन्यास आदि के लेखन में सफलता प्राप्त की है। इनकी मुख्य कृतियों के नाम इस प्रकार हैं—

काव्य : मधुकण, प्रेम-संगीत, मानव, त्रिपथगा।

उपन्यास : चित्रलेखा, तीन वर्ष, टेढ़े मेढ़े रास्ते, आखिरी दाँव भूले-बिसरे चित्र आदि।

कहानी-संग्रह : इंस्टालमेंट, दो बाँके, राख और चिंगारी।

नाटक : रुपया तुम्हें खा गया, वासवदत्ता आदि।

काव्यगत विशेषताएँ—

वर्मा जी छायावाद और प्रगतिवाद के संधिकाल के कवि हैं। आपकी कविताओं में प्रेम की अलौकिकता तथा जीवन का हाहाकार प्रतिध्वनित हुआ है। वे किसी 'वाद' विशेष में बँध कर नहीं रहे। उनकी कविता में जीवन

के प्रति सहज-आस्था के दर्शन होते हैं। उनके व्यक्तित्व का शायराना अल्हड़पन, रंगीनी और मस्ती उनकी कविताओं में भी देखी जा सकती है। रूमानी मस्ती, [illegible], [illegible], अन्तत: मानवतावाद इनकी विशिष्टता है।

वर्मा जी का लेखन यद्यपि छायावादी युग में प्रारम्भ हुआ किन्तु वे छायावादी काव्यानुभूति के अशरीरी आधारों के प्रति कभी आकर्षित नहीं हुए। उनकी कविताएँ यथार्थ की ठोस भूमि का स्पर्श करती हैं। आपके काव्य में विद्रोह और संघर्ष की भावनाओं का विस्फोट है।

वर्मा जी की भाषा सरल, सुबोध और शैली ओज-पूर्ण है।

भैंसागाड़ी

('भैंसागाड़ी' शीर्षक वर्मा जी की कविता का आधुनिक हिन्दी कविता के इतिहास में अपना विशेष महत्त्व है। मानवतावादी दृष्टिकोण से वे सभी तत्त्व, जिनके आधार पर प्रगतिवादी काव्यधारा जानी पहचानी जाती है, इस कविता में भली भाँति उभर कर सामने आये हैं। 'भैंसागाड़ी' युग के दमन, शोषण तथा उत्पीड़न का प्रतीक है। इस कविता में शोषक-वर्ग के प्रति तीव्र आक्रोश है। कवि ने शोषित और दलितों के हृदय में उठने वाले विद्रोह के तीक्ष्ण उद्गारों को शक्तिशाली भाषा में व्यक्त किया है।

कविता की भाषा सरल और शैली ओजपूर्ण है।

चरमर चरमर चूं चररमरर
जा रही चली भैंसागाड़ी।

(१)

सागर पर चलते हैं जहाज
अम्बर पर चलते वायुयान।
हैं दौड़ रहीं मोटरें, बसें,
ले कर मानव का वृहत् ज्ञान।

पर इस प्रदेश में जहाँ नहीं,
उच्छ्वास, भावनाएं, चाहें।
वे भूखे, अधखाये किसान,
भर रहे जहाँ सूनी आहें।

नंगे बच्चे, चिथड़े पहने,
माताएँ जर्जर डोल रहीं।
है जहाँ भूख नित नृत्य कर रही,
धूल उड़ाती हैं राहें।
मर मर कर फिर मिटने का स्वर,
कँप कँप उठते, जिसके स्तर,
हिलती डुलती, हँफती कँपती
कुछ रुक रुक कर, कुछ सिहर सिहर
चरमर चरमर चूं चररमरर
जा रही चली भैंसागाड़ी।

(२)

उस ओर क्षितिज से कुछ आगे,
कुछ पाँच कोस की दूरी पर।
भू की छाती पर फोड़ों से,
हैं उठे हुए कुछ कच्चे घर।
पशु बन कर नर पिस रहे जहाँ,
नारियाँ जन रही हैं गुलाम।
पैदा होना फिर मर जाना,
बस यह लोगों का एक काम।
वे क्षुधाग्रस्त बिलबिला रहे,
मानो वे मोरी के कीड़े—
वे निपट घिनौने, महापतित,
बौने, कुरूप, टेढ़े मेढ़े।
बीवी बच्चों से छीन छीन
दाना दाना अपने में भर,
भूखे तड़पें या मरें, भरों का—
तो भरना है उनको घर।

घन की दानवता से पीड़ित
कुछ फटा हुआ कर्कश सा स्वर—
चरमर चरमर चूँ चररमरर
जा रही चली भैंसागाड़ी।

(३)

है बीस कोस पर एक नगर,
उस एक नगर में एक हाट।
जिस में मानव की दानवता,
फैलाये है निज राजपाट।
साहूकारों के परदे में, हैं—
जहाँ चोर और गिरह काट।
है अभिशापों से लदा जहाँ,
पशुता का कलुषित ठाठ बाट।
उस में चाँदी के टुकड़ों के—
बदले में लुटता है अनाज।
अब चाँदी के ही टुकड़ों से
तो चलता है सब राज काज।
नीचे जलने वाली पृथ्वी,
ऊपर जलने वाला अंबर।
औ कठिन भूख की जलन लिए
नर बैठा है बन कर पत्थर।
पीछे है पशुता का खंडहर,
दानवता का सामने नगर
मानव का कृश कंकाल लिए
चरमर चरमर चूँ चररमरर
जा रही चली भैंसागाड़ी।

दीवानों का संसार

(संकलित कविता में कवि के व्यक्तित्व का अल्हड़पन व्यक्त हुआ है।

यह कविता भगवतीचरण वर्मा के शायराना अन्दाज़, व्यक्तित्व की रंगीनी और मस्ती के सुधरे-सँवरे रूप को उपस्थित करती है। कवि के व्यक्तित्व की स्वातन्त्र्य-प्रियता, रूमानी बेचैनी, फक्कड़पन आदि का मनोरम चित्रण इस कविता में हुआ है।

इस कविता में दीवानों के मस्त जीवन पर प्रकाश डाला गया है। किसी उद्देश्य प्राप्ति के लिए सुख-दुःख के घूंटों को पीने वाला युवक प्राणों की बाज़ी लगा कर अपना यश फैलाता है—यही कविता का मूल सार है।

कविता की भाषा सरल और शैली ओजमयी है।)

हम दीवानों की क्या हस्ती
हैं आज यहाँ, कल वहाँ चले।
मस्ती का आलम साथ चला
हम धूल उड़ाते जहाँ चले।
आये बन कर उल्लास अभी,
आँसू बनकर वह चले अभी।

सब कहते ही रह गये, अरे,
तुम कैसे आये, कहाँ चले ?
किस ओर चले ? यह मत पूछो,
चलना है, बस इसलिए चले।
जग से उसका कुछ लिए चले,
जग को अपना कुछ दिये चले।

दो बात कहीं, दो बात सुनी
कुछ हँसे और फिर कुछ रोये।

छक कर सुख-दुख के घूंटों को
हम एक भाव से पिये चले।
हम भिखमंगों की दुनिया में
स्वच्छन्द लुटा कर प्यार चले।
हम एक निशानी सी उर पर
ले असफलता का भार चले।

हम हँसते हँसते ग्राज यहाँ
प्राणों की बाज़ी हार चले।
हम भला बुरा सब भूल चुके
नत-मस्तक हो मुख मोड़ चुके
अभिशाप उठा कर होठों पर
वरदान दृगों से छोड़ चले।
अब अपना और पराया क्या ?
आबाद रहें रुकने वाले।
हम स्वयं बँधे थे और स्वयं
हम अपने बंधन तोड़ चले।

अभ्यास के प्रश्न

नोट :—नीचे कुछ प्रश्न और उत्तर के पाँच-पाँच विकल्प दिये जा रहे हैं। सही उत्तर का क्रमाक्षर दाँयी ओर के कोष्ठक में लिखिये—

प्र० १. 'भैंसागाड़ी' को कवि ने किस प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है ?
(क) अन्याय और शोषण के। (ख) ग्रामीण संस्कृति के। (ग) युगजीवन की प्रगति के। (घ) दारिद्रय और दीनता के। (च) संस्कारहीनता के। ( )

प्र० २. 'भैंसागाड़ी' के कर्कश और फटे स्वर का मुख्य कारण कवि ने क्या दिया है ?
(क) गरीबों का पारस्परिक कलह। (ख) शोषक का अत्याचार। (ग) धन की दानवता। (घ) ग्रामीणों का पाशविक जीवन। (च) भूख का नग्न-नृत्य। ( )

प्र० ३. 'नर बैठा है बन कर पत्थर' पंक्ति में कवि ने मनुष्य को 'पत्थर' किस अर्थ में कहा है ?
(क) वह कठोर हृदय है। (ख) वह उदासीन है। (ग) वह शोधक है। (घ) वह अज्ञानी है।(च) वह निष्क्रिय है। ( )

प्र० ४. 'दीवानों का संसार' शीर्षक कविता में कवि का मूल अभिप्रेत क्या है ?

(क) दीवानों के मस्त जीवन पर प्रकाश डालना। (ख) कवि के व्यक्तित्व की रंगीनी को प्रकट करना। (ग) जीवन की निश्चितता को प्रकट करना। (घ) बन्धनमुक्त फक्कड़ जीवन की विशेषताएँ बतलाना। (च) निराश प्रेमियों की रूमानी बेचैनी को प्रकट करना। ( )

प्र० ५. उच्छ्वास और भावनाओं रहित प्रदेश में कवि का ध्यान किस ओर आकर्षित होता है ? उत्तर सीमा १० शब्द।

प्र० ६. 'पाँच कोस की दूरी पर' बसा गाँव, कवि को कैसा प्रतीत होता है ? उत्तर सीमा १० शब्द।

प्र० ७. गरीबों की बस्ती में लोग किस तरह का जीवन व्यतीत करते हैं ? उत्तर तीन-चार वाक्यों में दीजिये।

प्र० ८. नगर की 'हाट' को कवि ने 'पशुता का कलुषित ठाठ बाट' क्यों कहा है ? उत्तर सीमा ३० शब्द।

प्र० ९. 'चाँदी के टुकड़े' से कवि का क्या अभिप्राय है ? उत्तर सीमा एक-दो शब्द।

प्र० १०. 'पशुता का खंडहर' और 'दानवता का नगर' से आप क्या समझते हैं ? उत्तर सीमा २५ शब्द।

प्र० ११. निम्न पंक्तियों का आशय २० शब्दों में समझाइये—

(क) अभिशाप उठा कर होठों पर, वरदान दृगों से छोड़ चले।
(ख) हम एक निशानी सी उर पर, ले असफलता का भार चले।
(ग) आये बन कर उल्लास अभी, आँसू बन कर बह गये अभी।
(घ) अब चाँदी के ही टुकड़ों से तो, चलता है सब राज काज।
(च) भर भर कर फिर मिटने का स्वर, कँप कँप उठते जिसके स्तर।

प्र० १२. 'प्रगतिवाद' के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर 'भैंसागाड़ी कविता की विशेषताएँ १५० शब्दों में स्पष्ट कीजिये।

प्र० १३. 'भैंसागाड़ी' में जिस सामाजिक विषमता और कुरूपता का उल्लेख हुआ है उसे १०० शब्दों में लिखिये।

---

१५. रामधारी सिंह 'दिनकर'

जन्म : १६०८ ई०
मृत्यु : १६७४ ई०

जीवन-परिचय—

स्वर्गीय मैथिलीशरण गुप्त के पश्चात् राष्ट्रीय भावना के सबसे प्रमुख कवि के रूप में 'दिनकर' का नाम लिया जाता है। उनका जन्म विहार प्रदेश के सीतामढ़ी नामक स्थान में हुआ। सरकारी विभाग में सहायक रजिस्ट्रार, रेडियो-विभाग में सलाहकार और भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति पद को आप सुशोभित कर चुके हैं। सन् १६५२ में आप भारतीय संसद के सदस्य चुने गये। कुछ समय तक दिनकर जी राज्य सभा के सदस्य भी रहे। भारत सरकार ने आपको पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित किया था। आपको ज्ञानपीठ ने 'उर्वशी' महाकाव्य पर एक लाख रुपये का पुरस्कार देकर सम्मानित किया था। २४ अप्रैल ७४ ई० को मद्रास में अचानक हृदय-गती रुक जाने से आप का अचानक देहावसान हो गया।

रचनाएं—

दिनकर जी की प्रमुख कृतियों के नाम इस प्रकार हैं—

१. कथा-काव्य—उर्वशी, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी।

२. काव्य संग्रह—रेणुका, द्वंदगीत, हुंकार, रसवंती, धूप-छांह, सामधेनी, नील कुसुम, सीपी और शंख, परशुराम की प्रतिक्षा आदि।

३. गद्य-ग्रंथ—संस्कृति के चार अध्याय, उजली आग, मिट्टी की ओर, काव्य की भूमिका, पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण, धर्म, नैतिकता और विज्ञान, अर्द्धनारीश्वर, शुद्ध कविता की खोज।

४. **संस्मरण** : लोक-देव नेहरू।

काव्यगत विशेषताएँ—

दिनकर प्रेम, राष्ट्रीयता, मानवता और क्रांति के कवि थे। प्रवन्ध

काव्य और गीत काव्य, दोनों में ही उन्हें समान रूप से सफलता मिली है। उन्होंने अतीत के गौरव का स्मरण दिलाकर वर्तमान के प्रति सचेत करना चाहा था। राष्ट्र की दलित आत्मा की वेदनाएं उन के काव्य में तीव्रता से व्यक्त हुई हैं। कवि के हृदय में प्राचीन गौरव के प्रति अगाध प्रेम तथा वर्तमान के प्रति गहरा असंतोष तथा क्षोभ रहा है।

दिनकर की कविता का मूल स्वर क्रांति का है। ओजपूर्ण शैली में राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्ति इनकी विशेषता है। जन-मानस में नवीन चेतना उत्पन्न करना, दिनकर की कविता का प्रमुख लक्ष्य रहा है। इनकी कविता, प्रगति और निर्माण के पथ पर अग्रसर होने का संदेश देती है। इनकी रचनाओं में वीर और रौद्र रस का समावेश द्रष्टव्य है। इन्होंने सरस गीत भी लिखें हैं जिनमें हृदय की कोमलता अभिव्यक्त हुई है।

दिनकर के व्यक्तित्व की ही भांति इनकी कविता भी प्रभावशाली है। मंच से कविता पढ़ने का इनका ढंग इतना प्रभावशाली था कि श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाता था। दिनकर की शैली सजीव, प्रौढ़ और प्रवाहपूर्ण है। उनकी भाषा सशक्त और ओज-गुण पूर्ण है। वह भावों की अनुगामिनी है। विषय के अनुरूप कहीं उसमें उग्रता है, कहीं सौम्यता।)

विपथगा —

('विपथगा' का अभिप्राय है, पथ से अलग चलने वाली। इस कविता में 'क्रांति' को विपथगा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जब क्रान्ति होती है तब ईश्वर, न्याय, राजा-महाराजा, सबको चुनौती दी जाने लगती है। इस कविता में शोषण और दमन के विरुद्ध सार्वभौम क्रांति का तांडव नृत्य अंकित हुआ है। इसमें क्रांति स्वयं अपने जन्म और विकास की कहानी कह रही है। जब क्रांति का आगमन होता है तो समाज में भूचाल सा आ जाता है। जब क्रांति अपना तांडव नृत्य करती है तब सारे संसार में कोलाहल छा जाता है। बड़े बड़े पर्वत टूट कर गिरने लगते हैं। स्वर्ग-नर्क, पाप-पुण्य की सब परिभाषाएं झूठी सिद्ध हो जाती हैं।

अपनी जन्म-स्थिति का उल्लेख करते हुए क्रांति का कहना है कि जब समाज में अत्याचार और शोषण बढ़ जाता है, तब उसका जन्म होता है।

जब युवकों का दमन किया जाता है, स्त्रियों की लाज लूटी जाती है; निर्बल लोग भय के कारण आह भी नहीं भर पाते और मनही मन क्रोधित होते रहते हैं, तब क्रांति की भावना का जन्म होता है। क्रांति के आते ही राजाओं के मुकुट, ईश्वर का आसन, न्याय, धर्म, सब खतरे में पड़ जाते हैं। मिट्टी से जन्म लेने वाली क्रांति की भावना ऐसी आग सुलगाती है कि शोषकों का अस्तित्व जलने लगता है। अंतिम छंद में क्रांति ने दुनिया के शोषकों को 'नीरो' और 'ज़ार' कह कर शोषण, दमन और अत्याचार को बंद करने की चेतावनी दी है।

यह कविता प्रथम-पुरुष में लिखी गई है। इसमें क्रांति स्वयं अपनी कहानी कह रही है। भाषा, विषय के अनुसार ओजमयी है। क्रांति के प्रखर रूप का सजीव वर्णन कवि ने ओजस्वी शब्दावली द्वारा किया है। विश्व-व्यापी दमन और शोषण की समाप्ति के लिए कवि ने सार्वभौम क्रांति के तांडव-नृत्य को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

झन झन झन झन झनन झनन।

(१)

मेरी पायल झंकार रही,
तलवारों की झंकारों में,
अपनी आगमनी बजा रही
मैं आप क्रुद्ध हुंकारों में।

मैं अहंकार सी कड़क उठी,
हंसती विद्युत की धारों में।
बन काल-हुताशन खेल रही
पगली मैं फूट पहाड़ों में।

अंगड़ाई में भूचाल—
सांस में लंका के उनचास पवन।
झन झन झन झन झनन झनन।

(२)

पायल की पहली झमक
सृष्टि में कोलाहल छा जाता है।
पड़ते जिस ओर चरण मेरे
भूगोल उधर दब जाता है।

लहराती लपट दिशाओं में
खलभल खगोल अकुलाता है।
पर कटे विहग सा निरवलंब
गिर, स्वर्ग-नर्क जल जाता है।

गिरते दहाड़ कर शैल-श्रृंग,
मैं जिधर फेरती हूं चितवन।
झन झन झन झन झनन झनन।

(३)

रस्सों से कसे जवान, पाप-
प्रतिकार, न जब कर पाते हैं।
बहिनों की लुटती लाज देखकर
कांप कांप रह जाते हैं।

शस्त्रों के भय से जब निरस्त्र
आंसू भी नहीं बहाते हैं।
पी अपमानों के गरल घूंट
शासित जब होंट चबाते हैं।

जिस दिन रह जाता क्रोध मौन
मेरी वह भीषण जन्म-लगन।
झन झन झन झन झनन झनन।

(४)

श्वानों को मिलता दूध, वस्त्र,
भूखे बालक अकुलाते हैं।

मां की हड्डी से चिपक, ठिठुर
जाड़े की रात विताते हैं।

युवती की लज्जा, वसन वेच
जव व्याज चुकाये जाते हैं।
मालिक जव तेल फुलेलों पर,
पानी सा द्रव्य वहाते हैं।

पापी महलों का अहंकार,
देता मुझको तव आमंत्रण।
झन झन झन झन झनन झनन।

(५)

असि की नोकों से मुकुट छीन
अपने सिर उसे सजाती हूं।
ईश्वर का आसन छीन, कूद
मैं आप खड़ी हो जाती हूं।

थर थर करते कानून न्याय
इंगित पर जिन्हें नचाती हूं।
भयभीत पातकी धर्मों से
अपने पग मैं धुलवाती हूं।

सिर झुका घमंडी सरकारें
करती मेरा पूजा-अर्चन।
झन झन झन झन झनन झनन।

(६)

मुझ विपथगामिनी को न ज्ञात
किस रोज किधर से आऊंगी ?
मिट्टी से किस दिन जाग, क्रुद्ध
अंबर में आग लगाऊंगी।

आंखें अपनी कर बंद, देश में
जब भूकम्प मचाऊंगी।

किसका टूटेगा शृंग, न जाने
किसका महल गिराऊंगी ?

निर्दय, क्रूर, निर्मोह सदा
मेरा कराल नर्तन-गर्जन।
झन झन झन झन झनन झनन।

(७)

अब की अगस्त्य की बारी है
पापों के पारावार सजग।
बैठे 'विसूवियस' के मुख पर
भोले, अबोध संसार सजग।

रेशों का रक्त कृशानु हुआ,
ओ ! जुल्मी की तलवार सजग।
दुनिया के 'नीरो' सावधान,
दुनिया के पापी 'जार' सजग।

जानें किस दिन फुंकार उठें
पद-दलित, काल-सर्पों के फन।
झन झन झन झन झनन झनन।

समर शेष है

(जनतंत्र की स्थापना से स्वराज्य तो आया लेकिन सु-राज्य आना अभी बाकी है। स्वराज्य केवल राजधानियों और बड़े बड़े महलों और बंगलों में अटक कर रह गया है। स्वराज्य की विभा अभी भी कैद पड़ी है। ग़रीब अब भी ग़रीब है, अमीर और ज्यादा अमीर हो गया है। सारा देश अब भी भूख से तड़प रहा है। मार्ग में बड़ी बड़ी रुकावट हैं। स्वराज्य जनता का है लेकिन अभी तक वह उसे प्राप्त नहीं हुआ है। कवि ने इसी लिए भूख के विरुद्ध लड़ते रहने की बात कही है। वह अधिकारों और स्वराज्य के लिये समर करते रहने की प्रेरणा देता है। जब तक जनता की धरोहर जनता को नहीं मिल जाती तब तक लड़ाई जारी रखनी होगी।

इस कविता में कवि ने आक्रोश को वाणी दी है। स्वतंत्रता के बाद भी

विषमता और दमन का वातावरण देखकर उसका कवि-मन विद्रोह करने लगता है। वह तब तक लड़ते रहने को कहता है जब तक कि जनता को उसके अधिकार नहीं मिल जाते। कविता की भाषा सरल, ओजमयी, प्रवाहशाली है।)

(१)

ढीली करो धनुष की डोरी, तरकस का कस खोलो।
किसने कहा, युद्ध की बेला गई, शांति से बोलो।
किसने कहा और मत बेधो, हृदय वह्नि के शर से।
भरो भुवन का अंग, कुसुम से, कुंकुम से, केशर से।
कुंकुम लेपूं किसे ? सुनाऊं किसको कोमल गान ?
तड़प रहा आंखों के आगे भूखा हिन्दुस्तान।

(२)

अटका कहाँ स्वराज ? बोल दिल्ली ! तू क्या कहती है ?
तू रानी बन गई, वेदना जनता क्यों सहती है ?
सब के भाग दबा रखे हैं, किसने अपने कर में ?
उतरी थी जो विभा हुई वंदिनी, बता, किस घर में ?
मखमल के परदों के बाहर, फूलों के उस पार।
ज्यों का त्यों है खड़ा आज भी, मरघट सा संसार।

(३)

वह संसार जहाँ पर पहुंची अब तक नहीं किरण है।
जहाँ क्षितिज है शून्य अभी तक, अंबर तिमिरवरण है।
देख जहाँ का दृश्य आज भी अंत:स्तल हिलता है।
मां को लज्जावसन और शिशु को न क्षीर मिलता है।
पूछ रहा है जहां चकित हो जन जन देख अकाज।
इतने वर्ष हो गये, राह में अटका कहाँ स्वराज ?

(४)

समर शेष है, इस स्वराज्य को सत्य बनाना होगा।
जिसका है यह न्यास, उसे सत्वर पहुंचाना होगा।

धारा के मग में अनेक पर्वत जो खड़े हुए हैं।
गंगा का पथ रोक इन्द्र के गज जो अड़े हुए हैं।
कह दो उन से, झुके अगर तो जग में यश पायेंगे।
अड़े रहे तो एरावत, पत्तों-से बह जायेंगे।

(५)

समर शेष है, जनगंगा को खुल कर लहराने दो।
शिखरों को डूबने और मुकुटों को बह जाने दो।
पथरीली, ऊंची जमीन है, तो उसको तोड़ेंगे।
समतल पीटे बिना समर की भूमि नहीं छोड़ेंगे।
समर शेष है, चलो ज्योतियों के बरसाते तीर।
खंड खंड हो गिरे विषमता की काली जंजीर।

अभ्यास के प्रश्न

नोट :—नीचे कुछ प्रश्न और उनके पांच पांच विकल्प दिये गए हैं। सही उत्तर का क्रमाक्षर दाहिने ओर के कोष्ठक में लिखिए।

प्र० १. क्रांति को कवि ने 'विपथगा' क्यों कहा है ?

(क) उसकी निरन्तर आलोचना होती है। (ख) वह लीक पर चलना पसंद नहीं करती। (ग) उसके कारण बड़ा विध्वंस होता है। (घ) वह सारी व्यवस्थाओं को बदल देती है। (च) उसका व्यवहार क्रूर एवं मोहरहित है। ( )

प्र० २. 'किसने कहा, युद्ध की बेला गई, शांति से बोलो'—पंक्ति में कवि अब भी युद्ध-रत रहने की बात क्यों कह रहा है ?

(क) अब भी सीमाओं पर शत्रु का भय बना हुआ है। (ख) जनता अब भी दुःखी है। (ग) स्वराज्य का स्वप्न अभी पूरा नहीं हुआ है। (घ) समाज में अब भी विषमता है। (च) अब भी मुट्ठी भर लोग देश के भाग्य-विधाता बने हुए हैं। ( )

प्र० ३. कवि के मत में इस संसार में स्थायी शांति कैसे स्थापित हो सकती है ?

(क) शस्त्रों की होड़ पर रोक लगाने से। (ख) आणविक ऊर्जा

सदुपयोग करने से। (ग) सुख का न्यायोचित वंटवारा करने से। (घ) पारस्परिक भ्रातृत्व-भावना के विकास से। (च) सबको उन्नति के समान अवसर देने से। ( )

प्र० ४. क्रान्ति किन परिस्थितियों में जन्म लेती है ५० शब्दों में लिखिये ?

प्र० ५. 'अंगड़ाई में भूचाल, सांस में लंका के उनचास पवन'। इस वाक्य का आशय १० शब्दों में समझाइये।

प्र० ६. 'अगस्त्य,' 'विसूवियस,' 'नीरो,' 'जार' के वारे में आप क्या जानते हैं ? प्रत्येक पर १५ शब्द की टिप्पणी लिखिए।

प्र० ७. 'राह में अटका कहाँ स्वराज' ? कवि यह प्रश्न क्यों पूछ रहा है ? २० शब्दों में समझाइये।

प्र० ८. 'जिसका है यह न्यास, उसे सत्वर पहुंचाना होगा'। 'न्यास' का क्या अभिप्राय है और यह किसका है ? २५ शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

प्र० ९. निम्न पदों का आशय बताते हुए उनमें निहित काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए—

(१) लहराती लपट दिशाओं········चितवन। (विपथगा-छंद २)
(२) असि की नोकों से···············अर्चन। (विपथगा-छंद ५)
(३) अब की अगस्त्य·····················फन। (विपथगा-छन्द ७)
(४) किसने कहा···················केशर से। (समर शेष है—छंद १)
(५) समर शेष है··· ······लहराने दो। (समर शेष है—छंद ५)

प्र० १०. 'विपथगा' शीर्षक कविता के आधार पर क्रांति के जन्म, विकास और प्रभाव का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। उत्तर सीमा, १०० शब्द।

———

१६. हरिवंशराय 'बच्चन' | जन्म : १६०७ ई०

जीवन परिचय—

बच्चन का जन्म प्रयाग में हुआ। आप अंग्रेज़ी में एम० ए० हैं। कैंब्रिज विश्वविद्यालय से इन्होंने पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। आप अनेक वर्षों तक प्रयाग विश्वविद्यालय में अंग्रेज़ी का अध्यापन करते रहे। कुछ समय के लिए आकाशवाणी के साहित्यिक कार्यक्रमों से संबद्ध रहे। फिर दिल्ली में विदेश मंत्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ के रूप में कार्य किया। आप राज्य सभा के सदस्य के रूप में मनोनीत भी किये गये। इनके कुछ गीतों का प्रयोग फ़िल्मों में भी किया गया है।

रचनाएँ —

बच्चन की निम्न कृतियाँ विशेषत: उल्लेखनीय हैं—

तेरा हार, खैयाम की मधुशाला, मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा-निमंत्रण, एकान्त संगीत, आकुल अंतर, विकल-विश्व, सतरंगिनी, हलाहल, मिलन यामिनी, प्रणय-पत्रिका, बुद्ध और नाचघर, आरती और अंगारे, जन-गीता, मैकवेथ (अनुवाद) प्रारंभिक रचनाएँ भाग १, २, ३, (कहानियाँ) 'क्या भूलूं क्या याद करूँ' शीर्षक से उनकी आत्मकथा भी प्रकाशित हुई है।

काव्यगत विशेषताएँ —

बच्चन हिन्दी के लोकप्रिय कवि हैं। हिन्दी गीतकारों में बच्चन का नाम अग्रणी है। उन्होंने हिन्दी काव्य को एक नयी दृष्टि दी। उनकी 'मधुशाला' की हाला जीवन में मस्ती और आनंद का प्रतीक है। इन कविताओं में जीवन और समाज में व्याप्त वेदना और निराशा को उन्माद की मधुर मस्ती के साथ झेलने की प्रेरणा है। पत्नी की मृत्यु के उपरांत लिखित 'निशा-निमंत्रण' और 'एकांत-संगीत' में कवि के हृदय की मर्मान्तक वेदना मुखरित हुई है।

बच्चन के काव्य को विलक्षण लोकप्रियता प्राप्त हुई है। बच्चन छायावाद और प्रगतिवाद के बीच की कड़ी हैं। उन्होंने छायावाद की सूक्ष्मता और लाक्षणिकता से कविता को निकाल कर, सीधी, सादी, जीवन्त भाषा और गेय शैली में अपनी बात कही है। उनकी लोकप्रियता का मूल कारण कविता की सहजता और सरलता है। उन्होंने सीधी-सादी भाषा और शैली में नये गीत हिन्दी जगत को भेंट किये। बच्चन ने जीवन की निराशा और नीरसता को स्वीकारते हुए भी, उनसे मुँह मोड़ने के बजाय उसका उपयोग करने, उसमें जो कुछ मधुर और आनन्दप्रद है उसे ग्रहण करने की प्रेरणा दी।

बच्चन जी ने काव्य-शिल्प में अनेक प्रयोग किये। सामान्य बोलचाल की भाषा को काव्य-भाषा की गरिमा प्रदान करने का श्रेय उन्हीं को है। उनकी लोकप्रियता का एक कारण उनका काव्य-पाठ भी है। हिन्दी में कवि सम्मेलनों की परंपरा को लोकप्रिय बनाने में बच्चन का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

जुगनू—

(यह गीत बच्चन के 'सतरंगिनी' शीर्षक काव्य-संकलन से लिया गया है। इसमें कवि का स्वर आशावादी है। जुगनू को कवि ने आस्था, विद्रोह, निष्ठा और विश्वास का प्रतीक माना है। घनघोर अँधेरी रात में भी चमकते रहने का संकल्प, जुगनू के आत्मविश्वास को प्रकट करता है। कवि ने जुगनू के माध्यम से संकट के क्षणों में स्थिर रहने और विश्वासपूर्वक जीवन-यापन करने का संदेश दिया है।

भाषा सरल, बुद्धिगम्य और भाव उत्साह जागृत करने वाले हैं। संकट से जूझते रहने की प्रेरणा, कवि ने इस मधुर गीत के माध्यम से दी है।

(१)

अंधेरी रात में दीपक
जलाए कौन बैठा है ?

उठी ऐसी घटा नभ में
छिपे सब चाँद औ तारे।
उठा तूफान वह नभ में
गए बुझ दीप भी सारे।

मगर इस रात में भी लौ
लगाए कौन बैठा है।
अंधेरी रात में दीपक
जलाए कौन बैठा है?

(२)

गगन में गर्व से उठ उठ
गगन में गर्व से घिर घिर
गरज कहती घटाएं है
नहीं होगा उजाला फिर।

मगर चिर ज्योति में निष्ठा
जमाए कौन बैठा है।
अंधेरी रात में दीपक
जलाए कौन बैठा है?

(३)

तिमिर के राज का ऐसा
कठिन आतंक छाया है।
उठा जो शीश सकते थे
उन्होंने सिर झुकाया है।

मगर विद्रोह की ज्वाला
जलाए कौन बैठा है?
अंधेरी रात में दीपक
जलाए कौन बैठा है?

(४)

प्रभंजन, मेघ, दामिनी ने
न क्या तोड़ा, न क्या फोड़ा?
धरा के और नभ के बीच
कुछ साबित नहीं छोड़ा।

मगर विश्वास को अपने
बचाये कौन बैठा है ?
अंधेरी रात में दीपक
जलाए कौन बैठा है ?

(५)

प्रलय का समां बांधे
प्रलय की रात है छाई।
विनाशक शक्तियों की इस
तिमिर के बीच बन आई।

मगर निर्माण में आशा
लगाए कौन बैठा है ?
अंधेरी रात में दीपक
जलाए कौन बैठा है ?

चल मर्दाने सीना ताने

(प्रस्तुत कविता ओजमयी है। कवि शौर्य के भाव जागृत करना चाहता है। देश के नवयुवकों में नव-स्फूर्ति की लहर फैलाने के लिए यह कविता प्रेरणा देती है। कवि देश के युवकों को सीना तान कर, निर्भय आगे बढ़ने को प्रोत्साहित करता है। कवि संदेश देना चाहता है कि जीवन-पथ में अबाधगति से बढ़ते रहना ही सफलता और सिद्धि का मूल रहस्य है।)

चल मर्दाने सीना ताने
हाथ हिलाते, पांव बढ़ाते, मन मुसकाते, गाते गीत।
एक हमारा देश, हमारा
वेष, हमारी कौम, हमारी
मंजिल, हम किससे भयभीत।
चल मर्दाने सीना ताने
हाथ हिलाते, पांव बढ़ाते, मन मुसकाते, गाते गीत।
हम भारत की अमर जवानी
सागर की लहरें लासानी

गंग-जमुन के निर्मल पानी
हिमगिरि की ऊंची पेशानी
सब के रक्षक सब के मीत।
चल मर्दाने सीना ताने
हाथ हिलाते, पांव बढ़ाते, मन मुसकाते, गाते गीत।
जग के पथ पर जो न रुकेगा
जो न झुकेगा, जो न मुड़ेगा।
उसका जीवन, उसकी जीत।
चल मर्दाने सीना ताने
हाथ हिलाते, पांव बढ़ाते, मन मुसकाते, गाते गीत।

अभ्यास के प्रश्न

द :— निम्नांकित प्रश्नों का जो उत्तर आपको सर्वाधिक उपयुक्त प्रतीत होता हो उसका क्रमाक्षर सामने के कोष्ठक में लिखिए—

०१. 'जुगनू' शीर्षक कविता में, कवि, मनुष्य जीवन के लिए प्रेरणा का क्या संदेश देना चाहता है ?
(क) सदा विद्रोह करते रहो। (ख) सदा आलोक बिखेरते रहो। (ग) निराशा के अंधकार में भी मन को आशान्वित रखो। (घ) विपदाओं में भी अविचल रहो। (च) लगन के साथ कर्त्तव्य-पथ पर बढ़ते रहो।
( )

०२. 'उठा जो शीश सकते थे, उन्होंने सिर झुकाया है'। सर झुकाने का क्या कारण आपकी समझ में आता है ?
(क) विनम्रता। (ख) भय। (ग) अपराध भावना। (घ) समझौतावाद (च) दौर्बल्य। ( )

०३. 'चल मर्दाने सीना ताने' शीर्षक कविता का मूल-भाव क्या है ?
(क) हम वीर हैं। (ख) हम निर्भीक हैं। (ग) हम सब एक हैं। (घ) हमारी विजय होगी। (च) हमें सदा प्रसन्न रहना चाहिए।
( )

०४. 'उसका जीवन, उसकी जीत' पंक्ति में कवि किसकी जीत बतला

रहा है ?

(क) जो मुस्कराता रहता है। (ख) जो राष्ट्र-भक्त है। (ग) सीनातान कर चलता है। (घ) जो रुकना, झुकना नहीं जानता। (जो सबका मित्र है। (

नोट :— निम्न प्रश्नों का उत्तर १० शब्दों में दीजिए—

प्र० ५. 'मगर इस रात में भी **लौ लगाये** कौन बैठा है ?' 'लौ लगाये' आशय स्पष्ट कीजिए।

प्र० ६. 'जुगनू' की निष्ठा, किन शब्दों के माध्यम से कवि ने प्रकट की है

प्र० ७. 'हम भारत की अमर जवानी, सागर की लहरें लासानी।' पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिये।

प्र० ८. इतिहास से ऐसे तीन व्यक्तियों का उदाहरण दीजिए जिनका जीवन जुगनू की ही भांति निष्ठा, विद्रोह, संकल्प एवं निर्माण का प्रतीक रहा हो। इनके जीवन से आपको क्या प्रेरणा मिलती है। उत्तर-सीमा १०० शब्द।

प्र० ९. कविवर बच्चन की संकलित कविताएं आपके मन पर जो प्रभाव अंकित करती हैं उसे १०० शब्दों। में लिखिए।

---

१७. सुधीन्द्र

जन्म : सन् १९१७ ई०
मृत्यु : सन् १९५४ ई०

जीवन-परिचय—

स्वर्गीय सुधीन्द्र का मूल नाम ब्रह्मदत्त शर्मा था। 'सुधीन्द्र' उनका उपनाम था। उनका जन्म कोटा के खैराबाद नामक स्थान में हुआ। उनकी

ाक्षा कोटा तथा कानपुर में हुई। वे हिन्दी और अंग्रेजी में एम. ए. थे। हिन्दी कविता में क्रांतियुग' शीर्षक शोध-प्रबंध पर उन्हें पी. एच. डी. की पाधि प्रदान की गई। उन्होंने जीवन में बड़े संघर्ष झेले। पुलिस विभाग नौकरी प्रारंभ कर वे निरंतर आगे बढ़ते गये। उन्होंने वनस्थली विद्यापीठ, लवंत राजपूत कालेज (आगरा) और गवर्नमेंट कालेज (अजमेर) में हिन्दी-प्राध्यापक तथा अध्यक्ष के पद पर काम किया। 'जीवन-साहित्य' आदि ई पत्रिकाओं का भी उन्होंने संपादन किया। सुधीन्द्र सरल और शांत वभाव के व्यक्ति थे।

चनाएं —

काव्य : जौहर, शंखनाद, प्रलय-वीणा, अमृत-लेखा, प्रेयस- गीत, (अप्रकाशित) गीतांजली (अनुवाद)

आलोचना : हिन्दी कविता का क्रांति-युग, केशवदास की राम-चंद्रिका, आधुनिक कवि, हिन्दी कविता में युगांतर, प्राचीन कवि।

नाटक : राम-रहमान, ज्वाला और ज्योति, एकांकिनी आदि।

संपादन : राष्ट्र वीणा, जीवन-साहित्य, हिन्दी-पत्रिका, वनस्थली पत्रिका, मरुभारती।

वशेषताएं—

सुधीन्द्र मुख्य रूप से कवि थे। प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना मुख्यतः नके काव्य में मुखरित हुई है। राजस्थान में नये-युग का शुभारंभ सुधीन्द्र े आगमन के वाद से ही माना जाता है। उन्होंने सर्व-प्रथम राजस्थान की ाव्य-प्रतिभा को अखिल भारतीय स्तर पर प्रतिष्ठित किया। उनकी कविता ं छायावादी अमूर्तता, राष्ट्रीय चेतना, प्रगतिवादी स्वर और आशा-निराशा े अनेक रंग उभरे हैं। उन के काव्य में जागरण का संदेश और सामाजिक वषमता के प्रति तीव्र आक्रोष है। गांधी-युग में जन्म लेकर, संघर्ष-मय ांतिकाल में अपनी प्रतिभा का विस्तार कर, सौन्दर्य की पृष्ठभूमि पर काव्य का सृजन कर उन्होंने अपनी कीर्ति को अमर कर लिया है। उनकी कविता में दार्शनिक की जिज्ञासा, प्रेम-विरह की व्याकुलता और जीवन के प्रति आस्था का स्वर है। गांधी और टैगोर का उनके काव्य-सृजन पर ।

प्रभाव है। एक ओर वे रूप, रंग, रस के अमर गायक के रूप में हमारे सामने आते हैं, दूसरी ओर जीवन का कठोर सत्य उन्हें यथार्थ की भूमि न छोड़ने के लिये विवश करता है। अपने युग की सभी काव्य-धाराओं के साथ उन्होंने अपना स्वर मिलाया है।)

मिट्टी की कहानी

(संकलित कविता में मिट्टी की महिमा का प्रतिपादन किया गया है। कवि मनुष्यों और देवताओं की कहानी के बजाय, मिट्टी की व्यापकता और गरिमा की कहानी कहता है। उसकी दृष्टि में नक्षत्र सूर्य, चन्द्र, मेघ, आदि सब में मिट्टी की सत्ता विराजमान है। सृष्टि के समस्त चर-अचर पदार्थों में मिट्टी के ही विविध रूप व्याप्त हो रहे हैं। पर्वत, सागर, सरिता, खेत, नगर, ज्वालामुखी, भूकम्प-सब में मिट्टी का अस्तित्व भिन्न भिन्न रूप से समाया हुआ है। मनुष्य, सभ्यता, कला, साहित्य, धर्म-कर्म, काल, युग, यहां तक कि भूगोल और इतिहास भी मिट्टी के अस्तित्व और उसकी महिमा के ही विभिन्न रूप हैं। कवि ने मिट्टी की सर्वव्यापकता की चर्चा करते हुए, मिट्टी को सर्व-शक्तिमान घोषित किया है।

कविता का स्वर प्रगतिवादी है, शैली ओजमयी और भाषा प्रसाद गुण सम्पन्न है।)

सुन चुके हो देवताओं की कहानी,
सुन चुके हो तुम मनुष्यों की कहानी,
मैं सुनाता आज मिट्टी की कहानी।

(१)

जल रहे हैं दीप जो आकाश के वे
प्रति निशा दीपावली सी लग रही है,
जानते हो कौन इस में जल रहा है ?
मैं कहूंगा—एक मिट्टी, जग रही है।

कोटि सूरज, चन्द्र, गृह, नक्षत्र, तारे,
मैं कहूंगा, एक मिट्टी ने संवारे,

इन्द्र धनुषी मेघ जो सुन्दर घिरे हैं
एक मिट्टी ही उन्हें यों रंग रही है।
एक मिट्टी के लिये ऊषा मधुर है—
एक मिट्टी के लिये संध्या सुहानी।
मैं सुनाता आज मिट्टी की कहानी।

(२)

'वायु', मिट्टी की कि चलती सांस देखो,
'जल', कि मिट्टी का लहू जो बह रहा है,
'आग', क्या है ? प्राण की उसकी लपट है,
'शून्य', क्यों आकाश ? यह मिट्टी कहां है ?
जड़ कि पशु-नर-दैत्य दानव देवता है,
एक मिट्टी की कि वह चिद्रूपता है।
और जिस पल पूर्ण अतिमानस जगा है,
खिल गया बस फूल, मिट्टी का कहां है ?
किन्तु मिट्टी ही अमर है मूल उसकी-
भूल कर भी है न यह हमको भुलानी।
मैं सुनाता आज मिट्टी की कहानी।

(३)

उठ गई मिट्टी, हिमालय नाम उसका,
भर उठी मिट्टी, वही सागर कहाया,
यह नदी, जब मन कि मिट्टी का गला था,
खेत, मिट्टी का हिया ही लहलहाया।
घर बसे उस पर, कहीं तुम देश आये
और घर उजड़ा कि फिर वीरान छाये,
फट पड़े ज्वालामुखी-मिट्टी कुपित थी,
हिल गई मिट्टी वहां भूकम्प आये।
एक मिट्टी की यहां सब काल हलचल,
है अचल मिट्टी किसी ने पर न जानी।

मैं सुनाता, आज मिट्टी की कहानी।

(४)

'मनुज'-मिट्टी की यही तो चेतना है,
'सभ्यता क्या है'? कि मिट्टी के चरण ही,
यह 'कला'-श्रृंगार मिट्टी ने किया है,
और यह 'साहित्य,' मिट्टी के वचन ही।

कर्म है शासित कि मिट्टी के नियम से,
धर्म मिट्टी के कि संयम और शम से,
काल क्या है? यह कि मिट्टी की प्रगति ही,
और युग क्या? एक मिट्टी के कि क्षण ही।

तुम कहो भूगोल-मिट्टी की प्रगति है,
और यह इतिहास-मिट्टी की निशानी।
मैं सुनाता आज मिट्टी की कहानी।

(५)

है न मिट्टी तुच्छ, वह नश्वर नहीं है,
वह प्रलय से भी न पल भर हारती है,
कौन मिट्टी को दबा कर जी सका है?
वह अमर है, मृत्यु को भी मारती है।

जो न मिट्टी में बसा है या पला है,
जो न मिट्टी में रमा है या ढला है,
चक्रवर्ती हो कि वह जग का विजेता-
आज ईश्वर को वही ललकारती है।

कौन मिट्टी का भला तूफान रोके?
कौन मिट्टी की भला टोके जवानी।
मैं सुनाता आज मिट्टी की कहानी।

चलते रहो निरंतर

(प्रस्तुत कविता में कवि ने श्रम की महिमा बताते हुए निरंतर चलते रहने की प्रेरणा दी है। मनुष्य को अपने जीवन में सूर्य के समान परिश्रमी

और गतिशील होना चाहिये। स्थिरता से विकास रुक जाता है। श्रम से जी चुराने वाले लोग पापी हैं और वे कभी भी किसी की कृपा या समृद्धि प्राप्त नहीं कर सकते। जो सोता है, उसका भाग्य भी सोया रहता है और जो जागृत एवं गतिशील है, उसका भाग्य सदा उसका साथ देता है।

यह कविता 'ऐतरेय ब्राह्मण' की "चरैवेति" कविता का हिन्दी रूपांतर है। इस में इन्द्रदेव, हरिश्चन्द्र के पुत्र रोहित को श्रमशील रहने को प्रेरित कर रहे हैं।)

चलते रहो सदैव जगत में
चलते रहो—निरन्तर।
श्रम से जो थकता न कभी है
पाता सिद्धि वही नर-वर,
बैठे हुए पुरुष को पातक
सदा दवा लेता सत्वर।
चलता ही जो रहे अथक, मैं—
इन्द्र, उसी का हूं सहचर। चलते रहो०।

सदा खड़े रहने वाले का
रहता है सौभाग्य खड़ा,
बैठे का बैठा रहता है
पड़े हुए का भाग्य पड़ा
उठ कर जो चल पड़ा, भाग्य भी
उसका चल पड़ता-सत्वर। चलते रहो०

सोने वाला ही कलियुग है
अंगड़ाने वाला द्वापर,
खड़ा हो गया है जो उठ कर
वह त्रेता-युग है नर-घर।
सत्य कृत्य-युगी है वह मानव
किन्तु चल पड़ा जो पथ पर। चलते रहो०।

जो चलता, वह मधु पाता है,
चलता हुआ, सु-फल चखता,
सूरज का देखो श्रम, अविकल
चलता हुआ न वह थकता ।
चलने में आलस करके वह,
बैठ नहीं रहता पल भर। चलते रहो० ।

अभ्यास के प्रश्न

नोट :—नीचे कुछ प्रश्न और उनके पाँच-पाँच विकल्प दिये गये हैं। सही उत्तर का क्रमाक्षर दाँयी ओर कोष्ठक में लिखिये—

प्र० १. इस कविता में मिट्टी शब्द किस का प्रतीक है।
(क) मृत्यु । (ख) मृत्तिका । (ग) सामान्यजंन (घ) समाज । (च) धरती । ( )

प्र० २. चिद्रूपता शब्द का क्या अर्थ है ?
(क) प्रकाश । (ख) परिवर्तन । (ग) महत्त्व । (घ) अलौकिकता । (च) प्रभाव । ( )

प्र० ३. कवि ने मिट्टी की महिमा क्यों गाई है ?
(क) मिट्टी 'वायु-जल' में विद्यमान है । (ख) मिट्टी का क्रोध सर्वनाश का कारण है । (ग) मिट्टी ही 'कला-साहित्य' का मूल है । (घ) मिट्टी अमर-अनश्वर है । (च) मिट्टी ने भूगोल-इतिहास बनाये हैं । ( )

प्र० ४. 'आज ईश्वर को वही ललकारती है' पंक्ति लिखने का क्या उद्देश्य है ?
(क) ईश्वर के अस्तित्व को चुनौती देना । (ख) युग की नास्तिकता प्रदर्शित करना । (ग) मिट्टी की अपार शक्ति की घोषणा करना । (घ) मिट्टी और ईश्वर की समानता दिखाना । (च) ईश्वर को मिट्टी से तुच्छ सिद्ध करना । ( )

प्र० ५. 'कौन मिट्टी की भला टोके जवानी' पंक्ति में 'जवानी' शब्द मिट्टी की किस शक्ति को व्यक्त करता है ?
(क) नाश । (ख) रचना । (ग) आनन्द । (घ) कल्याण । (च)

गति । ( )

प्र० ६. 'चलते रहो निरन्तर' कविता में निरन्तर चलते रहने का कवि क्यों आग्रह करता है ?

(क) इससे त्रेता का आनन्द युग लौट आयेगा । (ख) सूर्य के समान तेजस्विता प्राप्त होगी । (ग) भाग्य के बन्द द्वार खुल जायेंगे । (घ) संसार में कीर्ति का प्रसार होगा । (च) पाप का भार नहीं बढ़ेगा । ( )

प्र० ७. 'सूर्य' हमें किस बात की प्रेरणा देता है ?

(क) परिश्रम करते रहने की । (ख) अंधकार से लड़ने की । (ग) निरन्तर चलते रहने की । (घ) परोपकार करने की । (च) तेजस्वी बने रहने की । ( )

प्र० ८. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ लगभग ४० शब्दों में लिखिये ।

(१) इन्द्रधनुषी मेघ जो सुन्दर घिरे हैं
एक मिट्टी ही उन्हें यों रंग रही है
एक मिट्टी के लिए ऊषा मधुर है
एक मिट्टी के लिए संध्या सुहानी ।

(२) फट पड़े ज्वालामुखी, मिट्टी कुपित थी
हिल गई मिट्टी वहाँ भूकम्प आये
एक मिट्टी की यहाँ सब काल हलचल
है अचल मिट्टी किसी ने पर न जानी ।

(३) कर्म है शासित कि मिट्टी के नियम से
धर्म मिट्टी के कि संयम और शम से ।

(४) सोने वाला ही कलियुग है
अँगड़ाने वाला द्वापर
खड़ा हो गया है जो उठ कर
वह त्रेता-युग है नरवर
सत्य कृत्य-युगी है वह मानव,
किन्तु चल पड़ा जो पथ पर ।

प्र० ९. 'बैठे हुए पुरुष को पातक सदा दवा लेता सत्वर' पंक्ति में 'पातक' शब्द का विशेष अर्थ दस शब्दों में लिखिये।

प्र० १०. 'चलते रहो निरन्तर' कविता की पौराणिक कथा को अपने शब्दों में लिखिये।

प्र० ११. खड़े रहने वाले का भाग्य खड़ा, बैठे का भाग्य बैठा और पड़े हुए का भाग्य पड़ा रह जाता है—यहाँ 'खड़ा', 'बैठा' और 'पड़ा' के लाक्षणिक अर्थ को स्पष्ट कीजिये।

प्र० १२. 'कलियुग', 'त्रेता' और 'द्वापर' के क्या लक्षण है ?

प्र० १३. सृष्टि के पंच तत्वों में मिट्टी किस-किस रूप में समाई हुई है ? तीन-चार वाक्यों में बताइये।

प्र० १४. पृथ्वी पर अमर होने का सर्वश्रेष्ठ उपाय क्या है ? २५ शब्दों में लिखिये।

प्र० १५. चक्रवर्ती सम्राट क्यों नष्ट हो गये ? उत्तर सीमा १० शब्द।

प्र० १६. 'एक मिट्टी की यहाँ सब काल हल चल, है अचल मिट्टी किसी ने पर न जानी' पंक्ति लिख कर कवि मनुष्य से क्या कहना चाहता है ? उत्तर सीमा ४० शब्द।

प्र० १७. मिट्टी की महत्ता बताने के लिए कवि ने क्या-क्या उदाहरण दिए हैं। लगभग १०० शब्दों में लिखिये।

प्र० १८. 'दूसरे कवियों ने मिट्टी को नश्वर कहा, कवि सुधीन्द्र ने मिट्टी को अनश्वर।' आप मिट्टी के किस रूप को स्वीकारते हैं और क्यों ?

प्र० १९. कबीर का एक दोहा है :—

माटी कहे कुम्हार सों, तू क्यों रौंदे मोय,
एक दिन ऐसा आयगा, में रौंदौंगी तोय।

तथा

सुधीन्द्र की पंक्तियाँ हैं :—

है न मिट्टी तुच्छ, वह नश्वर नहीं है
वह प्रलय से भी न पल भर हारती है

कौन मिट्टी को दबाकर जी सका है
वह अमर है मृत्यु को भी मारती है।

इन दोनों कविताओं को ध्यानपूर्वक पढ़ें तो दोनों कवियों के मनोभावों में आप क्या अन्तर पाते हैं—लगभग ८० शब्दों लिखिये।

---

१८. शिवमंगलसिंह 'सुमन' | जन्म : सन् १९१६ ई०

जीवन-परिचय—

सुमन जी हिन्दी के लोकप्रिय कवि और गीतकार हैं। आपकी शिक्षा बनारस में हुई। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से एम० ए०, डी० लिट० की उपाधि प्राप्त करने के बाद आप इन्दौर और उज्जैन के महाविद्यालयों में हिन्दी अध्यापक के रूप में कार्य करते रहे। आपने बीच में कुछ समय तक नेपाल के भारतीय दूतावास में सांस्कृतिक अधिकारी के रूप में भी कार्य किया। इस समय विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के उपकुलपति पद पर कार्य कर रहे हैं।

कृतियां—

'सुमन' जी की मुख्य रचनाएं हैं, 'हिल्लोल,' 'जीवन के गान,' 'विश्वास बढ़ता ही गया,' 'पर आँखें नहीं भरीं' आदि।

काव्यगत विशेषताएं—

सुमन जी के काव्य का मूल स्वर 'आशावादिता' का है। प्रगतिवाद के अंतिम चरण में जिन कवियों के नाम मुख्य रूप से उभर कर आये, उनमें 'सुमन' का स्थान विशेष महत्व का है। उनके प्रणय गीतों में मन की आकुल विह्वलता और वेदना की गहरी टीस मिलती है किन्तु उन्हीं गीतों में

सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति पूर्ण सजगता भी है। अपने समाज, रूढ़ियों और वातावरण के प्रति तीव्र आक्रोश उनकी कविता में व्यक्त हुआ है। जीवन-संघर्ष की वास्तविकता और विद्रोह का तूफानी प्रवाह उनके काव्य में विशिष्ट भंगिमा के साथ प्रस्तुत हुआ है। अभिव्यक्ति की सहजता ने उनके काव्य को प्रभावशाली और हृदयग्राही बनाया है। उनके काव्य में जीवन के अनेक रंगों का चित्रण हुआ है। प्रणयी की व्याकुलता, जागृति का संदेश, नव-युग की आकांक्षा, वैषम्य के प्रति आक्रोश, प्रगतिवाद का सुनियोजित स्वर और आशा-निराशा के अनेक प्रकार के गहरे रंग उनकी कविता में मिलते हैं।

'सुमन' के काव्य की भाषा स्वाभाविक, सरल और सुबोध है। ओजस्वी शैली के कारण उनका काव्य प्रभावशाली बन पड़ा है। कवि सम्मेलनों में अपनी ओजमयी शैली के कारण सुमन को बडी लोकप्रियता प्राप्त हुई है।

पथिक से

(प्रस्तुत कविता में कवि ने कर्त्तव्य-मार्ग पर निरन्तर बढ़ते रहने की प्रेरणा दी है। पथिक को संबोधित करते हुए कवि ने उसे राह की बाधाओं की चिन्ता न करते हुए पथ पर अग्रसर होते रहने के लिए उत्साहित किया है। चाहे मार्ग में कांटे बिछे हों, अपने प्रियजनों ने मुंह मोड लिया हो, सपने टूट गये हों, तब भी निराशा का त्याग कर, नये उत्साह के साथ आगे बढ़ते रहना चाहिए। युद्ध के समय पत्नी के आँसू का ध्यान न रख कर, अपने कर्त्तव्य का स्मरण करना चाहिऐ। देश के लिऐ जब त्याग और बलिदान की माँग हो तब तनिक भी विचलित हुए बिना, सहर्ष कर्त्तव्य-पथ का अनुसरण करना चाहिये।

कविता बडी प्रेरणादायी है। कवि ने हर संकट के क्षण उत्साहित होकर कर्त्तव्य-पूरा करने का उद्बोधन दिया है। भाषा सरल और भाव स्फूर्ति देने वाले हैं।)

पथ भूल न जाना पथिक कहीं।
पथ में काँटे तो होंगे ही,
दूर्वादल, सरिता, सर होंगे।

सुन्दर गिरि, वन वापी होंगी
सुन्दर सुन्दर निर्झर होंगे ।
सुन्दरता की मृग-तृष्णा में
पथ भूल न जाना पथिक कहीं ।

जब कठिन कर्म-पगडंडी पर,
राही का मन उन्मुख होगा ।
जब सपने सब मिट जायेंगे,
कर्त्तव्य-मार्ग सम्मुख होगा ।
तब अपनी प्रथम विफलता में
पथ भूल न जाना पथिक कहीं

अपने भी विमुख, पराये बन
आंखों के सम्मुख आयेंगे ।
पग-पग पर घोर निराशा के
काले बादल छा जायेंगे ।
तब अपने एकाकीपन में
पथ भूल न जाना पथिक कहीं ।

रणभेरी सुन, कह 'विदा,' 'विदा'
जब सैनिक पुलक रहे होंगे ।
हाथों में कुंकुम-थाल लिये
कुछ जलकण ढुलक रहे होंगे ।
कर्त्तव्य-प्रेम की उलझन में
पथ भूल न जाना पथिक कहीं ।

कुछ मस्तक कम पड़ते होंगे
जब महाकाल की माला में ।
माँ माँग रही होगी आहुति
जब स्वतन्त्रता की ज्वाला में ।
पल भर भी पड़ असमंजस में
पथ भूल न जाना पथिक कहीं ।

हमें न बाँधो प्राचीरों से

(यह कविता कवि के 'पर आँखें नहीं भरी,' शीर्षक काव्य-संकलन से ली गई है। इसमें उन्मुक्त, स्वतन्त्र जीवन की लालसा को कवि ने अभिव्यक्ति दी है। परतन्त्र जीवन की विवशता और पीड़ा को व्यक्त करते हुए कवि ने बन्धन-मुक्त, स्वच्छन्द जीवन की महिमा, एक पंछी की वाणी के माध्यम से प्रकट की है। उन्मुक्त गगन में उडने वाले पंछी को सोने के पिंजरे में बंद परतन्त्र जीवन के प्रति कोई आकर्षण नहीं है। वह हर अभाव में भी स्वतन्त्र और उन्मुक्त रहना चाहता है।

कविता के भाव गम्भीर हैं। सीधी और सरल भाषा में कवि ने स्वतन्त्र बने रहने की बलवती इच्छा व्यक्त की है। शैली ओजमयी है।)

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पायेंगे।
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जायेंगे।

हम बहता जल पीने वाले,
मर जायेंगे भूखे प्यासे।
कही भली है कटुक निंबौरी
कनक-कटोरी की मैदा से।

स्वर्ण-शृंखला के बन्धन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले।
बस सपनों में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले।

ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नीले नभ की सीमा पाने।
लाल किरण सी चोंच खोल
चुगते तारक-अनार के दाने।

होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा होडी।
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती सांसों की डोरी।

नीड़ न दो चाहे, टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो।
लेकिन पंख दिये हैं तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

पागल प्राण बधेंगे कैसे
नभ की धुंधली दीवारों से
हमें न बाँधो प्राचीरों से।

अभ्यास के प्रश्न

नोट :—नीचे कुछ प्रश्न और उनके उत्तर के पाँच-पाँच विकल्प दिये गये हैं। सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर का क्रमाक्षर दाँयी ओर के कोष्ठक में अंकित कीजिए।

प्र० १. 'पथिक से' कविता में मुख्य रूप से कौन सा भाव प्रकट हुआ है ?
(क) स्वतन्त्रता की कामना। (ख) कष्टों को आमन्त्रण। (ग) विध्वंस की इच्छा। (घ) परिवर्तन की आकांक्षा। (च) नये भविष्य का स्वप्न।
(क)

प्र० २. 'नीड़ न दो चाहे टहनी का, आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो' पंक्ति में कवि की किस मनःस्थिति का चित्रण है ?
(क) विवशता। (ख) रोष। (ग) विकलता! (घ) क्षोभ। (च) अनुनय-विनय।
(च)

प्र० ३. 'पथ में कांटे तो होंगे ही' कह कर कवि पथिक को किस सत्य से परिचित कर देना चाहता है ?
(क) भविष्य की भयावहता को पहचान ले। (ख) भयभीत होकर वर्तमान को असुरक्षित न करे। (ग) यथार्थ से परिचित हो जाये। (घ) निर्भीक होकर अग्रसर हो (च) अंग्रेजी सत्ता के स्वभाव से

परिचित हो जाये ।

प्र० ४. 'पथिक' शीर्षक कविता में उन दो सुखद-स्थितियों का वर्णन कीजिए जो पथिक को कर्त्तव्य विमुख कर सकती हैं । उत्तर सीमा २० शब्द ।

प्र० ५. कर्त्तव्य-प्रेम' की उलझन पथिक के सामने किस रूप में प्रस्तुत होती । ३० शब्दों में लिखें ।

प्र० ६. 'पथिक' शीर्षक कविता में उन शब्द प्रतीकों को चुनिये जो सुख-दुःख की मनःस्थितियों को व्यक्त करने के लिए काम में लिये गये हैं ।

प्र० ७. संकलित, कविताओं में कवि ने 'पंछी' तथा 'पथिक' के माध्यम से भाव व्यक्त करना क्यों चुना है ? चालीस शब्दों में लिखें ।

प्र० ८. 'कहीं भली है कटुक निबौरी, कनक कटोरी की मैदा से' पंक्ति का भाव ३० शब्दों में स्पष्ट कीजिए ।

प्र० ९. 'पथिक' शीर्षक कविता से प्रेरणा लेकर आप अपने हताश मित्र को किस प्रकार निराशा त्यागने के लिए प्रेरित करेंगे ? उत्तर सीमा १०० शब्द ।

प्र० १०. आज की परिस्थिति में, 'पंछी' कविता से प्रेरणा लेकर हम किन किन सामाजिक एवं आर्थिक बंधनों से मुक्त होना चाहेंगे ? उत्तर सीमा १०० शब्द ।

प्र० ११. भूमिका में दी गई 'प्रगतिवाद' की विशेषताओं को पढ़ कर संकलित कविताओं के आधार पर शिवमंगल सिंह 'सुमन' की काव्यगत विशेषताओं पर लगभग १५० शब्दों में अपने विचार प्रकट कीजिए ।

---

१९ नंद चतुर्वेदी | जन्म : १९२३ ई०

जीवन परिचय—

श्री नंद चतुर्वेदी, हिन्दी की नई पीढ़ी के प्रमुख कवि हैं । इनका जन्म

मध्य प्रदेश के रावजी की पीपल्या नामक ग्राम में हुआ लेकिन इनकी शिक्षा-दीक्षा और लेखन-क्रम का सारा विकास राजस्थान में ही हुआ है। झालावाड़ नरेश के सम्पर्क और ब्रजभाषा के कवि स्व० राजकवि हरिनाथ के सानिध्य में इन्होंने ब्रजभाषा में काव्य रचना प्रारम्भ की। बाद में हिन्दी कविता के सभी आन्दोलनों से उनका सम्बन्ध रहा और उनकी प्रतिभा निखरती गई। नंद ओजस्वी वक्ता, चिन्तनशील साहित्यकार और मार्मिक अभिव्यक्ति के कवि हैं। अध्यापन उनका व्यवसाय है। वे विचारों से समाजवादी हैं।

रचनाएँ—

नंद चतुर्वेदी की अनेक कविताएँ हिन्दी की प्रतिनिधि पत्रिकाओं में समय-समय पर प्रकाशित होती रही हैं। 'पृथ्वी गंधमयी तुम' उनका यंत्रस्थ काव्य संकलन है। राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित 'राजस्थान के आधुनिक हिन्दी कवि' नामक काव्य ग्रन्थ का उन्होंने सम्पादन किया है। उनके विचारोत्तेजक लेखों, आलोचनाओं और निबन्धों का संकलन भी शीघ्र प्रकाशित हो रहा है। 'बिन्दु' त्रैमासिकी का वे सम्पादन कर रहे हैं।

काव्यगत विशेषताएँ—

नंद चतुर्वेदी राजस्थान के सर्वाधिक चर्चित कवियों में से हैं। उन्हें कवि तथा आलोचक, दोनों रूपों में जाना जाता है। उनकी कविता का क्षेत्र बड़ा विस्तृत है। वे 'नव-मानवतावादी' विचारों के पक्ष-साधक हैं। अपने लेखन का क्रम उन्होंने ब्रजभाषा के कवित्त, सवैये, घनाक्षरी आदि छंदों के माध्यम से प्रारम्भ किया। समय की धार के साथ-साथ उनके काव्य के रूप, शिल्प और विचार निरन्तर परिवर्तित होते रहे हैं।

वे समाजवादी विचारधारा के पोषक कवि हैं। उन्होंने रूप, रंग और गंध के प्रेम गीत भी लिखे हैं किन्तु ऐसे गीतों में भी उनकी दृष्टि सामाजिकता और दायित्व-बोध से असम्पृक्त नहीं रही है। उनके काव्य में सामाजिक विषमता, शोषण, धार्मिक कठमुल्लापन और शासक-वर्ग की निरंकुशता के प्रति तीव्र आक्रोश की अभिव्यक्ति मिलती है। उनकी प्रगतिवादी रचनाओं में सामाजिक चेतना के दर्शन होते हैं। राजस्थान के कवियों में

उनका महत्त्वपूर्ण, स्थान है।

समय की रेत

प्रस्तुत कविता में कवि ने उन सृजनधर्मियों को अपनी प्रणति अर्पित की है जो अपने युग को नया रूप देने के लिए अथक-श्रम कर रहे हैं। कवि उनके प्रति आभार प्रकट करता है जो शब्द द्वारा, शिल्प द्वारा अथवा खेतों, कारखानों आदि के माध्यम से निर्माण का नया इतिहास रच रहे हैं। कवि ने उन्हें 'सृजन का देवता' कह कर संबोधित किया है। समय को गति देने और उसके रूप को सँवारने-सजाने के लिए जो लोग जुटे हुए हैं, कवि ने उन्हें अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित किये हैं।

कविता नई शैली और नये भाव-बोध की है। भाषा सरल और भाव विचारोत्तेजक हैं।

इस समय की रेत पर तुम कौन हो ?
जो गढ़ रहे हो
वह न जो देखा गया है
वह न जो जाना गया है
कौन हो सच ?
स्वप्न को यों बाँध
कौतुक कर रहे हो
सृष्टि के, नव-शिल्प के
नव शब्द के
दे रहे हो तुम समय को देह
ऐसे कौन हो तुम ?
तुम जहाँ हो और जो भी हो
तुम अपरिचित हो कि परिचित हो
रास्ते पर हो कि तुम हो मंज़िलों पर
खेत पर हो या कि मिल में हो
लिख रहे हो, बोलते हो, छापते हो
सार यह है रच रहे हो

सृष्टि के एकान्त अनजाने क्षणों को
प्रणति मेरी लो
समय की धार पर जो भी खड़े हो
तुम जहाँ भी भर रहे हो स्नेह आसव
और जिस क्षण भर रहे हो
क्षण नहीं इतिहास है वह
उस नये इतिहास का यह सेतु
जो भी चुन रहे हो
धन्य हो तुम !
यों अनेकों वर्ष बीते, बीतते हैं
यों समय की रेत पर किसने किये हैं चरण अंकित
जानते हो तुम नया कुछ भी नहीं है
इस मरण से, काल के इस अगम पथ से
तुम सुधामय स्वर जहाँ भी गुनगुनाते
तुम सृजन के देवता हो !
खींच देते हो जहाँ पर दो लकीरें
बस वहीं पर समय नत शिर
तुम समय की रेत पर भी
बाँध देते हो कि जो अब तक नहीं बाँधा गया है।

पृथ्वी गंधमयी तुम !

प्रस्तुत कविता में कवि ने पृथ्वी की महिमा का उल्लेख किया है। सांकेतिक भाषा-शैली और नये बिम्बों-प्रतीकों के माध्यम से कवि ने पृथ्वी के सर्वोपरि महत्त्व की चर्चा की है। कवि की मान्यता है कि इस पृथ्वी के समक्ष अब सूर्य का महत्त्व भी रहने वाला नहीं है। सारे स्वप्न, इस पृथ्वी पर ही साकार होने वाले हैं। यह कविता आधुनिक युग की 'नव-भावबोध' वाली परम्परा का अच्छा रूप प्रस्तुत करती है।

अब वे दिन आ गये हैं
जब सूर्य लज्जित हो जायेगा

क्योंकि उसके समस्त प्रभा-मण्डल
के इर्द-गिर्द कुछ नहीं होगा
केवल फूल के असंख्य पंख होंगे
जिन पर बैठ कर उतरेगी किरण
अब वे दिन आ गये हैं
जब मलय-गंधित अप्सरा लोक की
तरफ कोई देखेगा तक नहीं
क्योंकि रूप-मुग्धा उर्वशी
यहीं इस पलाश वन को समर्पिता रहेगी
मेरी पृथ्वी जब तक तुम गंधमयी हो
इस जन्म-मरण का
कोई अर्थ मैं पूछूंगा तक नहीं।

अभ्यास के प्रश्न

नोट :—निम्नांकित बहुचयनात्मक प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर का क्रमाक्षर दाहिनी ओर के कोष्ठक में लिखिये—

प्र० १. 'पृथ्वी गंधमयी तुम' कविता का मुख्य उद्देश्य क्या है ?
(क) प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण। (ख) धरती की गरिमा का चित्रण। (ग) मनुष्य की महानता का चित्रण। (घ) उर्वशी के रूप का वर्णन। (च) जन्म-मरण का रहस्य वर्णन। ( )

प्र० २. 'अब वे दिन आ गये हैं' इसमें 'वे' कह कर कवि ने किन दिन की ओर संकेत किया है।
(क) सुख के दिन। (ख) समृद्धि के दिन। (ग) सौन्दर्य के दिन। (घ) स्पर्धा के दिन। (च) विलासिता के दिन। ( )

प्र० ३. 'अप्सरा लोक की तरफ कोई देखेगा तक नहीं'। क्यों नहीं देखेगा ?
(क) विलासिता के कारण। (ख) रूप की चकाचौंध के कारण। (ग) अप्सराओं के चरित्र दौर्बल्य के कारण। (घ) पृथ्वी के अपरिमित सौन्दर्य के कारण। (च) अप्सरा लोक की एकरसता के कारण। ( )

प्र० ४. 'इस जन्म-मरण का कोई अर्थ मैं पूछूंगा तक नहीं' पंक्ति का कौन सा अर्थ शुद्ध है ?

(क) न जन्म लूंगा न मृत्यु होगी। (ख) अमरत्व को प्राप्त कर लूंगा। (ग) जन्म-मरण निरर्थक हो जायेगा। (घ) जन्म-मरण का दुःख व्याप्त नहीं होगा। (च) जन्म-मरण की अभिलाषा नहीं रहेगी। ( )

प्र० ५. 'समय की रेत' शीर्षक कविता में 'प्रणति' शब्द का क्या अर्थ है ?

(क) प्रणाम। (ख) प्रेम। (ग) समर्पण। (घ) प्राण। (च) सर्वस्व। ( )

प्र० ६. 'समय की रेत' कविता में रचनाकार की किस शक्ति को कवि महत्त्व देता है ?

(क) वह जनता का अनुरंजन करता है। (ख) वह समय को जीत लेता है। (ग) वह नया इतिहास बनाता है। (घ) वह सर्वत्र पूजा जाता है। (च) वह आत्मा का संस्कार करता है। ( )

प्र० ७. 'क्षण नहीं इतिहास है वह' पंक्ति किसके महत्त्व को प्रकट करने के लिए लिखी गयी है।

(क) क्षण के महत्त्व को। (ख) इतिहास के महत्त्व को। (ग) मनुष्य के महत्त्व को। (घ) कृतिकार के महत्त्व को। (च) कृतियों के महत्व को। ( )

प्र० ८. 'समय की रेत' कविता का मुख्य भाव क्या है ?

(क) समय के पराक्रम को अंकित करना। (ख) समय के स्वभाव को अंकित करना। (ग) सृजनकारों की सामर्थ्य का अंकन करना। (घ) सृजन के प्रति जनता का प्रेम जाग्रत करना। (च) सृजनकारों को उत्साहित करना। ( )

प्र० ९. 'पृथ्वी गंधमयी तुम' कविता में सूर्य के लज्जित होने की बात क्यो कही गई है ? १५ शब्दों में लिखिये।

प्र० १०. उर्वशी को पलाश-वन के प्रति समर्पिता दिखाने में कवि का क्या भाव निहित है—२० शब्दों में लिखिये।

प्र० ११. पृथ्वी की श्रेष्ठता दिखाने के लिए—(सूर्य और उर्वशी का उदाहरण सामने रखिये।) कोई एक नया भाव लेकर ३० शब्दों में लिखिये।

प्र० १२. 'समय की रेत' कविता में खेत वाले, मिल वाले, छापने वाले, बोलने वाले इन सबको सृजनकारों में क्यों सम्मिलित किया है ?

प्र० १३. सृजनकार समय को कैसे बाँध देते हैं ? २० शब्दों में लिखिये।

प्र० १४. निम्न पंक्तियों का अर्थ कीजिये :—

(क) उस नये इतिहास का यह सेतु जो भी चुन रहे हो धन्य हो तुम।

(ख) सार यह है रच रहे हो सृष्टि के एकान्त अनजाने क्षणों को प्रणति मेरी लो।

(ग) अब वे दिन आ गये हैं जब मलय-गंधित अप्सरा लोक की तरफ कोई देखेगा तक नहीं क्योंकि रूप मुग्धा उर्वशी यहीं इस पलाश-वन को समर्पिता रहेगी।

प्र० १५. 'समय की रेत' कविता को आधार मान कर आप जिसे महान् मानते हैं उसकी प्रशंसा में पचास शब्द लिखिये।

---

२०. कन्हैयालाल सेठिया | जन्म : १९२० ई०

जीवन परिचय—

कन्हैयालाल सेठिया राजस्थानी और हिन्दी के प्रमुख कवि हैं। इनका जन्म चूरू जिले के सुजानगढ़ कस्बे में, विजयादशमी के दिन सम्पन्न एवं शिक्षित सेठिया परिवार में हुआ। बी० ए० तक विद्याध्ययन के बाद इन्होंने राजनीति, गांधी-दर्शन, दर्शन और साहित्य का विशेष रूप से अध्ययन किया। गहन चिंतन और अध्ययन के परिणामस्वरूप आपकी प्रतिभा सतत विकासोन्मुखी रही है। राजस्थानी भाषा के ये अनन्य प्रेमी हैं और राजस्थानी

गद्य-गीत और कविता के क्षेत्र में उनकी विशेष देन है। कुछ समय तक सेठिया राजस्थान की राजनीति में भी सक्रिय रहे। सेठिया राजस्थान साहित्य अकादमी के सदस्य भी रह चुके है। इनका संबंध राजस्थान के प्रमुख व्यवसायी परिवार से है।

रचनाएँ --

सेठिया जी की प्रकाशित हिन्दी और राजस्थानी की कृतियों में से निम्न-पुस्तकें उल्लेखनीय हैं

हिन्दी काव्य—

१. वनफूल २. मेरा युग ३. दीप किरण ४. अग्निवीणा ५. प्रतिबिंब ६. आज हिमालय बोला ७. खुली खिड़कियाँ चौड़े रास्ते ८. परमवीर शैतानसिंह ९. जादूगर माओ १०. रक्त दो ११. चीन की ललकार १२. प्रणाम।

राजस्थानी काव्य

१. मींझर २. गलगचिया ३. रमणिये रा सोरठा ४. पाखड़्यां।

काव्यगत विशेषताएँ—

सेठिया जी राजस्थानी के मरु भाग के सरस एवं लोकप्रिय कवि हैं। वे दुनिया की स्पर्धाओं से दूर एकांतप्रिय कलाकार हैं। उनकी गिनती श्रेष्ठतम हिन्दी कवियों में की जाती है। उनके छोटे-छोटे गीतों में दर्शन के सिद्धान्तों की सरल एवं रसपूर्ण व्याख्या मिलती है। बोझिल-से-बोझिल विषय को भी उन्होंने अपनत्व की परिधि में बाँधकर सहज एवं बोधगम्य बना दिया है।

सेठिया की प्रारंभिक रचनाओं पर बच्चन के काव्य-शिल्प का प्रभाव पड़ा है। बाद की रचनाओं में उन्होंने अपना मुहावरा अच्छी तरह पकड़ लिया है। उनकी कुछ कविताओं का स्वर रोमांस और भावुकता का है लेकिन उनकी दार्शनिक दृष्टि, जो उनके काव्य का मूल है, इन गीतों में भी बराबर झांकती रहती है। उन्होंने कल्पना की अछूतीउड़ानें भरी हैं और अनुभूति के छोटे-छोटे क्षणों का चित्रण किया है। उन्होंने सूक्ष्म चिंतन से अपने गीति-शिल्प को सँवारा है। छोटे-छोटे गीतों के माध्यम से दार्शनिक उक्तियों, को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करना उनकी मौलिकता है। सेठिया के गीत, रहस्य, दर्शन, सौंदर्य, तीव्र अनुभूति और दार्शनिक जिज्ञासा से

प्रेरित हैं ।

गीत के अतिरिक्त सेठिया ने प्रयोगवादी काव्य की रचना भी की है। इस तरह के काव्य में छंदों के बंधन से मुक्त होने के अतिरिक्त कवि ने कथ्य में भी संस्कारों से विद्रोह किया है। प्रयोगवादी नये काव्य में कवि ने नए बिंबों और प्रतीकों के माध्यम से अपने सामाजिक परिवेश के प्रति जागरूकता का परिचय दिया है। इस तरह की कविताएँ नव-बोध एवं नये-शिल्प की कविताएँ हैं और इनमें कवि ने परम्परागत मूल्यों के बासी सत्य को नकारते हुए जमकर व्यंग्य किया है। सेठिया की इन दिनों प्रकाशित कविताओं में बदलती भाव-भूमि और काव्य यात्रा के नये पड़ाव के दर्शन होते हैं।

हम ! अर्द्ध विराम

(नई शैली की यह कविता सेठिया जी के 'खुली खिड़कियाँ-चौड़े रास्ते' शीर्षक काव्य-संकलन से ली गई है। यह काव्य-संकलन सेठिया जी के काव्य-यात्रा का नया मोड़ प्रस्तुत करता है। कवि की मान्यता है कि किसी भी लेखक-कवि को अपनी पूर्णता का वहम नहीं होना चाहिये। भविष्य में और भी अधिक, और भी अच्छा लिखा जायगा, इससे भयभीत नहीं होना चाहिये। हमें अपनी स्थिति अर्द्धविराम की माननी चाहिये जहाँ गति कुछ थम लेती है। हम पूर्ण विराम नहीं हैं क्योंकि वहाँ तो अंत हो जाता है।

यह कविता नई शैली की काव्य परम्परा में है। इसमें छंद का बंधन नहीं है और अंत में प्रास मिलाने का भी प्रयत्न नहीं है। कविता, कवि के मन की 'आत्म-स्वीकृति' प्रस्तुत करती है। भाषा सरल और भाव विचारोत्तेजक हैं।)

हम तो अर्द्ध विराम हैं,
पूर्ण विराम होने का झूठा दावा क्यों करें ?
हमारे आगे भी कुछ लिखा जायगा
इस संभावना से तनिक भी क्यों डरें ?
अधिक से अधिक हम
प्रश्न-चिह्न बनने की सोच सकते हैं
जिन्हें देख जिज्ञासाएँ जगती हैं

और विचार उभरते हैं।
हम तो केवल अल्प-विराम भर हैं
हमें अपनी पूर्णता का कोई वहम नहीं।
हम यह डींग क्यों हाँकें
हम ही अंतिम हैं
हम ही सही।

सत्य कौन है?

(प्रस्तुत कविता कवि के 'दीपकिरण' शीर्षक काव्य-ग्रंथ से ली गई है। इसके अधिकांश गीतों में कवि ने दार्शनिक सत्य को सहज ढंग से प्रकट किया है। स्थिर और अस्थिर पदार्थों में शाश्वत जीवन किसका है—यही कवि की मूल जिज्ञासा है। फूल और शूल, लहर और कूल, चरण और धूल के प्रतीकों के माध्यम से कवि ने यही सत्य स्थापित करने का प्रयत्न किया है कि मौन भाव से स्थिर रहने वाले पदार्थ, चंचलता प्रकट करने वाले पदार्थों की अपेक्षा अधिक दीर्घजीवी होते हैं। प्रकट में विदित तो यह होता है कि हँसते फूल, थिरकती लहरें, बढ़ते चरण, ही जीवन का सत्य हैं, लेकिन वस्तु-स्थिति यह है कि फूल झर जाता है—शूल नहीं, लहर मिट जाती है—कूल नहीं और चरण थक जाता है—धूल नहीं।

कविता की भाषा सरल और भाव गंभीर हैं।)

फूल विहंसता, शूल मौन है।
एक डाल के दोनों साथी
दोनों को ही हवा झुलाती
फूल झरेगा, शूल रहेगा, सत्य कौन है, भूल कौन है?
लहर नाचती कूल मौन है।
एक पंथ के दोनों साथी
दोनों को किरणें नहलाती
लहर मिटेगी, कूल रहेगा, सत्य कौन है, भूल कौन है?
चरण बोलता, धूल मौन है।

युग-युग से दोनों हैं साथी
दोनों पर ही नभ की छाती
चरण रुकेगा, धूल चलेगी, सत्य कौन है, भूल कौन है ?

अभ्यास के प्रश्न

नोट :—नीचे कुछ प्रश्न और उनके पाँच-पाँच विकल्प दिये गये हैं सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर का क्रमाक्षर सामने के कोष्ठक में लिखिये—

प्र० १. कवि स्वयं को 'अर्द्ध-विराम' क्यों कहता है ?
(क) उसने जीवन की आधी यात्रा की है। (ख) उसकी संभावनाएँ समाप्त नहीं हुई हैं। (ग) उसका स्वभाव विनम्र है। (घ) उसे मृत्यु का भय लगता है। (च) उसे जीवन का लक्ष्य मालुम नहीं है। ( )

प्र० २. इस कविता में 'प्रश्न-चिह्न', किसका प्रतीक है ?
(क) जीवन का। (ख) नये प्रश्नों का। (ग) शंकाओं का। (घ) नयी खोज का। (च) नये मार्गों का। (

प्र० ३. 'डींग हाँकना' मुहावरे का क्या अर्थ है ?
(क) प्रशंसा करना। (ख) दंभ करना। (ग) बढ़-बढ़कर बातें करना। (घ) अनर्गल प्रलाप करना। (च) प्रदर्शन करना।

प्र० ४. 'अर्द्ध विराम' कविता में किस भाव की प्रमुखता है ?
(क) विनम्रता। (ख) दार्शनिकता। (ग) सत्य-शोधन। (घ) वैराग्य। (च) असंतोष। ( )

प्र० ५. 'फूल-शूल' कविता में फूल-शूल किस अर्थ के परिचायक हैं ?
(क) जीवन-मृत्यु। (ख) आशा-निराशा। (ग) प्रीत-अप्रीत। (घ) नाश-निर्माण। (च) स्थिरता-अस्थिरता। ( )

प्र० ६. इस कविता में 'लहर-मिटेगी, कूल रहेगा' क्यों कहा है ?
(क) लहर चलती है, कूल नहीं चलता। (ख) लहर नाचती है, कूल नहीं नाचता। (ग) लहर चंचला है, कूल स्थिर है। (घ) लहर कूल तक जाती है, कूल नहीं जाता। (च) लहर क्षणिक है, कूल शाश्वत। ( )

प्र० ७. कवि किस कारण से अर्द्ध-विराम, प्रश्न चिह्न और अल्पविराम होना चाहता है। तीस शब्दों में लिखिए।

प्र० ८. 'हमारे आगे भी कुछ लिखा जायगा इस संभावना से क्यों डरे' कवि ने यहाँ 'डरने' का प्रसंग क्यों उठाया है? उत्तर सीमा ३० शब्द।

प्र० ९. दोनों कविताओं में कवि ने अपनी दार्शनिक रुचि किस प्रकार प्रगट की है—५० शब्दों में लिखिये।

---

२१. नाथूदान महियारिया

जन्म : १८९१ ई०
मृत्यु : १९७३ ई०

कवि-परिचय—

डिंगल के ओजस्वी कवि, नाथूदान का जन्म सन् १८९१ ई० में उदयपुर में हुआ। आपके पिता केसरीदान और माता रामकुंवर बाई भी डिंगल में रचना करते थे। नाथूदान ने सात वर्ष की आयु से ही कविता लिखना प्रारंभ कर दिया था। माता-पिता की शीघ्र मृत्यु के कारण इनकी शिक्षा तीसरी कक्षा से अधिक न हो सकी। शिकार में अधिक रुचि होने के कारण भी इन्होंने अध्ययन में विशेष ध्यान केन्द्रित नहीं किया। कविता रचना का क्रम तो पहले ही प्रारंभ हो चुका था और उस प्रतिभा का स्वाभाविक विकास स्वतः ही होता रहा। शिकार से इन्हें शारीरिक व्यायाम और मनोविनोद मिलता रहा और बीच बीच में भावोद्रेक होने पर दोहों व गीतों की रचना करते रहे। राष्ट्रपति स्व० डॉ० राजेन्द्रप्रसाद ने आपके काव्य पर मुग्ध होकर पुरस्कार दिया था। साहित्य अकादमी ने आपको मानद-वृत्ति देकर सम्मानित किया। सन् ७३ के अप्रैल माह में लम्बी बीमारी के बाद आपका उदयपुर में देहावसान हो गया।

रचनाएं—

कवि नाथूदानकृत निम्न ग्रंथ उल्लेखनीय हैं :—
'वीर सतसई,' 'हाड़ी शतक,' 'चूंडा शतक,' 'झाला मान शतक,' 'गांधी शतक' आदि। इनमें 'वीर-सतसई' को विशेष लोकप्रियता प्राप्त हुई है।

काव्यगत विशेषताएं—

नाथूदान महियारिया का नाम वीर-रस के प्रमुख कवियों मे लिया जाता है। उनके काव्य का वर्ण्य विषय है—वीरत्व, वीरांगनाओं का अद्भुत पराक्रम, साहस तथा देश-प्रेम। उनके दोहों के प्रभाव का उल्लेख करते हुए उदयपुर के स्वर्गीय राजर्षि महाराज श्री चतुरसिंह ने लिखा है—

आवध नाख्या आदरै, जनम जाय नर जीत।
नाथूरा श्रीनाथकृत, गीता ज्यूं ही गीत।

(शस्त्र छोड़े व्यक्ति पुनः शस्त्र ग्रहण कर लेते हैं, जिससे उनका मनुष्य जीवन सफल हो जाता है। नाथूदान के गीत श्रीकृष्ण द्वारा रचित गीता के समान ही प्रभावोत्पादक हैं)।

कवि ने वीर-रस में ओजस्वी रचनाएं की हैं। वीर-रस की महिमा, वीर के लक्षण, वीर-वीरांगना-प्रशस्ति, वीर-माता की गौरवानुभूति, सती महिमा, क्षात्र-धर्म, चारण-महिमा, देश-प्रेम, कायर-प्रताड़ना आदि का सशक्त एवं सजीव वर्णन, इनके काव्य म मिलता है। नाथूदान की 'वीर-सतसई' में युद्ध-कौशल और आत्म-बलिदान की प्रबल अभिलाषा का प्रभावशाली चित्रण हुआ है। मेजर रघुवीरसिंह के शब्दों में, 'नाथूदान सतियों के चूड़ामणि कवि हैं'। पति को युद्ध के लिये तैयार करने वाली, शृंगार और आभूषणों की अपेक्षा घावों, हथियारों और केसरिया-बाना पर जान देने वाली, राजस्थानी वीरांगना के शौर्य एवं त्याग के अनेक भव्य-चित्र, नाथूदान के काव्य में मिलते हैं। वीरांगनाओं की उत्सुकता, उत्साह और कर्त्तव्यप्रियता का मार्मिक वर्णन कवि ने किया है। नाथूदान ने वीर-रस के रसराजत्व को सिद्ध करने का प्रयत्न किया है।

नाथूदान की भाषा, साहित्यिक डिंगल है। कवि ने डिंगल के प्रचलित एवं अप्रचलित, दोनों ही प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है। उर्दू, फ़ारसी, खड़ी

बोली एवं ब्रज भाषा के शब्दों का विकृत प्रयोग भी मिलता है। ओज-गुण को ध्यान में रखते हुए कवि ने कुछ शब्दों को तोड़ा-मरोड़ा भी है। लोकोक्तियों एवं मुहावरों के सुंदर प्रयोग से भाषा में निखार और अभिव्यक्ति में सजीवता व सशक्तता आ गई है।

दोहे

संकलित दोहों में कवि ने सरस्वती वंदना के अतिरिक्त वीर पुरुष के लक्षणों, वीर बालक की विशेषताओं और वीर माता के त्याग और पुत्र-शौर्य पर गौरव की अनुभूति का मार्मिक चित्रण किया है। क्षात्र-धर्म और भक्ति को जातिवाचक के बजाय गुणवाचक माना है। ओजस्वी शैली में कवि ने युद्ध में किये जाने वाले त्याग, बलिदान और इस पर माँ द्वारा व्यक्त किये जाने वाले गर्व के भाव को सजीव अभिव्यक्ति दी है।

सरस्वती वंदना

हंसवाहणी जग कहै, अचरज एह अपार।
तूं कवि रसणा पर रहै, हँस चढ़ै किण बार।१।
सुरपति-वाहण तरु भखै, नरपति-वाहण नाज।
थो वाहण मोती चुगै, तूं सारां सिरताज।२।

वीर के लक्षण

जो करसी जिणरी हुसी, आसी बिण नूंतीह।
यह नहँ किणरा बापरी, भगती—राजपूतीह।३।
रण कर-कर रज-रज रँगै, रीव ढकै रज हूंत।
रज जेती धर नहँ दियै, रज-रज व्है रजपूत।४।
साढ़ तिहत्या सूरमा, नवहत्थाँ समरत्थ।
जे नव हत्थो भाजणा, डाढहती इक हत्थ।५।
सूर हटै नहँ समर सूं, हट्ट निभावै पूर।
सीस नमावै सूर न [illegible], सीस कटावै सूर।६।

वीर बालक

केहर रो नख हालरै, चवतो दांता हूंत।
मायड़ जद ही जाणगी, सींहा हणसी पूत।७।

सुरत सँभाली डीकरै, सँभाली तरवार।
धरा देसरी मो छतां, है कुण भोगणहार।८।
श्रो पग पटकै पीढियौ, सगर सिधावै तात।
पूत-तणा पग पालणै, श्रँजसी श्रोलख मात।६।
धन नहँ पूछै गाड़ियौ, सुत सूरो वलिहार।
सीस वाप रो किण लियो, पूछे वारमवार।१०।

वीर माता

वेटा! दूध उजालियौ, तूं कट पड़ियौ जुद्ध।
नीर न आवै मो नयण, पण थण आवै दुद्ध।११।
सुत मरिया हित देस रै, हरख्यौ वँधु-समाज।
माँ नहँ हरखी जनम दिण, जतरी हरखी आज।१२।
सात पूत रण मेलिया, सातूं कटिया साथ।
फिर देतो, फिर मेलती, माँ इण साँसे नाथ।१३।
हक किम जावै देसरो, कहवै दादी माय।
बेटो कारगृह गयौ, पोतो सुरपुर जाय।१४।
जनम दिखायौ जनम दिन, परण दिखायौ आज
बेटा हरख दिखावजै, मरण देस रै काज।१५।

शब्दार्थ एवं भावार्थ

सरस्वती वंदना

१. एह=यह। रसणा=रसना। वार=वेला, समय।

अर्थ : मुझे इसका अपार आश्चर्य है कि संसार सरस्वती को हंस वाहिनी कहता है। हे देवी! तू तो कवियों की जिह्वा पर रहती है, तू हंस पर किस समय चढ़ती है।

२. सुरपति=इन्द्र। वाहण=वाहन। भखै=भक्षण करता है। सुरपति-वाहण=ऐरावत हाथी। नरपति-वाहन=घोड़ा। तो=तेरा। सारां=सबकी। सिरताज=शिरोमणि।

अर्थ : इन्द्र का वाहन ऐरावत हाथी, वृक्षों की डालियां खाता है, और राजा का वाहन घोड़ा अन्न खाता है, लेकिन हे देवी! तेरा वाहन (हंस)

तो मोती चुगता है, इसी लिये तू सब की शिरोमणि है।

वीर के लक्षण

३. करसी=करेगा, हृदय से चाहेगा। जिणरी=उसी की। हुसी=होगी। आसी=आयेगी। बिण नूँतीह बिना निमंत्रण के। ए=ये। किणरा बापरी - किसी के बाप की, बपौती, भगती=भक्ति। रजपूतीह=राजपूती, शौर्य, वीरता।

अर्थ : भक्ति और राजपूती (वीरता) किसी के बाप की बपौती नहीं है। इन्हें जो हृदय से चाहेगा, उसके पास वे स्वयं आ जायेंगी।

४. रज-रज रंगे=कण कण रंग देती है। रिव=रवि, सूर्य। हूँत=से। रज जेती=धूलि कण जितनी भी। धर=पृथ्वी। दियै=दे। रज-रज=टुकड़े टुकड़े। रजपूत=राजपूत वीर।

अर्थ : वही वीर (राजपूत) है जो निरंतर युद्ध कर रणभूमि के कण-कण को रक्त से रंग देता है और रणभूमि को सूर्य की धूल से ढक देता है। वह युद्ध-भूमि में टुकड़े टुकड़े हो जाता है किन्तु अपनी रज भर भी भूमि शत्रुओं को नहीं देता।

५. माढ़-तिहत्था=साढ़े तीन हाथ। नवहत्थाँ=नौ हत्थों (सिंहों) समरत्थ=समर्थ। नव-हत्थाँ=नौ हत्थों को। भाजण=नष्ट करने वाला। डोढहती - डेढ़ हाथ की तलवार।

अर्थ : साढ़े तीन हाथ के शरीर वाले योद्धा नौ हाथ लंबे सिंह से भी अधिक समर्थ होते हैं जो एक ही हाथ में डेढहाथ वाली तलवार लेकर नौहत्थे सिंहों को नष्ट कर देते हैं।

६. नमावै=नमन करता है। समर=युद्ध। निभावै-पूर=पूरा तरह निबाहता है।

अर्थ : शूरवीर युद्ध में कभी पीछे नहीं हटता और इस हठ को पूरी तरह निभाता है। शूरवीर अपना मस्तक नहीं झुकाता बल्कि उसे कटवा देता है।

वीर बालक

७. सिंह री=सिंह का। हालरै=माला में। चवतो=बताता था। हूंत=

से । मायड़=माता । जाणगी=जान गई ।

सींहा=सिहों को । हणसी=मारेगा ।

अर्थ : माला में पिरोये हुए सिह के नाखून को वीर बालक ने दांतो से चबा दिया । बालक की इस क्रिया से ही माता को विश्वास हो गया कि पुत्र सिहों का वध करेगा ।

८. सुरत-सम्हाली=होश सम्हाला, वयस्क हो गया । डीकरै=बालक ने। देसरी=देश की । मो छतां=मेरे होते हुए । कुण=कौन । भोगण-हार=भोगनेवाला, अधिकार करने वाला ।

अर्थ : वीर-बालक ने ज्यों ही होश सम्हाला, त्यों ही उसने तलवार भी सम्हाल ली और कहने लगा कि मेरे रहते हुए देश की धरती को कौन भोग सकता है ?

९. औ=यह । पौढ़ियो=सोता हुआ । सिधावै=प्रस्थान कर रहा है। तणा=का । पालणै=झूले में । अंजसी=गर्व से हर्षित हुई । ओलख =पहचान कर ।

अर्थ : पिता को युद्ध में जाते देख, पलने में सोया हुआ बालक पांव पटक कर छटपटाने लगा । माता यह जान कर कि पुत्र भा युद्ध में जाने के लिये आतुर है, अत्यन्त गौरवान्वित हुई ।

१०. गाड़ियौ=गड़ा हुआ । सूरो=शूरवीर । बापरौ=पिता का । किण= किसने ।

अर्थ : माता अपने पुत्र पर न्यौछावर होते हुए कहती है कि हे पुत्र ! तुम सच्चे वीर हो । मैं तुम पर बलिहारी जाती हूं क्योंकि तुम पिता के गाड़े हुए धन के बारे में न पूछ कर बार बार पिता का वध करने वाले के संबंध में ही पूछ रहे हो ।

वीर माता

११. उजालियो=उज्जवल किया । कट पड़ियौ=कट पड़ा । आवै=आते ही । मो=मेरे । नयण=नेत्र । पण=परन्तु । थण=स्तन ।

अर्थ : वीरगति-प्राप्त पुत्र को संबोधित करते हुए माता कहती है कि हे पुत्र। भयंकर युद्ध में कटकर (वीरगति प्राप्त कर) तूने मेरे दूध को उजला

कर दिया (मेरा दूध उज्जवल यश-धवलित हुआ) यही कारण है कि आज मेरे नेत्रों में आंसू नहीं उमड़ रहे बल्कि स्तनों से दुग्ध-धारा बह रही है।

१२. मरिया = मरा। देस रै = देश के। जतरी = जितनी।

अर्थ : किसी शूरवीर के देश की रक्षा के लिये किये गये प्राण-त्याग पर उसके बंधु-बांधव बड़े हर्षित हुए। माँ को भी उसके जन्म पर जितना हर्ष नहीं हुआ था उससे कहीं अधिक प्रसन्नता उसके बलिदान से हुई।

१३. मेलिया = भेजे। सातूं = सातों ही। कटिया = कट गये। मेलती = भेजती। इण = इस। सांसें = अवसाद, दुःख।

अर्थ : वीर माता के सात पुत्र थे और उसने सातों को ही युद्ध में भेज दिया। सातों पुत्र युद्ध में कट-मरे। मां कहती है कि हे ईश्वर ! यदि मुझे और पुत्र देते तो उन्हें भी युद्ध में भेजती। अब कोई और युद्ध में भेजने के लिये नहीं है—इसका मां को बड़ा अवसाद है।

१४. हक = अधिकार। किम = कैसे ? सुरपुर = देवलोक।

अर्थ : दादी मां कहती है कि जिसका पुत्र देशरक्षा के लिए जेल चल गया है और पौत्र युद्ध करता हुआ स्वर्गलोक चला गया है, भला उस देश के अधिकार को कौन छीन सकता है ?

१५. परण = विवाह। दिखावजै = दिखाना। काज = वास्ते।

अर्थ : हे पुत्र ! जिस प्रकार तुमने जन्म लेकर जन्मोत्सव का आनन्द दिया, वैसे ही देश के लिये प्राणों का बलिदान देकर मुझे और हर्षित करना।

अभ्यास के प्रश्न

नोट : नीचे कुछ प्रश्न दिये गए हैं। प्रत्येक प्रश्न के पांच पांच विकल्प भी दिए गये हैं। सर्वाधिक शुद्ध उत्तर का क्रमाक्षर दाहिने ओर कोष्ठक में लिखिए—

९० १. 'तूं कट पड़ियो जुद्ध' — यदि वीर क्षत्राणी की यह कामना पूरी हो जाय तो उसकी क्या गति होगी ?

(क) वह स्वयं रणक्षेत्र में कूद पड़ेगी। (ख) पुत्र शोक के कारण उसके आंसू आवेंगे। (ग) संसार से विरक्त हो जायेगी। (घ) शत्रु के

नाश की कामना करेगी। (च) प्रसन्नता के कारण उसके स्तन दूध से भर जायेंगे। ( )

प्र० २. 'सरस्वती' को कवि ने 'सारां सिरताज' क्यों कहा है ?

(क) उसका वाहन सबसे सुन्दर है। (ख) वह विद्या की देवी है। (ग) उसका वाहन हँस, मोती चुगता है। (घ) उसकी प्रकृति कोमल है। (च) सभी देवी-देवताओं में वह पूजनीय है। ( )

प्र० ३. 'भक्ति और राजपूती', बिना निमंत्रण किसके पास स्वेच्छा से आती है। निम्न पंक्तियों में से उत्तर छाँटिये—

(क) रण कर कर रज रज रँगे। (ख) रण जेती घर नहँ दिये। (ग) जो करसी जिणरी हुसी। (घ) जनम दिखायो जनम दिन। (च) सात पूत रण मेलिया। ( )

प्र० ४. वीर-बालक अपनी माता से बारंबार क्या बात जानना चाहता है ?

(क) पिता के छिपे धन के बारे में। (ख) पिता का वध करने वाले के संबन्ध में। (ग) पिता के लेन-देन के व्यवसाय के बारे में। (घ) पिता के वीरत्व-पूर्ण जीवन के सम्बन्ध में। (च) युद्ध-कला के संबन्ध में। ( )

प्र० ५. कवि ने सरस्वती के सम्बन्ध में क्या आश्चर्य प्रकट किया है ? १० शब्दों में समझाइए।

प्र० ६. कवि ने वीर के क्या लक्षण बताये हैं ? १५ शब्दों में समझाइये।

प्र० ७. 'मायड़ जद ही जाणगी। मां ने क्या जाना और कैसे जाना ? उत्तर सीमा १० शब्द।

प्र० ८. पालने में पांव पटकते शिशु को देखकर माता ने क्या अनुमान लगाया ? उत्तर १० शब्दों में।

प्र० ९. पुत्र की युद्ध में मृत्यु पर माता को हर्ष क्यों हुआ ? उत्तर सीमा १५ शब्द।

प्र० १०. इन शब्दों के तत्सम रूप लिखिये—

रसणा, वार, वाहण, नूंता, भगती, रिव, घर, समरत्थ, मायड़।

प्र० ११. डिंगल भाषा की विशेषताएं ५० शब्दों में लिखिये।

प्र० १२. वीर-माता के पुत्र के प्रति प्रकट किये उद्‌गारों को १०० शब्दों में लिखिये ।

प्र० १३. कवि नाथूदान की काव्य-प्रतिभा पर १०० शब्दों में प्रकाश डालिये ।

परिशिष्ट

कबीर (१)

साखी

केसन=केश । मूंडो=काटते हो । विषै=विषय-वासना । विकार=दोष । ढंढोरे=खोजता है । वेगि=शीघ्र । दूरमति=दुर्मति, दुर्बुद्धि । गंवाइसी=नष्ट कर देगा । दरार=दरज । हिये=हृदय । सुभाय=स्वभाव । सिष=शिष्य । खोट=बुराई । सहार दे=सहारा देता है । बाहे=मारता है । वनराय=जंगल । समंद=समुद्र । मसि=स्याही । पुहुपन=पुष्प । बास=गंध । तामें=उसमें । पौन=वायु, आत्मा । आचरज=आश्चर्य । काल्हि=कल । ढिग=समीप । खिन=क्षण । मीठ=मीठा । दीठ=दिखलाई देता है । आंथवै=नष्ट होता है । चिणिया=चुना गया । तरवर=तरुवर, वृक्ष ।

सबद

मीन=मछली । पियासी=प्यासी । सूझै=दिखलाई पड़ती है । म्रिग=मृग, हिरण । आतम-ग्यान=आत्म-ज्ञान । अविनासी=अविनश्वर, कभी नष्ट न होने वाला । सुमिर=याद कर । जियरा=प्राण । लालच लागी=लोभ में आकर । माया भरम भुलाया=माया के भ्रम में आकर भटक गया । जोबन=यौवन । जम=यम । बसायगा=बस चलेगा । धरमराय=धर्मराज । लेखा=हिसाब । तरि जायगा=उद्धार हो जावेगा । वाद-वदो=तर्क करते हो । पावक=अग्नि । दाझै=जलता है । तृसा=तृष्णा, प्यास ।

सुरति=याद । दरस-परस=देखना और छूना । जमपुर=यमपुर । भांडे: बर्तन । सत-नाम=सत्य-नाम, ईश्वर का नाम या गुरु का नाम ।प्यावै= पिलाता है । अनहद=सबद ।

सुपन=स्वप्न । निर्भय पद परसावै=निर्भीक होकर परम-पद प्राप्त करते हैं ।

सूरदास (२)

विनय

द्रुम-डरिया=वृक्ष की डाल । पारधि=शिकारी । उबारै= उद्धार करे । अहि=सर्प । संधान=लक्ष्य । सर=तीर । कुटिल=कपटी । खल=दुष्ट । कामी=विषय-वासना में लीन । अंतरजामी= अंतर्यामी । बिसार्यो= विस्मृत किया । द्रोह=शत्रुता । सूकर ग्रामी= गाँव का सूअर । विसयनि= विषय-वासना के साथ । विमुखन= उदासीन, विरोधी । नामी=श्रेष्ठ । अधम-उधारन=पापियों का उद्धार करने वाले । चोलना=चोला । नूपुर=घुंघरू । सबद=शब्द । रसाल=मधुर । असंगत=अनुचित । कटि=कमर । भाल= ललाट । कोटिक=करोड़ों । अविद्या=अज्ञान ।

बाल-लीला

लौं=तक । बहुरि=पुन: । इतही=इधर ही । सोच=चिंता ।क्रम क्रम सों=धीरे धीरे । नवनीत=मक्खन । रेणु=रेत । चारु= सुन्दर । लोल-लोचन=चंचल नेत्र । गोरोचन, गोलोचन=एक प्रकार का पीला द्रव्य जो गाय के पित्त में से निकलता है । मत्त=मस्त, उन्मत्त । मधुप=भंवरा । माधुरी=माधुर्य, सौंदर्य । कठुला=गले का आभूषण । केहरि-नख=शेर का नाखून । रुचिर=सुन्दर । सत-कल्प-सात कल्प । एक कल्प ब्रह्मा के एक दिन या १००० युग के बराबर होता है । मनुष्यों का एक कल्प ४३२०००००० वर्ष का होता है ।

तनक-तनक=छोटे छोटे । टेरि—पुकार कर । वदन=मुख । नावत= डालते हैं । चितै=निहार कर । प्रतिबिंब=परछांई । लवनो=नमकीन मक्खन । दुरि=छिप कर । भावत=अच्छे लगते हैं ।

गोचारण

नीके=सुन्दर। सीके=छींके। सृंग=शृंग, तुरही। महर=पिता। तर=नीचे। ओदन=चावल, भात। दधि=दही। साखि=साक्षी। सौंह=सौगन्ध, शपथ। वसात=वश चलता है। गुसैंया=स्वामी। संचरे=संचरण किया, मिलना जुलना प्रारंभ किया। लुंगरैया=लुंगाड़ापन, दादागिरी।

मुरली-माधुरी

नेकु=तनिक, जरासी। सुरभिन=गायें। छाक=कलेवा। दीन-गिरा=दयनीय वाणी। मोहे=मोहित कर लिया। सैन=इशारे। अतिराजति=अत्यधिक सुशोभित होती है। ग्रीव=गर्दन। नवाइ=झुका कर। मदन=कामदेव। मकर=मगरमच्छ। आपु आपु अनुरागत=अपने आप स्वयं पर मुग्ध हो रहा है।

गोवर्धन-धारण

चपला=विजली। गलवल=कोलाहल, खलवली। धूमरे=धुंए के रंग के। चक्रित=चकित। चहल=चहल-पहल, उपद्रव। मेटि=मिटा दी। गिरिवर-वल=गोवर्धन के वल से। जनि=नहीं। उर तैं=हृदय में। रवकि रवकि=उमंग उमंग कर, उछल उछल कर। हरवर तें=हड़वड़ी के साथ। करवर तें=विपत्ति से। पिरानी=पीर हुई। टेकि=संभाल कर, सहारा देकर।

गोस्वामी तुलसीदास (३)

धनुष-यज्ञ प्रसंग

१. भंजहु=तोड़ो। २. भवचापु=शिवजी का धनुष। ३. परितापा=सन्ताप, दुःख। ४. ठाढ़े भए=खड़े हुए। ५. मृगराज=सिंह। ६. उदयगिरि=उदयाचल, पूर्व दिशा। ७. लोचन भृंग=नेत्र रूपी भंवरे। ८. अवली=समूह, पंक्ति। ९. आयसु=आज्ञा। १०. निमिष=क्षण। ११. अहि=शेष नाग। १२. कोल=वाराह। १३. कमठ=कच्छप। १४. कोदंड=धनुष। १५. मराल=हंस।

सुरति=याद। दरस-परस=देखना और छूना। जमपुर=यमपुर। भांडे=बर्तन। सत-नाम=सत्य-नाम, ईश्वर का नाम या गुरु का नाम। प्यावै=पिलाता है। अनहद=सबद।

सुपन=स्वप्न। निर्भय पद परसावै=निर्भीक होकर परम-पद प्राप्त करते हैं।

सूरदास (२)

विनय

द्रुम-डरिया=वृक्ष की डाल। पारधि=शिकारी। उबारै=उद्धार करे। अहि=सर्प। संधान=लक्ष्य। सर=तीर। कुटिल=कपटी। खल=दुष्ट। कामी=विषय-वासना में लीन। अंतरजामी=अंतर्यामी। बिसार्‍यो=विस्मृत किया। द्रोह=शत्रुता। सूकर ग्रामी=गाँव का सूअर। विसयनि=विषय-वासना के साथ। विमुखन=उदासीन, विरोधी। नामी=श्रेष्ठ। अधम-उधारन=पापियों का उद्धार करने वाले। चोलना=चोला। नूपुर=घुंघरू। सबद=शब्द। रसाल=मधुर। असंगत=अनुचित। कटि=कमर। भाल=ललाट। कोटिक=करोड़ों। अविद्या=अज्ञान।

बाल-लीला

लौं=तक। बहुरि=पुनः। इतही=इधर ही। सोच=चिंता। क्रम क्रम सों=धीरे धीरे। नवनीत=मक्खन। रेणु=रेत। चारु=सुन्दर। लोल-लोचन=चंचल नेत्र। गोरोचन, गोलोचन=एक प्रकार का पीला द्रव्य जो गाय के पित्त में से निकलता है। मत्त=मस्त, उन्मत्त। मधुप=भंवरा। माधुरी=माधुर्य, सौंदर्य। कठुला=गले का आभूषण। केहरि-नख=शेर का नाखून। रुचिर=सुन्दर। सत-कल्प-सात कल्प। एक कल्प ब्रह्मा के एक दिन या १००० युग के बराबर होता है। मनुष्यों का एक कल्प ४३२०००००० वर्ष का होता है।

तनक-तनक=छोटे छोटे। टेरि—पुकार कर। वदन=मुख। नावत=डालते हैं। चितै=निहार कर। प्रतिबिंब=परछांई। लवनो=नमकीन मक्खन। दुरि=छिप कर। भावत=अच्छे लगते हैं।

गोचारण

नीके=सुन्दर । सींके=छींके । सृंग=शृंग, तुरही । महर = पिता । तर=नीचे । ओदन=चावल, भात । दधि=दही । साखि=साक्षी । सौंह= सौगन्ध, शपथ । वसात=वश चलता है । गुसैंया=स्वामी । संचरे=संचरण किया, मिलना जुलना प्रारंभ किया । लुंगरैया=लुंगाड़ापन, दादागिरी ।

मुरली-माधुरी

नेकु=तनिक, जरासी । सुरभिन=गायें । छाक=कलेवा । दीन-गिरा= दयनीय वाणी । मोहे=मोहित कर लिया । सैन=इशारे । अतिराजति= अत्यधिक सुशोभित होती है । ग्रीव=गर्दन । नवाइ=झुका कर । मदन= कामदेव । मकर=मगरमच्छ । आपु आपु अनुरागत=अपने आप स्वयं पर मुग्ध हो रहा है ।

गोवर्धन-धारण

चपला=विजली । गलवल=कोलाहल, खलबली । धूमरे=धुंए के रंग के । चक्रित=चकित । चहल=चहल-पहल, उपद्रव । मेटि=मिटा दी । गिरिवर-वल=गोवर्धन के बल से । जनि=नहीं । उर तैं=हृदय में । रबकि रबकि=उमंग उमंग कर, उछल उछल कर । हरबर तें=हड़बड़ी के साथ । करवर तें=विपत्ति से । पिरानो=पीर हुई । टेकि=संभाल कर, सहारा देकर ।

गोस्वामी तुलसीदास (३)

धनुष-यज्ञ प्रसंग

१. भंजहु=तोड़ो । २. भवचापु=शिवजी का धनुष । ३. परितापा= सन्ताप, दुःख । ४. ठाढ़े भए=खड़े हुए । ५. मृगराज=सिंह । ६. उदयगिरि= उदयाचल, पूर्व दिशा । ७. लोचन भृंग=नेत्र रूपी भंवरे । ८. अवली= समूह, पंक्ति । ९. आयसु=आज्ञा । १०. निमिष=क्षण । ११. अहि=शेष नाग । १२. कोल=वाराह । १३. करुम=कच्छप । १४. कौदंड=धनुष । १५. मराल=हंस ।

कवितावली

१. वरदंत=सुन्दर दाँत। पल्लव=पत्ते। लोल=चंचल। नेवछावर= न्यौछावर। २. बिलोकहु=देख। मही=पृथ्वी। बियथीं=व्यथित हुई। ३. पवि=वज्र। पाहन=पत्थर। हियो=हृदय। काज-अकाज=भला-बुरा। किमि कै=क्यों कर। ४. तून-सरासन=धनुष और तरकस। सुठि=सुन्दर। ५. सयानी=बुद्धिमान। औसर=अवसर। लोचन-लाहु=नेत्रों का लाभ। अनुराग-तड़ाग=प्रेम रूपी तालाव। भानु=सूर्य। बिगसी=विकसित हुई खिल गई। मंजुल कंज-कली=सुन्दर कमल की कली।

गीतावली

१. उर-नैननि-लावत=हृदय और नेत्रों से लगा रही हैं। ललित पनहियाँ=सुन्दर जूतियाँ। सवारे=सवेरे सवेरे। जेंइय=जीमों, भोजन करो। चकि=चकित। चित्र लिखी सी=लिखित चित्र के समान, स्थिर, किंकर्तव्यविमूढ़। लागत प्रीत सिखी सी=प्रेम सिखाया हुआ लगता है, झूठा लगता है। २. राघौ=राघव, राम। वर=श्रेष्ठ। बाजि=घोड़े। सिधावौ=चले जाओ। पय=दूध। पोखि=पोषित किये। चुचकारे= दुलार किया। सार=सम्हाल। झाँवरे=दुर्बल। हिम-मारे=पाले से कुम्हलाये हुए। अन्देसो=चिन्ता।

विनय-पत्रिका

१. द्रव=द्रवित होता है। सरिस=समान। गति=मोक्ष। विराग= वैराग्य। जतन=प्रयत्न। अरपि करि=अर्पित कर। २. बराय=आग्रह कर के। बिरद-हित=यश के लिए। माया-बिवस=माया के अधीन। अपनपौ=अपनापन, अपनत्व। ३. मोह-फाँस=मोह का फंदा। अभ्यन्तर-ग्रंथि=भीतर की गाँठ। मलिन=म्लान, मैला। उरग=साँप। बलमीकि= बाँबी। विमल-विवेक=निर्मल बुद्धि। ४. बैदेही=सीता। महतारी=माता। कंत=पति। व्रज-बनितह्नि=व्रज की वनिताएँ। मंगलकारी=कल्याण-कारी। सुहृद=सहृदय। सु-सेव्य=अच्छा सेवक। अंजन=काजल। मतो= मत, राय।

मीरांबाई (४)

१. सोई=वही। कानि=मर्यादा। ढिग=समीप। आणंद-फल=आनन्द रूपी फल। २. दरस=दर्शन। बह गई करवत-ऐन=ऐसी भारी चल गई है। कल=चैन। जोवत=देखते हुए। ३. छानै=गुप्त रूप से। लियो अजंता ढोल=ढोल बजा कर लिया है, सबके सामने लिया है। ४. मकराकृत=मगर की आकृति के। भगत-बछल=भक्त- वत्सल। ५. गास्याँ=गाऊँगी। नेम=नियम। निरत=नृत्य। घमकास्याँ=घमकाऊँगी, जोर से बजाऊँगी। भव-सागर=संसार रूपी सागर। निरख-परख=देख कर, जाँच कर। ६. मन-भावन=मन को भाने वाला। वान=आदत। पाँख=पंख। चेरी=दासी। दावन=दामन। ७. कुलनासी=कुल का नाश करने वाली। अमरित=अमृत। थारी=तुम्हारी। आस्याँ=आऊँगी। ८. अविनासी=कभी नष्ट न होने वाले। जेताई=जितना भी कुछ। दीसै=दीखता है। तेताई=वह सब। जुगत=युक्ति। ९. बान=आदत। हियडाँ=हृदय में। अनी=नुकीली। जीवन-मूर-जड़ी=जीवन दान देने वाली औषधि।

रहीम (५)

१. वापुरो=बेचारा। मिताई=मित्रता। २. मान-विनु=विना सम्मान के। ३. पावस=वर्षा-ऋतु। वक्ता=बोलने वाले। ४. बिथा=व्यथा। गोय=गोपनीय, गुप्त। अठिलैहैं=हँसी उड़ायेंगे। ५. ओछो=नीचा। इतराय=गर्व करता है। प्यादा=पैदल। ६. साँचे मीत=सच्चे मित्र। ७. बारै=जलाने पर। बढ़ै=बुझने पर। ८. वित्त=वित्त, धन। छार=क्षार, राख। ९. पानी=इज्जत। मानुख=मनुष्य। चून=आटा। १०. कमला=लक्ष्मी। थिर=स्थिर। पुरुष-पुरातन=पुराना पुरुष अर्थात विष्णु। वधू=पत्नी। ११. अच्युत=अपने स्वरूप से न गिरा हुआ, स्थिर, निर्विकार, अचल, विष्णु। चरण-तरंगिनी=चरणों से निकलने वाली। इंदव-भाल=ललाट का चन्द्रमा। १२. विन मूलि=विना आधार। प्रति-पालति=लालन पालन करता है। १३. दीन=गरीब। दीनबंधु=ईश्वर।

१४. दीरघ=दीर्घ, बड़ा। १५. कपट का हेत=कपटपूर्ण प्रेम व्यवहार। राता=लाल। सेत=स्वेत। १६. बहु रीत=विभिन्न प्रकार से। सोही=वही। मीत=मित्र, प्रिय। १७. लघु=छोटे। गिरिधर=पर्वत को धारण करने वाला, कृष्ण। मुरलीधर=मुरली धारण करने वाला, कृष्ण। १८. फिरि जाय=लौट जाता है। १९. सुजन=सज्जन। मुक्ताहार=मोतियों का हार।

नरोत्तमदास (६)

१. विप्र=ब्राह्मण। गहे वेद की रीति=वेदों की रीति का पालन करती है। सलज=लज्जावती। सुबुद्ध=बुद्धिमान। २. पीत-वसन=पीताम्बर। दारिद=दरिद्रता। ३. आठहु जाम=आठों प्रहर। जक= रट। छरिया=छड़ीदार, द्वारपाल। नेरे=समीप। चाउर=चाँवल। ४. बाँमनी=ब्राह्मणी। हुलास=आनन्द। ५. पगा=पगड़ी। झगा= झब्बा। उपानह=जूतियाँ। द्विज=ब्राह्मण। वसुधा अभिरामा=सुन्दर नगरी। ६. धाय=दौड़ कर। ७. बेहाल=बुरा हाल। जोए= देखे। ८. बानि=आदत। प्रवीने=चतुर। चाँपि रहे=छुपा रहे हो। तंदुल=चाँवल। ९. गाथ=गाथा, कथा। सम्भ्रम=भ्रम। कंचन=स्वर्ण। गज-बाजि=हाथी-घोड़े। मँझायो=मध्य में, बीच में। १०. कनक-दंड=सोने की छड़ी।

रसखान (७)

१. मानुस=मनुष्य। धेनु-मंझारन=गायों के बीच। पाहन=पत्थर। पुरंदर=इन्द्र। खग=पक्षी। कालिंदी=यमुना। २. लकुटी=लकड़ी। आठहुं सिद्धि=आठ सिद्धियाँ—अणिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्यं, महिमा, ईशत्व, वाशित्वं, कामना। नवहु निधि=नौ निधियां-महापद्म, पद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुंद, कुंदन, नीलम, खर्व। तड़ाग =तालाब। कलधौत=सोने चाँदी के। वारों=न्यौछावर कर दूं। ३. पचि=प्रयत्न करके। छोहरियां=बालिकाएं। छछिया=छाछ देने या नापने का छोटा सा पात्र। ४. गोतम-गेहिनी=अहिल्या। रवि-नंद=यमराज। ताखन=उस समय।

जा खन=जिस समय । माखन चाखन हारो=कृष्ण । राखनहारो=रक्षक । ५. संजम=संयम । सजीवन=जीवनयुक्त । भागीरथी=गंगा । पोषैं=पोषित करने पर । ६. रीझ=प्रेम, आकर्षण । औगुन=अवगुण । ७. पैंजनि=पैरों का बजने वाला गहना । कछौटी=कच्छा, जांघिया । कला=छवि, शोभा । ८. त्रिलोचन=शिव । जाहि=जिसके लिये ।

बिहारी (८)

अन्योक्ति

१. सुकृत=अच्छा कार्य । विहंग=पक्षी । पानि=हाथ । २. सराहि=सराहना करते हैं । मति अंध=अंधी बुद्धि वाले । ३. अलि=भंवरा । अपत=पत्तों रहित । इन डारनि=इन डालों में । ५. नाग-नागरिक । आब=कांति । गंवई-गांव=गंवारों का गांव । ६. निदाघ=ग्रीष्म । डहडहो=हरा भरा । ७. कुरंग=हिरण ।

नीति

८. नल-नीर=नल का जल । जेतौ=जितना । तेतौ=उतना । ९. मीत=मित्र । गलीति=गलती । करोरि=करोड़ों । १०. तरु-अरक=आंक का वृक्ष। अरक=सूर्य । उदोत=प्रकाश । ११. कनक=सोना । कनक=धतूरा । मादकता=पागलपन । बौरात=पागल होता है। १२. जतन=प्रयत्न । दई दई सो कबूलि=जो विधाता ने दिया है उसे स्वीकार कर ले ।

भक्ति

१४. भव-बाधा=सांसारिक संकट । नागरि सोय=वही चतुर नागरिका । झांई=छाया । स्यामु=कृष्ण, काला, पाप । हरित=नष्ट, हरा, हराभरा । दुति=शोभा । १५. कटि=कमर । बानिक=वेश-भूषा । १६. बादि=व्यर्थ में । सेइवो=सेवा करते हैं । १७. सरै=पूर्ण होता है । १८. टेरत=पुकारता हूं । जग-वाय=संसार की हवा । १९. तौलगि=तब तक । मन-सदन=मन रूपी घर । बाट=रास्ता । जटे=जड़े, बंद । कपाट=दरवाजे । २०. जदुराज=यादवराय, कृष्ण । विरद=यश । २१. मोष=मोक्ष । तोष=संतोष । २२. अनुराग=प्रेम ।

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (९)

कर्मवीर

चित्त पर चढ़ना=हृदय पर प्रभाव डालना। उकताना=घबराना। चिलचिलाती=कड़ी। लोहे के चने चबाना=कठिन परिश्रम करना। गांठ खोलना=समस्या को हल करना। गगन के फूल तोड़ना=असंभव को संभव बनाना। कारबन हीरा बन गया=कुरूप वस्तु भी सुन्दर बन गई। जल-राशि=समुद्र। तम=अंधकार।

यशोदा-विलाप

मलिन=उदास। वदन=मुख। वेदनाएं=पीड़ाएं। सदृश=समान। मुग्धकारी=मोहित करने वाले। कामना में पगी=इच्छाओं से परिपूर्ण। उन्मत्ता=उन्मादिनी। नवनी=नवनीत, मक्खन। स्निग्ध=चिकना, कोमल। दग्धकारी=जलाने वाला। सुरत=याद। वार=दिन। कुंज-पुंजें=कुंजों का समूह। विपुल=अत्यधिक। नम्रता=नम्र बने, झुके हुए। भूजात=वृक्ष। विकच-तरु=खिला हुआ पेड़। अर्कजा=यमुना।

मैथिलीशरण गुप्त (१०)

मंथरा की कुटिलता

वत्स=पुत्र। अवदात=निर्मल। किंकरी=दासी। वाम=उलटे, विपरीत। अर्क=सूर्य। अभिषेक=राज्य तिलक। मायिक=जादू भरे। गेह=घर। द्विजिह्वे=दो जीभ वाली। सभीति=भय सहित। अडोल=स्थिर। भृत्य=दास। मर्म=रहस्य। अविराम=बिना विलंब, तुरन्त।

मां कह एक कहानी

सुरभि=सुगंधित वायु। खग=पक्षी। विद्ध=बिंध कर। खरशर=तीक्ष्ण तीर। पक्ष=पंख। आखेटक=शिकारी। लक्ष्य-सिद्धि का मानी=उसे अपने निशाने का अहंकार था। आहत=घायल। सदय-निर्दय=दयाशील और क्रूर। उभय=दोनों।

सुमित्रानंदन-पंत (११)

भारतमाता

दैन्य=दीनता। नत-चितवन=झुकी निगाहें। नीरव-रोदन=मूक-रुदन। प्रवासिनी=बाहर रहने वाली। पर-पद-तल लुंठित=विदेशियों के चरणों द्वारा रौंदी गई। सहिष्णु=सहनशील। स्मिति=मुस्कान। स्तन्य=दूध।

पर्वत-प्रदेश में पावस

मेखलाकार=गोलाकार, दृग=नेत्र, निर्झर=झरने, नीरव=शांत, अनिमेष=टकटकी लगा कर, पारद=पारा, अंबर=आकाश। जलद-यान=बादल रूपी जहाज।

वन की सूनी डाली पर

म्लान=उदास, स्मिति=मुस्कान, पल्लव=पत्ता, दुख-दावा=दुख की अग्नि।

माखनलाल चतुर्वेदी (१२)

बलिदान

पत्र=कागज। अधीर=व्याकुल।

सिपाही

विपुल-सम्मान=अधिक प्रतिष्ठा। मुंड=कटे शीश। प्रत्यंचा=धनुष की डोरी। किंचित=तनिक भी। घुंडी=गांठ।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (१३)

जूठे-पत्ते

खारे-फव्वारे=आंसू की धार। विप्लवकारी=क्रांतिकारी। जगपति=ईश्वर। समता-संस्थापन=समता की स्थापना। वीभत्स=भयानक। दोहित=शोषित। क्रोधानल=क्रोध की अग्नि।

एक-तीर

सिद्ध=साधु। वल्कलधारी=साधुओं के वेश वाला। निर्गति=गति

रहित । व्यथा=पीड़ा । निंव=नीम ।

भगवतीचरण वर्मा (१४)

भैंसागाड़ी

व्रहत=विशाल । क्षुधाग्रस्त=भूख के मारे । कलुषित=पाप युक्त ।

दीवानों का संसार

आलम=संसार । स्वच्छंद=मुक्त, स्वतंत्र । नत-मस्तक=सिर झुकाये ।

रामधारीसिंह 'दिनकर' (१५)

विपथगा

आगमनी=आने की सूचना । काल-हुताशन=मृत्यु रूपी अग्नि । खगोल=आकाश । निरवलंब=आधार रहित ।, शैल-शृंग=पर्वत की चोटियां । पाप-प्रतिकार=पाप का बदला । गरल=विष । शासित=शोषित । जन्म-लगन=जन्म की घड़ी । द्रव्य=धन । असि=तलवार । पातकी=पापी । निंद्य=निन्दनीय । कराल=भयंकर । पारावार=समुद्र ।

समर शेष है

कस=बंधन । वह्नि=अग्नि । शर=तीर । भुवन=संसार । तिमिरावरण=अंधकार से ढका । क्षीर=दूध । अकाज=अनर्थ । न्यास=धरोहर । सत्वर=शीघ्र ।

हरिबंश राय 'बच्चन' (१६)

जुगनू

लौ लगाये=लगन के साथ । निष्ठा=विश्वास । आतंक=भय । पलक-बिछाना=प्रेम-पूर्वक स्वागत करना । उडुगण=तारे । विकार विकृति=मन की बुराइयां । सर-सरि=तालाब और नदियां । मुखरित=उच्चरित ।

सुधीन्द्र (१७)

मिट्टी की कहानी

चिद्रूपता=विभिन्न एवं व्यापक रूप । हिया=हृदय । लहलहाया=